विचार दृष्टि

वर्ष : 7 अंक : 22 जनवरी-मार्च 2005 25 रुपये

आपके जीवन में एक ज्योति जले

नव वर्ष 2005

- दहशत के साए में विधान सभा चुनाव
- भारतीय गणतंत्र और राष्ट्रीयता
- संक्रांति काव्य साकेत
- राष्ट्रीयता और धर्म का स्वरूप
- हिंदी हाइकु : 2004
- जनता दल (यू) की विफलता और बिखराव

एक युग का अंत

आप स्वयं भी एक दीप बन ज्योति जलायें

राष्ट्रीय विचार मंच के तत्वावधान में

पटेल फॉउंडेशन एवं शिवा संघ की सहभागिता से 31 अक्टूबर, 2004 को नई दिल्ली में आयोजित
लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के 129वें जयंती-समारोह की एक झाँकी

समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रो. के.डी. गंगराडे

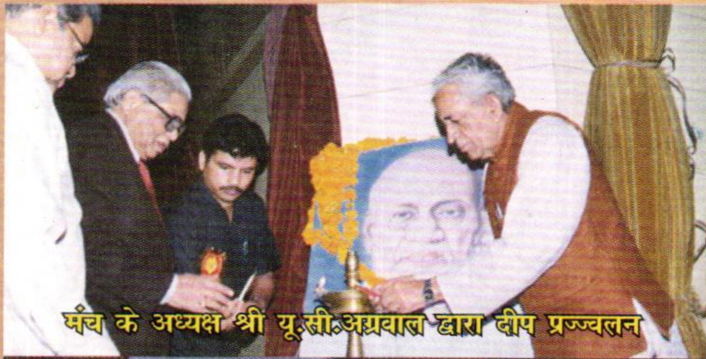

मंच के अध्यक्ष श्री यू.सी.अग्रवाल द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

स्व. किशन पटनायक के विचार भूषण का
प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते प्रो. प्रेम सिंह

विचार भूषण का प्रतीक चिन्ह प्रदान करते प्रो. गंगराडे

अतिथियों के बीच मंच के अध्यक्ष श्री अग्रवाल

समारोह को संबोधित करते मुनिश्री लोकप्रकाश 'लोकेश'

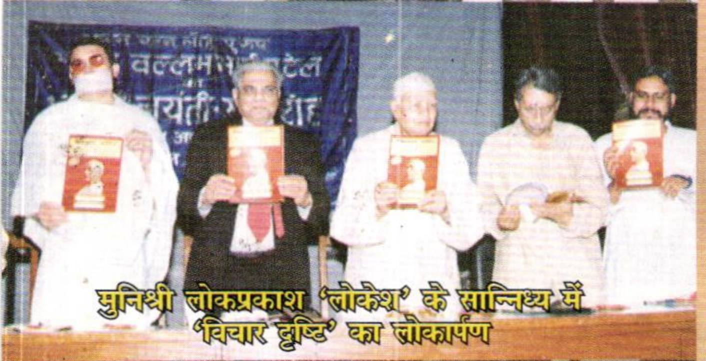

मुनिश्री लोकप्रकाश 'लोकेश' के सान्निध्य में
'विचार दृष्टि' का लोकार्पण

समारोह में पधारे मान्य अतिथिगण

सभागार में उपस्थित अतिथिवृंद एवं सुधिजन

समारोह को संबोधित करते कविवर मधुर शास्त्री

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-7 जनवरी-मार्च, 2005 अंक-22

संपादक व प्रकाशक:

सिद्धेश्वर

संपा. सलाह. : गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन

सहा.संपादक : मनोज कुमार

संपादन सहायक : अंजलि

साज-सज्जा: दिलीप सिन्हा एवं सुधांशु

शब्द संयोजन : सोलूसंस प्वायंट

(दीपक कुमार, अनुज कुमार)

प्रकाशकीय कार्यालय:

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207

शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष: (011) 22530652, 22059410

मोबाईल : 9811281443,9899238703

फैक्स: (011)22530652

E-mail: vichardrishti@hotmail.com

पटना कार्यालय:

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

दूरभाष: 0612-2228519

विधि सलाहकार :

डॉ. विजय ना. मणि त्रिपाठी

ब्यूरो प्रमुख:

मुम्बई: वीरेन्द्र याज्ञिक ☎ 28897962

कोलकाता: जितेन्द्र धीर ☎ 24692624

चेन्नई: डॉ० मधु धवन ☎26262778

तिरूवनंतपुरम:डॉ०रति सक्सेना ☎2446243

बैंगलूर:पी०एस०चन्द्रशेखर ☎26568867

हैदराबाद: डॉ० ऋषभदेव शर्मा ☎27036929

जयपुर: डॉ० सत्येंद्र चतुर्वेदी☎ 2225676

अहमदाबाद: वीरेंद्र सिंह ठाकुर☎22870167

प्रतिनिधि:

लखनऊ: प्रो. पारसनाथ श्रीवास्तव,

ग्वालियर: डॉ. महेन्द्र भटनागर ☎2341955

सतना: डॉ. राम सिया सिंह पटेल

देहरादून: डॉ. राज नारायण राय ☎2773124

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य: एक प्रति 25 रुपये

वार्षिक: 100 रुपये

द्विवार्षिक: 200 रुपये

आजीवन सदस्य: 1000रुपये

विदेश में:

एक प्रति:US $5, वार्षिक:US $20,

द्विवार्षिक:US $40, आजीवन: US $250

(पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं)

रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना /2

संपादकीय /5

विचार प्रवाह :

संक्रांति-काव्य साकेत /8
वंशीधर सिंह

दृष्टि :

भारतीयता की पुकार /13
डॉ. जगपाल सिंह

साहित्य:

सेनानी-कहानी / जुगल किशोर प्रसाद /14

काव्य कुंज: /18
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, मधुर शास्त्री, मंजुला गुप्ता, डॉ. 'पाचर', श्री 'विराट', डॉ. देवेन्द्र आर्य, रामगोपाल 'राही'

चेतना

ऐ मेरे प्यारे वतन /22
डॉ. शरद नारायण खरे

भारतीय गणतंत्र और राष्ट्रीय एकता /23
डॉ. वैद्यनाथ शर्मा

लोकतंत्र के लिए कैसे मतदान करें /25
यू.सी. अग्रवाल

एक गलती सुधारने के लिए.... /27
पीयूष

बाल साहित्य में राष्ट्र बोध /28
डॉ. सुन्दर लाल कथुरिया

समीक्षा

हिंदी हाइकु : 2004 /30
डॉ. सुरेन्द्र वर्मा

नीर भरे नयना : मानवीय पीडा.... /34
वंशीधर सिंह

कथ्य और शिल्प की कसौटी 'कसक' /35
ब्रह्मजीत गौतम

संस्कृति :

राष्ट्रीय पर्व-त्योहार /37
पी. आर वासुदेवन 'शेष'

धर्म और उसका राष्ट्रीय स्वरुप /39
डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव

समाज :

मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना... /40
चन्द्रकुमार 'सुकुमार'

राजनीतिक नज़रिया :

ज.द. (यू) की विफलता और बिखराव /44
सिद्धेश्वर

गतिविधियाँ :

झुग्गी-झोपडियों में शिक्षा अभियान /45

सुब्रह्मणहय भारती याद किए गए /46

सुभद्रा कुमारी चौहान जन्मशती समारोह /47

हैदराबाद की चिट्ठी /49

मंच की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी गठित /51

सम्मान :

नटवर सिंह को 'कैम्ब्रिज फेलो' /52

यशदेव को ज्ञानपीठ पुरस्कार /53

श्रद्धांजलि :

श्री राव का निधन 'एक युग का अंत' /54

साभार-स्वीकार /55

कवि राष्ट्रपति

लोकतंत्र

जन्मशती

सम्मान

श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह'शशि'❑प्रो .रामबुझावन सिंह❑श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव, ❑श्री जियालाल आर्य. ❑डॉ० बालशौरि रेड्डी ❑डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा ❑प्रो० धर्मेन्द्र नाथ 'अमन'❑डॉ० एल. एन. शर्मा

रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पाठकीय पन्ना

राष्ट्रीय स्वाभिमान

'विचार दृष्टि' के अक्टूबर-दिसम्बर '04 अंक के संपादकीय 'राष्ट्रीय स्वाभिमान के चरित्र की विडंबना' पढ़कर ऐसा लगा जैसे आपने आम भारतीय के मन को अपनी पैनी दृष्टि से पढ़कर लिपिबद्ध कर दिया हो।

तालबोट की न पुस्तक छपती न आज फर्नांडीज की जामातलाशी की बात उजागर होती। यह बात तब इतिहास के गर्त में दफन हो जाती।

साधुवाद आपकी निर्भीक पत्रकारिता को तथा आपकी लेखनी को। राष्ट्रीय स्वाभिमान को ठेस पहुँचानेवाली इस घटना को आपने शर्मनाक, दुर्भाग्पूर्ण कहा है।

मनु सिंह, पटना

आलेख शोधपरक व ज्ञानप्रद

पत्रिका आद्यंत पढ़ गया। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री पत्रिका के नाम को सार्थकता प्रदान करती हुई राष्ट्रीय विचार मंच की चिंतनधारा को भी स्पष्ट स्वर प्रदान करती है। आपकी तीक्ष्णप्रज्ञा संपादकीय के साथ नई सरकार की नई भाषा नीति, बहुभाषाविद् राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती, हिंदी का बाल साहित्य और राष्ट्रीय चेतना, कामायनी, पुनर्मूल्यांकन आदि आलेख शोधपरक एवं ज्ञानप्रद हैं।

इन आलेखों में लेखकों की मौलिक चिंतनधारा के दर्शन होते हैं। अन्य सामग्रियाँ भी स्तरीय और पठनीय हैं। ऐसी उत्कृष्ट कोटि की पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरा साधुवाद स्वीकार करें।

शिववंश पाण्डेय, पटना

मन को मोह गयी

'विचार-दृष्टि' प्रथम दर्शन में ही मन को मोह गयी है। गहराई व तसल्ली से किये संपादन के एक-एक पल को ढेरों-ढेरों बधाई।

जय सिंह अलवरी, कर्नाटक

स्तरीय और पठनीय आलेख

प्रस्तुत अंक के संपादकीय अग्रलेख के साथ-साथ कामायनी-पुनर्मूल्यांकन, प्रेमचंद-साहित्य की प्रासंगिकता.... उठे विवाद', 'हाय! हिमालय', 'विवेक और कर्त्तव्यबोध', 'आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना', 'हिंदी का बाल-साहित्य.....', 'राष्ट्रीयता और राजभाषा हिंदी', 'बीसवीं सदी का तेलुगु साहित्य', 'सरदार पटेल : भारत के एकलव्य', 'बहुभाषाविद् राष्ट्रकविः सुब्रह्मण्य भारती', 'नयी सरकार की नयी भाषा नीति', 'किशन पटनायकः समाजवाद के प्रति समर्पित चिंतक', स्तरीय और पठनीय आलेख हैं। पाठकों के पत्र उत्साहवर्द्धक तथा अन्यान्य संवाद प्रासंगिक हैं। स्व. उदयराज सिंह और प्रो. श्यामनंदनशास्त्री के प्रति अर्पित आपकी श्रद्धांजलि समीचीन है। कविताएँ सामान्य हैं। हाँ, मेरी कविता में 'अंधेर' की जगह 'अंधेरा' और श्री कुंदन कुमार की कविता में गुरु की जगह गुरू छप गए हैं जो सही नहीं है। माँ की मान भी ठीक नहीं है। भविष्य में ऐसी बातों पर अपेक्षित ध्यान रखा जा सके तो उत्तम। कुल मिलाकर हार्दिक बधाई।

समीर, देवघर

आलेख उल्लेखनीय

प्रो. नवल किशोर गौड़ के आलेख के क्या कहने। कितना विद्वतापूर्ण है। अन्य आलेखों में श्री काबरा, श्री रेड्डी के आलेख उल्लेखनीय हैं। काव्य-कुंज भी पठनीय सराहनीय। पूरा अंक अच्छा। बधाई

चन्द्रसेन 'विराट', जबलपुर

पत्रिका हर दृष्टि से स्तरीय

'विचार दृष्टि' का अक्टूबर-दिसंबर '04 अंक मिला। आभार। मुफ्त में नहीं पढ़ना चाहता। अतः आज ही द्विवार्षिक शुल्क भेज रहा हूँ।

आचार्य भगवत दुबे, जबलपुर

'नष्ट भ्रष्ट हो रहा समाज
सिमट रहे हैं लोग आज'

'जातीय तपिश का नजारा आम है
स्वदेश में विदेशी नजारा आम है'

पिछले सत्तावन वर्षों से भारत, समस्त भारतवासी, भारत का स्थानीय समाज तथा भारतीयता, अंग्रेजियत के रंग में रंगे स्वदेशी राजनेताओं के द्वारा निर्मित शासकीय ढाँचे की जेल में यातनायें झेल रहे हैं। संवैधानिक शासकीय ढाँचे को गठित व संचालित करने के लिए अपनाये गये बहुमत के असामाजिक व अलोकतांत्रिक विधान ने एक ओर तो दल तंत्र, गठबंधन तंत्र तथा कबीले तंत्र को वैधानिक आधार प्रदान कर दिया है तथा दूसरी ओर अधिकतम मत के लिए लोकतांत्रिक विधान पर आधारित वर्तमान चुनाव पद्धति को पूर्णतः प्रदूषित कर दिया है।

हमलोगों को उफपर से ऐसा लगता है कि सभी व्यक्तिगत अपराध, सामाजिक बुराइयाँ, अपराधों, सामाजिक बुराइयों तथा राष्ट्रीय समस्याओं में से किसी एक या कुछ के प्रत्यक्ष समाधान के लिए किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। सत्याग्रह व अहिंसात्मक आंदोलन में विश्वास व श्रद्धा रखनेवाले जन-नेता व जन-संगठन चुनाव सुधार, संविधान सुधार आदि के लिए कार्य कर रहे हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इन प्रयासों के परिणाम अल्पकालीन हैं।

डॉ. जगपाल सिंह, मेरठ

रचनाओं पर आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है, क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं।

हमें इस पते पर लिखें:

पाठकीय पन्ना, 'विचार दृष्टि'

'दृष्टि', यू.-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92

दुर्लभ एवं उपयोगी पत्रिका

सचमुच पत्रिका में अनुभवी व योग्य विद्वान लेखकों की लिखी उपयोगी पठनीय सामग्री पढ़ने को मिली। पढ़ने पर लगा, पत्रिका वस्तुतः उन दुर्लभ पत्रिकाओं में से है, जिनकी संख्या वर्तमान में बहुत कम नजर आती है।

संपादकीय कापफी प्रभावी लगा, विचार प्रवाह में कामायनी पुर्नमूल्यांकन व साहित्यिक आलेख कापफी अच्छे लगे। राष्ट्र चेतना के आलेखों में "हिंदी का बाल साहित्य और राष्ट्रीय चेतना" डॉ. किशोर काबरा बड़ा महत्वपूर्ण आलेख लगा। अन्य सभी आलेख विवेक को जागृत करते हैं। काव्य कुंज की कविताएँ अच्छी हैं। विचार दृष्टि के इस अंक में और भी सामग्री अपनी छाप छोड़ती है।

रामगोपाल 'राही', बूँदी, राजस्थान

राष्ट्रीय स्तर की बेबाक पत्रिका

पत्रिका का अक्टूबर-दिसंबर '04 अंक पढ़ा। देर तक उस महान विभूति की निगाहों में निगाह डालकर देखता रहा जिसकी तस्वीर पत्रिका के मुख पृष्ठ पर छपी है। कहना न होगा कि सरदार पटेल की तस्वीर मुख पृष्ठ पर छापकर आपने एक महाकाव्य लिख दिया है। तस्वीर बोलती हैं। पटेल बोलता है। उसकी दृष्टि दूर देख रही हैं। काश! मेरी भी सोच नेहरू-जिन्ना की हुई होती तो देश का एक और विखंडन हो जाता। कट-मर जानते। कुर्सियों के लिए वे लोग देश का बादशाह पि़फर लंदन हो जाता। सिद्धेश्वर को साधुवाद! आज जिनकी यह पत्रिका राष्ट्रीय स्तर की बेबाक पत्रिका बन गयी है। सबसे बड़ी बात इस पत्रिका में जो पढ़ने को मिली है, वह आज तक किसी जगह किसी साधक, यहाँ तक कि दिनकर ने भी उस बात की चर्चा नहीं की जिससे राष्ट्र के गौरव को, राष्ट्र को सम्मान को धक्का लगा और आज तक उस कलंक के टीका को यह राष्ट्र ढो रहा है। राष्ट्रीयता, हिंदुत्व का बिगुल फूँकनेवाली पिछली सरकार में भी यह दमखम नहीं था जो इस महान गलती की तरफ राष्ट्र का ध्यान खींचती। राष्ट्र के माथे का कलंक धोती।

मैं आपको, आप, की पत्रिका को तथा डॉ. देवेंद्र आर्य को साधुवाद देता हूँ। उन्हें झुकझुक प्रणाम करता हूँ। उनके चिंतन, बहादुरी, बेबाक लेखन को साधुवाद देता हूँ। देर आयत दुरूस्त आयत। ठीक है, सत्तावन वर्ष बाद किसी विद्वान ने उस गलती को उजागर कर राष्ट्र के सजग प्रहरी बनने का दावा करनेवालों के गाल पर एक करारा तमाचा जड़कर जगाया। उठो! जागो! गफलत में सोये हो।

सिद्धेश्वर जी! आपने अपने आलेख में हमारे पूर्व रक्षामंत्री जार्ज साहब के अपमान की जो चर्चा इतनी खुलकर बेबाक निडर होकर की है, आपकी लेखनी को साधुवाद। आपको कोटि-कोट प्रणाम! मैंने पच्चीस वर्षों में सिद्धेश्वर का असली रूप देखा-पढ़ा। साधुवाद! जार्ज साहब को वहीं से लौट आना चाहिए था। यह लिखकर आप ने राष्ट्र नायकों को चेताया है। नाटक मत करो राष्ट्र के लिए जियो। राष्ट्र के लिए मरो। अगर राष्ट्र नहीं रहेगा, नहीं बचेगा तो तुम भी नहीं बचोगे। सिद्धेश्वर को पाचर का कोटि-कोटि प्रणाम! प्रणाम उनकी लेखनी को।

डॉ. सहदेव सिंह 'पाचर'
भभूआ, बिहार

'विचार दृष्टि' वैचारिक क्रांति की प्रतीक

आप द्वारा संपादित त्रैमासिक पत्रिका 'विचार दृष्टि' के कुछ लेख पढ़ने पर मुझे अनुभव हुआ कि भारत में वैचारित क्रांति शीघ्र ही आ सकती है यदि आप जैसे कुशल एवं अनुभवी, विचारशील, कर्मठ व्यक्तित्व संपूर्ण समर्पण की भावना से दृढ़ निश्चय होकर इस ओर लग जायें।

मैं भी अपने अनुभव से आपको इस ओर तीव्र गति से चलने में सहयोग देना चाहता हूँ। आप से प्रार्थना है कि 2004 वर्ष का अंतिम अंक तथा शेष सितंबर 2006 तक से अंक का बिल तथा पत्रिका वी.पी.पी. से भेजने का कष्ट करें।

सुभाष अदलखा, 606, स्ट्रीट नं.-8,
मदनपुरी, गुड़गाँव

तथाकथित साहित्यकारों से सावधन!

अपने एक मित्र के यहाँ 'विचार दृष्टि' का अक्टूबर-दिसंबर, 2004 अंक (राष्ट्रीय एकता विशेषांक) देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतनाप्रेरक और अनुकरणीय है। संपादकीय के अंतिम शब्द आचरण की इसी चिंता से जुड़े हैं और मैं आपकी इस चिंता का सहभागी हूँ। देश के नागरिकों और राजनीति के कर्णधरों में ही नहीं, अवसरवादी तथाकथित साहित्यकारों में भी राष्ट्र निष्ठा का अभाव देखा जा सकता है। ऐसे तथाकथित साहित्यकार बड़े बड़े पुरस्कारों और सरकारी विदेश यात्राओं पर अपनी गिद्धदृष्टि गड़ाये रहते हैं- राष्ट्रभावना और संस्कृति उनके लिए दिखाने की चीज हैऋ हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और। ऐसे तथाकथित राष्ट्रनिष्ठ साहित्यकारों की पहचान आवश्यक है; उनसे अत्यध्कि सावधन रहने की जरूरत है। अस्तु! यों, पत्रिका की सामग्री वैविध्यपूर्ण, उत्कृष्ट और चिंतनात्मक है। 'कामायनी' पुनर्विचार में प्रो. नवलकिशोर गौड़ ने चिंतन के कई नये बिंदू उठाये हैं, जिनमें से एक है-'कामायनी' की कथावस्तु का विभाजन प्राचीन काव्याचार्यों द्वारा निर्दिष्ट सर्गबद्ध नहीं वरन् 'भाव-बद्ध' है। (पृ. 6) विद्वान लेखक के इस विचार में निश्चय ही बल है और इसपर विद्वानों को जमकर विचार करना चाहिए। प्रेमचंद सहित्य के संबंध में इधर जो बेबुनियाद सवाल खड़े किये जा रहे हैं और जिन विवादों को जन्म दिया जा रहा है उनके संबंध में मैं श्री कृष्ण कुमार राय के निष्कर्ष से सहमत हूँ। 'आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' शीर्षक लेख शीर्षक की व्यापकता के अनुरूप नहीं बन पड़ा है। शेष लेख भी अच्छे बन पड़े हैं। कविताओं में आचार्य भगवत दुबे, डॉ. डोमन साहु समीर, नलिनी कांत की रचनाएँ मार्मिक और प्रभविष्णु हैं। पत्रिका के शेष सभी स्तंभ पुस्तक समीक्षा, समाचार, प्रदेशों की चिट्ठियाँ, संस्मरण, श्रद्धांजलि, साभार स्वीकार आदि उपयोगी अथच महत्वपूर्ण हैं। हार्दिक बधाई स्वीकारें।

डॉ. सुंदर लाल कथूरिया, नई दिल्ली

'विचार दृष्टि' 7वें वर्ष में

*'विचार दृष्टि' ने वर्ष 2004 में अपना सपफल छठा साल पूरा किया। इसका 21वाँ अंक 'राष्ट्रीय एकता विशेषांक' के रूप में पाठकों के समक्ष लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के 129वें जयंती समारोह एवं गुड़गाँव से नई दिल्ली के राजेन्द्र भवन तक के लगभग 55 किलोमीटर की **राष्ट्रीय एकता रैली** के अवसर पर प्रस्तुत किया गया। इस अंक में राष्ट्रीय एकता के विविध आयामों पर देशभर के जाने-माने लेखकों के तथ्यपरक एवं सारगर्भित आलेखों को पाठकों ने तहेदिल से सराहा जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।*

अभी तक हमारा यह प्रयास रहा है कि नियमित रूप से प्रकाशित इस पत्रिका में देश के सजग एवं विचारवान नागरिकों को स्वस्थ मानसिक खुराक प्रदान किए जाएँ ताकि उनमें राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हो सके और देश के उन्नयन में वे अपने राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन कर सके। पत्रिका को और अध्कि उपयोगी बनाने तथा चिंतकों-विचारकों एवं लेखकों के प्रेरणादायी अनुभवों एवं अपेक्षित सहयोग की प्रतीक्षा रहेगी। पत्रिका के संबंध में आपके सुझावों का स्वागत है।

पाठकों व लेखकों ने 'विचार दृष्टि' को सराहा और बिना किसी लोभ-लालच के अपनाया। इन छह वर्षों में आपके स्नेह और विश्वास के बल पर इसे स्तरीय और पठनीय बनाने में हम कामयाबी के मुकाम पर पहुँच रहे हैं जिसके लिए हम आपके आभारी हैं। लेखकों एवं पाठकों के जीवन में नवज्योति जले और वे स्वयं भी एक दीप बनकर ज्योति जलाएँ, नववर्ष पर हमारी यही मंगलकामना है। इस अंक के आवरण के मुखपृष्ठ पर दीप की ज्योति और उसके मध्य श्रीगणेश ज्ञान, विवेक और विचार के प्रतीक हैं।

'विचार दृष्टि' लागत से कम मूल्य यानी 15 रुपए में इसकी प्रति आपको उपलब्ध होती रही है, किंतु लगातार महंगी होती प्रकाशन सामग्री और इसकी साज-सज्जा, कागज तथा छपाई के गुणों में बढ़ोत्तरी के कारण अब हम 'विचार दृष्टि' को जनवरी-मार्च 2005 के अंक 22 से मूल कीमत 25 रुपए करने के लिए बाध्य हैं। पफलतः इसके एक वर्षीय सदस्यता के लिए 100 रुपए तथा दो वर्षीय सदस्यता के लिए 200 रुपए किये जा रहे हैं।

हमें आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि आप सुधी पाठकों का स्नेह और अपनापन पहले की तरह ही मिलता रहेगा।

गिरीशचंद्र श्रीवास्तव
संपादकीय सलाहकार

कार्यालय राष्ट्रीय विचार मंच
'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
फोन- 011-22530652

आवश्यक सूचना

पत्रांकः राविमं/1 **दिनांकः 01.01.2005**

मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों एवं सदस्यों को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2005-07 के लिए नवगठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की प्रथम बैठक आगामी 13 मार्च, 2005 को अपराह्न 2:30 बजे गाजियाबाद के सूर्यनगर स्थित विद्या भारती स्कूल के सभागार में होगी जिसमें वर्ष 2005 के कार्यक्रमों पर विचार करने के साथ-साथ मंच द्वारा राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के लिए किए जा रहे अभियान को मूर्त रूप देने पर विचार किया जायेगा। सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

सिद्धेश्वर
राष्ट्रीय महासचिव

जरा इनकी भी सुनें

संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य के लिए भारत की दावेदारी मजबूत हुई है।
-विदेश मंत्री, नटवर सिंह

देश के मौजूदा हालात में साहित्यकारों व बुद्धिजीवियों को मूकदर्शक नहीं बनना होगा।
-सांसद, डॉ. कर्ण सिंह

भारत सबसे तेज गति से वृद्धि करनेवाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक हो गया है।
- वित्तमंत्री, पी. चिदंबरम

मैं गरीब व शोषितों के लिए लिख रही हूँ।
- रचनाकार चित्रा मुद्गल

राम मंदिर बनवाने के लिए वह किसी भी हद तक संघर्ष करने को तैयार हैं।
—भा.ज.पा. नेता उमा भारती

बांग्लादेश के खिलाफ होने वाले पहले वन-डे मैच में द्रविड़ विकेट कीपिंग नहीं करेंगे
—भारतीय कप्तान सौरभ गांगुली

अगर भारत कश्मीर समस्या का समाधान संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों के अनूरुप करने की मांग पर अब भी कायम रहे तो तो उनका देश अपने घोषित रुख से पीछे हटने को तैयार है।
—पाक राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ

दहशत के साए में आगामी विधानसभा चुनाव

3, 15 और 23 पफरवरी को बिहार, झारखंड और हरियाणा विधान सभा के चुनाव होनेवाले हैं। 14वें लोकसभा चुनाव के बाद केंद्र में बनी काँग्रेस नीत संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार जनता में नयी प्राणशक्ति फूँकने में असमर्थ रही है। पेट्रोल व डीजल की कीमतों में लगातार बढ़ोत्तरी हुई है। मँहगाई आसमान छू रही है। हम कहीं भी आगे बढ़ते हुए दिखाई नहीं दे रहे हैं। यथास्थिति बनी हुई है। जिस देश की समस्याएँ अनंत हों, वहाँ यथास्थिति एक नकारात्मक गुण होता है। इससे जनता में मुर्दनी छा जाती है। सरकारों से उसका विश्वास उठ जाता है और वह पहला मौका हाथ लगते ही उस सरकार से पीछा छुड़ाकर किसी नए विकल्प की ओर झुक जाती है। बिहार, झारखंड तथा हरियाणा विधनसभा के आगामी चुनावों में केंद्र के संप्रग सरकार के पिछले छह माह के कार्यकलापों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

जहाँ तक बिहार का सवाल है राजद के साथ तालमेल तथा संप्रग सरकार के दो केंद्रीय मंत्रियों लालू प्रसाद और रामविलास पासवान के आपसी विवाद के चलते काँग्रेस को अंतर्द्वंद्व से गुजरना पड़ा। राजद और लोजपा की आपसी प्रतिद्वंद्विता के कारण सरकार को परेशानी भी हुई है। हालांकि यह भी सच है कि यह पंक्ति लिखे जाने के वक्त तक झगड़नेवाले दोनों सहयोगियों में से कोई भी सरकार को छोड़कर जानेवाला नहीं दिखता। वैसे भी काँग्रेस बिहार में कई सालों से लालू प्रसाद का बगल-बच्चा बनी हुई है। दरअसल गठबंधन की आज की इस संस्कृति में उसका लगभग हर साझीदार सांस रोककर अपने पथ, वर्ग, पिफरके, जाति के अतिरिक्त पूरी तरह निजी हितों के पीछे पड़ जाता है। गठबंधन के सामूहिक हित या देश का हित जाए भांड में, उसकी बला से।

केंद्र में संप्रग सरकार में शामिल राजद के लालू प्रसाद तथा लोजपा के रामविलास पासवान के बीच उठा विवाद पफरवरी 2005 में होनेवाले बिहार विधानसभा चुनाव में क्या रंग लाएगा यह तो समय बताएगा, पर इतना जरूर है कि आगामी चुनाव अबतक का सबसे दहशत भरा चुनाव होगा। द्दहशतगर्दी के खेल में जीतनेवाले दल ही सरकार बना पाएँगे। कारण कि अपराधियों एवं बाहुबलियों के सवाल पर कोई भी दल विशेषकर राजद और लोजपा दोनों दल 'को बड़ छोट करत अपराधू' की कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं।

कहना नहीं होगा कि 14वें लोकसभा में राजद के लालू प्रसाद जैसा धर्मनिरपेक्ष मित्र पाकर रामविलास पासवान गदगद हो रहे थे वही आज चारा चोर, नजर आने लगे। ठीक वैसे ही लोकसभा चुनाव के पहले लालू प्रसाद जिस राम विलास पासवान को भावी प्रधानमंत्री के रूप में पेश कर रहे थे वही पासवान जी को आज माफिया सरगना के रूप में देख रहे हैं। दरअसल दोनों एक दूसरे को दागी बताकर अपनी कमीज को एक दूसरे से अधिक सापफ और चमकदार बताने की होड़ में लगे जो निश्चित तौर पर संवैधानिक मर्यादा के खिलापफ माना जाएगा। रेल मंत्रालय की जंग ने दोनों दोस्त को दुश्मन बना डाला।

27 नवंबर को पटना के गाँधी मैदान में लोजपा के रामविलास पासवान की 'बिहार बचाओ, बिहार बनाओ' रैली की अच्छी खासी भीड़ के जवाब में 23 दिसंबर को उसी गाँधी मैदान में राजद की किसान-मजदूर रैली को रद्द करने के बाद बिहार का राजनीतिक परिदृश्य यह बताता है कि बिहार विधानसभा चुनाव तक दोनों दो ध्रुव पर बने रहेंगे।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि एक ओर जहाँ केंद्र और राज्य दोनों में सत्ताधारी होने का लाभ लालू प्रसाद को जमकर मिलेगा वहीं दूसरी ओर जब से जद(यू) नेता नीतीश कुमार ने अपनी पुरानी कटुता भुलाकर अस्थिर चित्त और पाला बदलने में माहिर रामविलास पासवान को अपने बड़े भाई की संज्ञा देकर बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में पेश करने लगे तबसे श्री पासवान की महत्वाकांक्षाएँ ज्यादा उड़ान भरने लगी हैं। हालांकि बिहार के मतदाताओं के अभी तक के रुख पर यदि गौर किया जाए तो ऐसा नहीं लगता कि जद(यू) लोजपा का गठबंधन राजद को आगामी विधानसभा चुनाव में शिकस्त दे सकेगा। लालू प्रसाद की पूरी राजनीति मुस्लिम और यादव वोटों पर टिकी है। जबतक मुस्लिम और यादव उनके साथ हैं तब तक राजद को हरा पाना नामुमकिन-सा है। पिछले लोकसभा में पड़े मत को यदि आधार माना जाए तो जातीय गुटों में बँटे बिहार के मतदाताओं का राजद गठबंधन को 43 प्रतिशत मत और राजग को 38 प्रतिशत मत मिला था। इसमें 5 प्रतिशत की दूरी को पाटने के लिए दलित तथा मुस्लिम मतों के लिए राजग को प्रयास करना होगा जो आज की परिस्थिति में असंभव तो नहीं पर कठिन अवश्य है, क्योंकि न तो रामविलास पासवान की पकड़ पूरे दलित मतों पर अभी तक हो पाई है और न जद(यू) मुस्लिम मतों को अपनी ओर आकृष्ट करने में सपफल दिखाई देता है। दूसरी बात यह है कि श्री पासवान जद;यूद्ध का साथ चाहते हैं लेकिन भाजपा का नहीं और जद(यू) को लोजपा का साथ चाहिए मगर काँग्रेस नहीं। इस प्रकार सच कहा जाए तो पंद्रह वर्षों के लालू-राबड़ी राज को उखाड़ फेंकने के लिए बिहार में विपक्ष के पास अभी तक ठोस रणनीति की कमी दिखती है। हाँ, यदि काँग्रेस और पासवान मिलकर चुनाव लड़ें और नीतीश कुमार को पासवान राजग से तोड़ लें तो कुछ बात बन सकती है। वैसे भी मात्र दस सीटों की औकात बताकर लालू जी कांग्रेसियों के जले पर नमक छिड़क रहे हैं जिससे कांग्रेसियों में हड़कंप मच गया है। इस बात का कोई आसार नजर नहीं आता कि काँग्रेस लालू का दामन छोड़ने को तैयार होगी, क्योंकि केंद्र में संप्रग सरकार को खतरे में डाले बगैर काँग्रेस बिहार में राजद से किनारा नहीं कर सकती। जाहिर है ऐसा करने का साहस काँग्रेस की सोनिया गाँधी के पास नहीं है।

हालांकि यह भी सही है कि संप्रग सरकार के दो प्रमुख घटक

दलों के नेताओं में छिड़े वाकयुद्ध और आरोप-प्रत्यारोप में संप्रग सरकार की छवि थोड़ी धूमिल हुई है जिससे काँग्रेस की उलझनें बढ़ गई हैं पिफर भी राजद को दरकिनार करना काँग्रेस के लिए आसान नहीं दिखता। इस प्रकार देखा जाए तो राजद-लोजपा के विवाद प्रकरण से काँग्रेस की बाजी दांव पर लगी हुई है। मौजूदा चुनावी समीकरण के मद्देनजर काँग्रेस कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहेगी। लेकिन बिहार में जिस तरह के जमीनी हालात हैं उनमें काँग्रेस राजद में तालमेल होना आसान नहीं होगा। केंद्र में काँग्रेसनीत संप्रग सरकार बनने के बाद राज्य में भी काँग्रेस कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ा है और बिहार की प्रदेश इकाई लगातार राजद से संबंध समाप्त करने की वकालत करती रही है।

यह कहने की जरूरत नहीं कि बिहार विधानसभा चुनाव लालू प्रसाद के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। इसलिए अपनी गद्दी को बचाने के लिए वे किसी तरह का कोर-कसर उठा नहीं रखेंगे। उधर भाजपा तथा जद(यू) मिलकर भी अपने बलबूते लालू जी के तिलिस्म को तोड़ने में सक्षम नहीं दिखते, क्योंकि जिस प्रकार जद;यूद्ध के नीतीश कुमार ने रामविलास पासवान को भावी मुख्यमंत्री के रूप में पेश करने की पैरवी की है उससे न केवल उनकी अपनी छवि धूमिल हुई है, बल्कि बिहार के मतदाताओं को भी यह नागवार दिखा है। कारण कि जनता ने अंग्रेजी की एक कहावत 'चेंज फॉर बेटर **(Change for better)**' को यह चरितार्थ न कर 'चेंज फॉर वर्स **(Change for worse)**' समझा है, क्योंकि रामविलास पासवान के अतीत के जुड़े रेल मंत्री से लेकर आज तक के कारनामे को बिहार की जनता अपनी खुली आँखों से देख रही है।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि बिहार ही नहीं पूरे देश के वासियों ने नीतीश कुमार के व्यक्तित्व के साथ-साथ रेलमंत्री के रूप में उनके कार्यकलापों को सराहा है और उनकी पारदर्शिता सामने आई है, यही कारण है कि लालू-राबड़ी सरकार के विकल्प के रूप में बिहार की जनता उन्हें ही स्वीकार करने के लिए आज भी तैयार है, इसके मद्देनजर उनके कथित बड़े भाई रामविलास पासवान बिहार के लोगों के गले के नीचे उतरेंगे, इसमें संदेह है। दरअसल इधर हाल के महीनों में अपराधियों एवं बाहुबलियों की एक अच्छी खासी जमायत के लोजपा में इकट्ठे होने से नीतीश कुमार तथा खुद उनका दल एवं भाजपा लालू प्रसाद की पार्टी राजद का मुकाबला करने का साहस नहीं जुटा पा रही है और स्वयं नीतीश कुमार का विश्वास हिल उठा है। कारण कि बिहार को रसातल में जाने से बचाने की कहीं कोई ईमानदार कोशिश विपक्ष की ओर से अभी तक नहीं की जा सकी है। लालू-राबड़ी सरकार की विपफलता की चर्चा मात्र से राज्य के विकास को पुनः पटरी पर नहीं लाया जा सकता। उसके लिए तो मंहगाई, बेरोजगारी, अराजकता और अव्यवस्था जैसे जनता के ज्वलंत सवालों के खिलापफ ईमानदार पहल की आवश्यकता है। "पूरा बिहार जल रहा है। यहाँ कोई सुरक्षित नहीं है। प्रशासनिक तंत्र विफ्ल हो चुका है और अधिकारी पूरी तरह से निष्क्रिय है"- बिहार में अपराधों पर लगाम लगाने को प्रतिबद्ध पटना उच्च न्यायालय की एक जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी क्या बिहार में निरंतर बिगड़ते हालात को जानने-समझने के लिए कापफी नहीं है? बिहार सरकार के कुशासन को दिन-रात कोसते रहनेवाले विपक्ष में बैठे राजनीतिक दल क्या यह कहने की स्थिति में हैं कि उपर्युक्त मुद्दों को लेकर अथवा कुशासन को समाप्त करने के लिए उनलोगों ने एकजुट होकर कोई ईमानदार पहल की है? बिहार विधानसभा का यह चुनाव बिहारवासियों के लिए संभवतः आखिरी अवसर आया है जब बिहार को गर्त में जाने से बचाया जा सकता है, अन्यथा यहाँ के लोग पिफर अपने हाथ मलते रह जाएँगे।

बिहार तथा हरियाणा राज्यों को इन दिनों कर्त्तव्यहीनता की त्रासदी से जूझना पड़ रहा है। वर्तमान सत्ता के प्रति उफबन और दूसरी ओर किसी मजबूत विकल्प के अभाव की स्थितियों में उफँट किस करवट बैठेगा यह तय कर पाना फिलहाल मुश्किल है। सच तो यह है कि हरियाणा के प्रत्येक क्षेत्र में जो विकास की गति दिख रही है उसका सारा श्रेय वहाँ के मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला को जाता है, क्योंकि उन्होंने प्रत्येक जिले का सघन दौरा कर विकास के लिए सुविचारित और ठोस योजना बनाई। मगर वहाँ की जनता को चौटाला के रूखे व्यवहार को लेकर शिकायत अवश्य है और भ्रष्टाचार को निश्चित रूप में इनके समय में बढ़ावा मिला है। पिफर भी सच्चाई यह है कि वहाँ मुख्यमंत्री पद के लिए ओम प्रकाश चौटाला के अतिरिक्त कोई दूसरा दमदार दावेदार नहीं दिखता हालांकि काँग्रेस के भजन लाल, भूपेन्द्र सिंह हुंडा तथा वीरेंद्र सिंह का नाम मुख्यमंत्री पद के लिए आता है किंतु काँग्रेस का अंतर्कलह और गुटबाजी शायद काँग्रेस की नाव को किनारे नहीं लगा पाएगी।

जहाँ तक भाजपा का सवाल है भाजपा वर्णव्यवस्था, मंदिर और मठ के जिस तीन खंभों पर हिंदुत्व की राजनीति चला रही है वह बुरी तरह लड़खड़ाने लगी है। पिछले लोकसभा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में भाजपा की उम्मीदों पर पानी पिफर गया। ऐसी स्थिति में भाजपा झारखंड सहित बिहार तथा हरियाणा में काँग्रेस से मुकाबला कर पाएगी, इसमें संदेह है। वैसे भी झारखंड में जद(यू) के प्रमुख नेताओं के राजद में जा मिलने से राजग की स्थिति ठीक नहीं दिखती और दूसरी ओर मुजफ्फरपुर में जद(यू) के अध्यक्ष जार्ज फर्नांडीस की उपस्थिति में जद;यूद्ध के कार्यकर्ताओं द्वारा मतदाताओं को रुपये बाँटने की घटना ने उसकी छवि धूमिल की है।

मतदाताओं को लुभाने के लिए रुपए बाँटने को लेकर चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन के आरोप में फँसने की संभावना की वजह से 23 दिसंबर की प्रस्तावित राजद के महारैला को लालू जी ने स्थगित कर यह संकेत दे दिया है कि विपक्ष लामबंद होकर किसान-मजदूर के खिलाफ साजिश कर रहा है। हालांकि राजद के इस संकेत को राजनीतिक साजिश का नाम देकर चुनाव के वक्त रुपए बाँटने के प्रकरण को जायज नहीं ठहराया जा सकता। इस प्रकरण पर चुनाव आयोग का पफैसला तो भविष्य के गर्भ में है पर इस बात की संभावना अधिक है कि विधानसभा चुनाव के समय ऐसे कई खेल खेले जाएँगे, क्योंकि राजद को घेरने के लिए बिहार में विपक्ष किसी भी हद तक जा सकता है। महारैला को टालने के पीछे लालू प्रसाद की रणनीति बचाव

के नाम पर खेला गया एक आक्रामक दांव भी कहा जा सकता है जबकि जद(यू) नेता नीतीश कुमार ने इसे लालू प्रसाद का हताशा करार दिया है।

झारखंड के बारे में कहा जाता है कि भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने केंद्रीय खुपिफया एजेंसी और भारतीय प्रशासन के अधिकारियों को बुलाकर पूछा कि विधानसभा चुनाव में क्या होनेवाला है? सबों ने एक स्वर से कहा कि अगले कई सालों के लिए झारखंड को भूल जाइए। इस बार तो यहाँ किसी चमत्कार के भरोसे ही भाजपा को बहुमत मिल सकता है।

सबसे दिलचस्प बात यह है कि इन तीनों राज्यों में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का अच्छा खासा प्रभाव है और वे अपने दल-बल से किसी भी कीमत पर चुनाव में विजय प्राप्त कर अपनी हैसियत बरकरार रखना चाहेंगे क्योंकि अपराधियों पर राजनेताओं की बढ़ती निर्भरता ने कई नामी अपराधियों को राजनेताओं के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है। मतदाताओं को चाहिए कि सत्ता के नशे में चूर अपने प्रतिनिधियों को सही राह दिखाने के लिए अपने मत का सही इस्तेमाल करें।

जिस आदर्श बिहार के जेल में बंद एक अभियुक्त मोबाइल पर 670 कॉल करता है उसकी अधिकतर बातचीत राज्य सरकार के मंत्रियों और अधिकारियों से होती है, क्या वहाँ राज्य-प्रशासन तंत्र हत्या, दुष्कर्म और अपहरण एवं रंगदारी की घटनाओं पर काबू पा सकता है? उद्योग और रोजगारविहीन तथा रक्तरंजित बिहार में इस समय बढ़ते अपराध, अपहरण और रंगदारी की वजह से उद्योगपति धंध समेटने में लगा है और विद्यार्थी पलायन को विवश है। आखिर तभी तो बाहर के राज्य उसकी बेबसी पर आँसू न बहाकर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हैं।

राजनीतिक दलों के अमर्यादित आचरण ने हमें लोकतंत्र के विघटन के कगार पर पहुँचा दिया है। ऐसी स्थिति में आज सभ्य एवं प्रबुद्धजनों को राजनीति के अपराधीकरण के खिलापफ कटिबद्ध होने की जरूरत है।

लालू प्रसाद इस बार के चुनाव में अपने राजनीतिक जीवन की सबसे बड़ी अग्नि परीक्षा से गुजरने जा रहे हैं। पंद्रह साल पहले, बिहार की सत्ता पर काबिज होने के बाद कभी मजाक में उन्होंने कहा था कि अगली बीस सालों तक उन्हें कोई भी इस सत्ता से हिला नहीं सकता। तब शायद उन्हें स्वयं यह अनुमान न रहा हो कि उनका यह मजाक सच भी साबित हो सकता है। लेकिन आज यह लगता है कि यह सच के कापफी करीब पहुँच चुका है। इसलिए लालू किसी भी कीमत पर इस बार बिहार का यह चुनाव जीतना चाहते हैं। यह काम पासवान को दरकिनार किए बिना नहीं हो सकता। इसके मद्देनजर संभव है कि लालू की यह कोशिश हो कि पासवान को संप्रग खेमे से बाहर निकाला जाए और उन्हें राजग खेमे की ओर ठेलने की बजाय पूरी तरह अलग-थलग किया जाए।

बुद्ध और महावीर का तपक्षेत्र बिहार में इस वक्त लगभग एक दर्जन हिंसक नक्सली संगठन हैं। बिहार में निजी सेनाएँ, जातीय, पलटनें और राज्य संरक्षित अपराधी हैं। दहशतजदा घर-परिवार जेलखाना है। जेलों में घर-परिवार जैसी सुविधाएँ हैं। जहाँ राष्ट्रकवि रामधरी सिंह दिनकर ने संस्कृति के चार अध्याय खोजें, बाबा नागार्जुन और 'मैला आँचल' वाले फणीश्वरनाथ रेणु पैदा हुए। जिस बिहार ने देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद तथा संपूर्ण क्रांति आंदोलन के प्रणेता जय प्रकाश नारायण को जन्म दिया वही बिहार आज बदहाल है। हिंसा, हत्या, अपहरण, भ्रष्टाचार और रंगदारी के आँकड़ों की चर्चा ही बेमतलब है। पुलिस व्यवस्था मरणासन्न और प्रशासन रूग्न है। ठेकेदार, माफिया और अपराधी पहले की तरह आज भी सत्ता के संचालक हैं। ऐसी अराजकता के बीच राजद किसी भी चुनाव में जीत हासिल करने का एक मजबूत इरादा रखता है।

झारखंड की 81 विधानसभा की सीटों पर राजग और संप्रग का सीध मुकाबला होनेवाला है। कुछ सीटों पर नक्सलवादी संगठनों का भी असर होगा, जो चुनाव बहिष्कार का नारा तो देते ही हैं, चुनाव प्रक्रिया से भारी नफरत भी करते हैं। ऐसे में हिंसा की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता।

झारखंड में चार साल तक शासन में रहनेवाली भाजपा जिसने पिछले लोकसभा चुनाव में राज्य की 14 सीटों में से 13 गँवाई है को सत्ता बचाए रखना आसान नहीं होगा। इसलिए उसके लिए यह चुनाव एक चुनौती भरा है। दूसरी और अंदरूनी कलह, मुख्यमंत्री की कुर्सी का आकर्षण संप्रग के कांग्रेस व झामुमो के बीच संघर्ष की स्थिति पैदा कर रही है। झामुमो के शिबू सोरेन मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार हैं हालांकि उनके केंद्रीय मंत्रिमंडल में दोबारा शामिल होने से राजनीति के आड़े-तिरछे मैदान पर खेल खेलने में माहिर रही काँग्रेस को थोड़ी राहत मिली पर यह कोई बाध्यता नहीं कि केंद्र में मंत्री बनने पर वह राज्य में मुख्यमंत्री पद का दावेदार नहीं हो सकता।

बिहार-झारखंड या हरियाणा बेहतर तो यह होगा कि जनता कभी न पूरे होनेवाले बेसिर पैर के वादों व खोखले आश्वासनों के पीछे भागने की बजाय विकास की यथार्थपरक सोच अपनाए और सही विकल्प के रूप में उसे ही चुने जो राज्य के विकास के प्रति कटिबद्ध हों।

संक्रांति – काव्य साकेत

□ वंशीधर सिंह

"कला की उत्पत्ति पुरानी चेतना तथा बदलते हुए सामाजिक संबंधों के बीच के तनाव से होती है।" काडवेल की यह उक्ति सभी कला रूपों पर समान रूप से लागू होती है। कविता मनुष्य के राग-बोध, भाव-बोध, विचार बोध और सौंदर्य बोध की कलात्मक अभिव्यक्ति है। किसी भी काव्य परंपरा का प्राचीन रूप पूर्णरूपेण समाप्त नहीं हो जाता और न ही वह नवीन के अभ्युदय में सर्वांशतः सहायक ही होता है। प्राचीन और नवीन के द्वंद्व में प्राचीन का प्रासंगिक प्रत्यय नवीन में रूपांतरित हो जाता है तथा अप्रासंगिक छंट जाता है। किंतु मानव की मूल प्रवृतियाँ तथा उनके प्रभाव स्रोत प्रायः नहीं बदलते। इसलिए नयी कला प्राचीन कला से भिन्न होते हुए भी अंततः कला ही रहती है जिसमें मनुष्य की केंद्रीयता होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि जनता की चित्तवृति बदल जाने से साहित्य का स्वरूप भी बदल जाता है। जनता की चित्तवृत्ति में बदलाव तभी आता है जब सामाजिक संबंधों में बदलाव आ जाता है। हिंदी साहित्य के विभिन्न काल इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के एक महत्वपूर्ण कवि हैं और उनका साकेत हिंदी का श्रेष्ठ काव्य। गुप्त जी ने साकेत की रचना में अपनी प्रतिभा, अपने श्रम और लंबे समय का भरपूर उपयोग किया है। साकेत का प्रकाशन छायावाद काल में हुआ था किंतु यह महाकाव्य इसके पूर्व से ही लिखा जा रहा था। इसलिए साकेत एक संक्रांति काव्य है जिसमें पुरानी और नयी परंपरा की झलक मिलती है। द्विवेदी युग नवजागरण का युग था जिसमें रीतिबद्धता और पराधीनता के विरुद्ध मुक्ति की चेतना और कर्म का दर्शन है। साकेत की संरचना और इसके रचना विधान की निर्माता से आलोचना की गई है, किंतु इसमें व्यक्त विचारों, अंतर्मुक्त भावों तथा अंतर्व्याप्त बोधों की सम्यक मीमाँसा नहीं की गई है। साकेत रामकथा का पुनराख्यान नहीं, सामंती कंगूरे में पड़ रही दरार का दर्पण है। गुप्त जी द्विवेदीकालीन सामाजार्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थितियों तथा उनके संबंधों के चित्रण के साथ भारतीय रामकाव्य की परंपरा का उपवृहण कर रहे थे। एक और वह अपने समय के संवाद का अनुभव कर रहे थे तो दूसरी ओर प्राचीन संस्कृति से संवाद। पुरानी और नयी संरचना के द्वंद्व का जितना तलस्पर्शी चित्रण गुप्त जी ने साकेत में किया है, उतना प्रसाद कृत 'कामायनी' के अलावा किसी भी प्रबंधकाव्य में नहीं मिलता है। वह सत्ता की केंद्रीयता और परिधियता पर समान रूप से विचार करते हैं। 'साकेत' में सत्ता का केंद्र अयोध्या ही है। अयोध्या घटनाओं का भी केंद्र है। महाराजा दशरथ की शासन व्यवस्था और सरकार की राजधानी 'साकेत' ही है। उनके पारिवारिक कोलाहल और अंदरूनी राजनीति का केंद्र 'साकेत' ही है। राज्य के कार्यों का संचालन एक मंत्रिपरिषद करता था जिसके प्रमुख वशिष्ट थे। सत्ता और संस्कृति की वशिष्टी परंपरा और महाराज दशरथ की राज्य परंपरा में टकराव न होकर सौम्य सामंजस्य था। धर्म राजनीति से शक्ति प्राप्त करता था और राजनीति धर्म से समर्थन हासिल करती थी। इस सामंजस्य में तब दरार पड़ती है, जब मंथरा और कैकेयी भरत को सिंहासन पर बैठाने के लिए प्रयत्नशील होती हैं। वे इस प्रयास में सपफल भी होती हैं, किंतु तदर्थ रूप में ही राज्य सिंहासन मिलता है। सत्ता का तदर्थवाद संपूर्ण सत्ता का विलोम हो जाता है। किंतु यह विलोम अपनी पूर्णता तक न जाकर पुनः सामंजस्य की ओर मुड़ जाता है। सत्ता का यह द्वंद्व और सामंजस्य समाज का द्वंद्व और सामंजस्य ही है। फलस्वरूप सत्ता सूत्र के संचालकों के पक्ष-विपक्ष में द्वंद्व और सामंजस्य की दोनों स्थितियाँ विद्यमान थीं। 'साकेत' की कथा का यह तानाबाना द्विवेदीयुगीन स्थितियों, सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियों की झलक के साथ प्राचीन और नवीन का संश्लेष भी प्रस्तुत करता है। 'साकेत' में वर्णित तथ्यों, प्रसंगों, संदर्भों, दृश्यों तथा परिघटनाओं का अध्ययन वास्तव में तत्कालीन समय के साथ रामकथा का भी अध्ययन है। बाल्मिकी रामायण, तुलसीकृत रामचरित मानस, केशवदास कृत 'रामचंद्र चंद्रिका' और गुप्त जी के 'साकेत' में जहाँ कहीं भी भिन्नता है, वह महज कथा की भिन्नता नहीं अपने-अपने समाज और समय की भी भिन्नता है।

पदुमलाल पन्नालाल बक्शी ने द्विवेदी युग को 'साहित्य का सबसे बड़ा समालोचक काल' कहा है और डॉ. सुधीन्द्र ने 'हिंदी कविता का युगांतर। आचार्य हजारी प्रसाद ने आधुनिक काल को न केवल राजनीतिक संघर्ष और सामाजिक शक्तियों के टकराव का काल कहा है, बल्कि नवीन युग के अभ्युदय का काल भी कहा है। उनकी स्थापना है कि 'मनुष्य के सामाजिक संबंधों और अंतर वैयक्तिक संबंधों के मान में परिवर्तन होने लगा ओर क्रमशः पुराने संस्कारों से मुक्त नवीन दृष्टि उत्पन्न हुई जिसने राजनीतिक, साहित्यिक, धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में नई हलचल पैदा कर दी। स्पष्ट है, द्विवेदी काल प्राचीन और नवीन के अंतः संबंधों की समीक्षा का काल है। परंपरा को आलोचनात्मक दृष्टि से देखने और नवीनता को सजगता से ग्रहण करने का काल है। गुप्त जी के काव्य में सदिच्छा और अनुवीक्षा, प्राचीनता और नवीनता की जो प्रवृति है, वह तत्कालीन सामाजिक परिवेश की देन है। काँग्रेस में नरम दल और गरम दल की भिन्नताएँ भारतीय जनता की उस मनोवृत्ति की भिन्नताएँ हैं जो स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय थीं। ब्रिटिश शासन से अनुनय-विनय करके सुविधा प्राप्त करने और ब्रिटिश सत्ता

के पूर्णरूपेण समाप्त करने की भिन्न राजनीतिक धाराएँ अपने समय के द्वंद्व को ही प्रतीकित करती है। कांग्रेस का एक घड़ा ब्रिटिश शासन से सहयोग का समर्थक था तो दूसरा उसे शोषक समझता था। देश की संपदा का विदेश जाने से अच्छा ब्रिटिश हुकूमत का वापस जाना- लोगों के दिलों में घर कर गया था। इसलिए ब्रिटिश शासन से असहयोग की भावना अधिक तीव्र रूप से उभर कर आयी। पफलस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्यवाद अपेक्षाकृत अधिक सचेत हो गया। लार्ड डपारिन ने एक भोज के अवसर पर कहा था "अब कांग्रेस का झुकाव राजद्रोह ही ओर हो गया है। पफलस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्यवाद को आदेश जारी करना पड़ा कि सरकारी पदाधिकारी किसी तरह का सहयोग ;संबंधद्ध कांग्रेस से नहीं रखे। किंतु इसका जनमानस पर विपरीत प्रभाव पड़ा। राष्ट्रीयता और देश-प्रेम की भावना और तीव्र हो गई। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है- इस नारे को काँग्रेस को अपनाना पड़ा। फलस्वरूप स्वराज्य कांग्रेस का मूलमंत्र हो गया। राजनीतिक क्षितिज पर सशस्त्र क्रांतिकारी दल के उभार और साम्यवादी दल की स्थापना ने भारतीय राजनीति और जनता के बीच परिवर्तनवादी प्रवृत्ति को बढ़ाया। इन्हीं परिस्थितियों में महात्मा गाँधी भारतीय राजनीति के क्षितिज पर चमकते हैं। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद और द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व का समय भारतीय राजनीति में गाँधी युग के रूप में अभिहित हैं साहित्य-समीक्षा महज साहित्य समीक्षा नहीं है, वह राजनीति और समाज की भी समीक्षा है। द्विवेदी युग के साहित्य पर इन परिस्थितियों की छाया है।

'साकेत' की संरचना में कथा की गति का शिथिल होना और बाद में तेजी आना महज रचनाकार की मनःस्थिति का ही नहीं, तत्कालीन समय का भी द्योतक है। साकेत के प्रारंभ में कथा की मंथरता और उतरार्द्ध में तीव्र प्रवाह का कारण डा. नगेंद्र ने कवि के वैयक्तिक जीवन में खोजा है और सामाजिक परिवेश की उपेक्षा कर दी है। राष्ट्रीय आंदोलन की प्रारंभिक मंथरता और कालांतर में दुर्दम प्रवाह से संगति बैठाने में नगेंद्र चूक गये हैं। फ्रायडीय मनोविज्ञान के आधार पर साहित्यिक कृति के मूल्यांकन का प्रयास समाजेतिहास का निषेध है। किसी बड़ी रचना का संदर्भ सूत्र कवि के वैयक्तिक जीवन-प्रसंग में खोजने की अपेक्षा सामाजिक रचना है। इसकी संरचना मनोविज्ञान की चिति पर नहीं, समाज की भीति पर टिकी हुई है। गुप्त जी की बीमारी का असर उनके लेखन पर हो सकता है, किंतु वही एकमात्र कारण नहीं हो सकता। साकेत में कथा की प्रारंभिक मंथरता और उतरार्द्ध में तीव्र प्रवाह तथा भारतीय जीवन के भव्य चित्र की अन्विति सामाजिक संगति में ही की जा सकती हैं यद्यपि नगेंद्र एक सधे हुए शास्त्रीय आलोचक हैं तथापि उन्होंने साकेत में भारतीय जीवन के भव्य चित्र और युग मूल्यों की स्थापना का श्रेय गुप्त जी को दिया है और इस प्रकार अपनी भूलों का परिमार्जन किया है। कविता आत्म की अभिव्यक्ति नहीं, आत्म की खोज है। (काडवेल) आत्म की खोज समाज से बाहर नहीं होती। व्यक्ति और समाज की परस्परता में ही रचना रूपायित होती हैं। कविता के माध्यम से कवि शेष सृष्टि के साथ रागात्मक संबंध स्थापित करता है। साकेत आत्म काव्य नहीं जीवन काव्य है। नगेंद्र अपनी स्थापनाओं पर दृढ़ता से टिके नहीं रहते। जहाँ वह यह स्थापना करते हैं कि सभी मनोरागों का मूल है अहम अस्मिता वृति जो प्रकट होकर राग द्वेष का रूप धारण करती है, वहाँ ठीक इसके विपरीत यह भी कहते हैं कि "व्यक्ति का अस्तित्व समाज के अंग स्वरूप ही है।" मनोविज्ञान के सहारे आलोचना का प्रतिमान गढ़ने का यही हश्र होता है। अस्तु।

गुप्त जी व्यक्ति की सार्थकता समाज से संयुक्त कर प्रतीकित और उन्मेषित करते हैं। साकेत की सीता राम की पत्नी होते हुए भी भारत लक्ष्मी है। नारी को उसकी जैव संरचना से उफपर उठाकर सामाजिक संरचना में स्थापित करना गुप्त की एक महान उपलब्धि है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान नारी आख्यान राष्ट्रीय और समाज शास्त्रीय संदर्भ प्राप्त कर उन्मेषित हो जाता है। यही स्त्री उन्मेष और स्वातंत्र्य बोध सामंती संरचना के कंगूरे को दरकाता है। पूंजीवाद का जहाँ सामंतवाद से विवश सामंजस्य रहता है वहाँ विरोध भी। सामंती अवशेष पर ही पूंजीवाद फलता-फूलता हैं इसलिए सामंतवाद अपने-अस्तित्व और प्रभाव कायम रखने के लिए पूंजीवाद से समझौता कर लेता हैं लेकिन पूंजीवाद प्रायः सामंतवाद के मजबूत मलखम को कमजोर करता हैं इसी द्वंद्व और सामंजस्य के कारण समाजिक जीवन में परिवर्तन आता है। सामंती संरचना में संयुक्त परिवार की अवधारणा प्रबल होती है। साकेत में संयुक्त परिवार को प्रायः ढहते हुए दिखाया गया है। संयुक्त परिवार का बिखरना सामंती संरचना का कमजोर होना है। 'साकेत' के संयुक्त परिवार का गठन केवल पति-पत्नी से न होकर, राजा दशरथ, उनकी कई रानियों, अनेक पुत्रों पुत्र बंधुओं और अन्य संबंधी जनों से बना है। पूंजीवादी उत्पादन के विकास और औद्योगिक पफैलाव के चलते कृषि आधारित संयुक्त परिवार का विघटन और उसके स्थान पर छोटे परिवार का अस्तित्व में आना एक सामाजेतिहास सच्चाई है। गुप्त जी संयुक्त परिवार के विघटन में ढहते सामंती आधार और बढ़ते पूंजीवादी प्रभाव को नहीं पचा पाते थे। पफलस्वरूप उनका संयुक्त परिवार का व्यामोह साकेत में साफ झलकता है। यह अकारण नहीं है कि उस युग के एक अन्य महान रचनाकार प्रेमचंद के गोदान में भी संयुक्त परिवार की अवधारणा प्रबल है। राजा दशरथ के संयुक्त परिवार का बिखरना और होरी के संयुक्त परिवार का बिखरना इतिहास का समकाल से मिलना है। गुप्त जी और प्रेमचंद जी की भारतीय उदीषा पर इस विघटन से आघात पड़ता था। किंतु ये दोनों अपने युग के सजग रचनाकार थे, इसलिए अपने संस्कारित स्वभाव के बावजूद इस सच को पहचाने और उसे अभिव्यक्ति करने से नहीं चूके। साकेत की कैकेयी का भारत के लिए चिंतित और सक्रिय होना और पिफर दशरथ मरण, रामवनगमन तथा भरत की विपरीत चिंतना के पश्चात् प्रायश्चित करना न केवल संयुक्त परिवार के प्रति गुप्त जी के मोह का परिचायक है, बल्कि उनकी यथार्थ की गहरी

पकड़ और आदर्श क प्रतिस्थापन का द्योतक है। यथार्थ और आदर्श के द्वंद्व में गुप्त जी का साकेत निखर उठा है। भरत के लिए सत्ता प्राप्ति की सक्रियता यथार्थ है और कैकेयी का पश्यातापं आदर्श। 'युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी, रघुकुल में भी एक अभागिन रानी। निज जन्म-जन्म में सुने जीव यह मेरा, धिकार उसे, या जो महास्वार्थ ने घेरा। कैकेयी का यह कथन जहाँ उसके अधिकार का प्रस्थापन करता है वहाँ पश्चाताप उसका निषेध।

गुप्त जी साकेत में व्यापक आयाम की सृष्टि करते हैं जिसमें पूंजीवादी व्यवस्था के उदय और समंती व्यवस्था केपतन की प्रक्रियाजारी रहती है। अतः 'साकेत' 'मानस' की अनुकृति नहीं है। प्राचीन रामकाव्य पर आधुनिक युग की छाया है। नगेंद्र 'साकेत' को आर्य-संस्कृति का आदर्श काव्य कहते हैं जबकि निरे आदर्श का कोई अर्थ नहीं है। जो आदर्श यथार्थ की जमीन पर नहीं टिका रहता, वह काल्पनिक होता है। गुप्त जी का आदर्श यथार्थ की जमीन से विकसित हुआ है। गुप्त जी को कोरा आदर्शवादी कहने वाले आलोचकों को यह समझना चाहिए कि उनके संयुक्त परिवार की अवधारणा और आदर्श में यथार्थ की संपूर्णता है। खंडित यथार्थ और अखंडित आदर्श का कोई प्रतिमान गढ़ना गुप्त जी का ध्येय नहीं रहा है। वह यथार्थ और आदर्श के बीच से जीवन सत्य को अभिव्यक्ति करते हैं। इसलिए 'साकेत' में गृह कलह कोलाहल और त्याग का अद्भुत सामंजस्य है। रामवनगमन एक कटु यथार्थ है जिसके कारण दशरथ का निधन, सीता काहरण और लंका का समर होता है और आदर्श है लक्ष्मण-उर्मिला का अद्भुत त्याग। भरत की आत्म ग्लानि, कैकेयी के पश्चाताप और निष्कवच उद्‌गार के पश्चात पूरी साकेत-सभा करूणा और सहानुभूति से भर जाती है और पक्ष-विपक्ष का मनोमालिन्य घुल जाता है-

यदि मैं उकसाई गई भरत से हाऊँ
तो पति समान ही स्वयं पुत्र को खोऊँ
क्या कर सकेंती थी मरी मंथरा दासी
मेरा ही मन रह सका न निज विश्वासी

कैकेयी अपनी मानव सुलभ कमजोरियों को स्वीकार का पूर्ण मानवी के रूप में प्रतिष्ठित हो जाती हैं सभी कैकेयी के व्यक्तित्व में हुए रूपांतरणसे प्रसन्न हो जाती और स्वयं रूपांतरित हो जाती है-

जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई
सौ बार धन्य हे एक लाल की माई।

इस प्रकार साकेत में वर्णित कैकेयी का चरित्र इकहरा नहीं हैं उसके व्यक्तितव में विद्यमान द्वंद्व में आधुनिक युग के अंतर्विरोध भी झलकते हैं। उसका व्यक्तित्व स्थित नहं, गत्यात्म्क है। इसलिए साकेत में न तो मानस केक सरस्वती संदर्भित प्रसंग हैं और न ही मंथरा को दोषी साबित करने का प्रायन्तिक हठं गुप्त जी किसी विषय को लेकर हठी नहीं रहे हैं। मानस से साकेत की भिन्नता और नवीनता इस अर्थ में है कि इसमें सौत-विद्वेष नहीं, पुत्र प्रेम है। साकेत की मंथरा कैकेयी के पुत्र प्रेम को उद्यीप्त करती और मानस सौत-विद्वेष ;सौतिया डाहद्ध का उभारता है। "भरत से सुत पर भी संदेह।

बुलाया तक न उन्हें जो गेह।

मंथरा द्वारा चलाया गयायही अमोध वाण कैकेयी के तन-मन को बिंध देता है-
गूंजते थे रानी के कान

तीर सी लगती भी वह तान।

भरत से सुत पर भी संदेह, बुलाया तक न उन्हें जो गेह।

इन काव्य-पंक्तियों की पुनः पुनः आवृत्ति कर कवि ने कैकेयी के मानस में उठनेवाली भाव उम्रियों के व्याज से पुत्र के प्रति माँ की ममता के उद्रेक को अभिव्यक्त किया है। नारी मनोविज्ञान की यह गहराई और अपने अधिकार के प्रति उसकी की गई कारवाई जैविक ही नहीं, सामाजिक सच्चाई है। ऐनीबेसेंट काहोम रूल औरकैकेयी का तदर्थ सत्तावाद प्राचीन और नवीन का परस्पर संवाद हो जाता है। पक्ष-प्रतिपक्ष, प्राचीन-नवीन आदर्श यथार्थ को जितनी शक्तिमत्ता और अर्थवत्ता से गुप्त जी ने साकेत में संयोजित किया है उतनी उनके समकालीनों ने नहीं। एक ओर कैकेयी और मंथरा मिलकर भरत के लिए राज्य सिंहासन की व्यवस्थित योजना बनाती हैं तो दूसरी ओर भरत इसका विरोध करते हैं। यह गृह कलह राज्य कलह में बदल जाता हैं राम राज्याभिषेक के प्रसंग में कैकेयी का क्रोध और समामध्य पश्चाताप परिस्थितियों के घात प्रतिघात के ही परिणाम हैं। गुप्त जी प्राचीन परंपरा से अपना संबंध विच्छेद नहीं करते बल्कि उसमें आधुनिकता के भाव भरते हैं। साकेत के पात्रों का स्वभाव और आचरण पौराणिक और अलौकिक नहीं, आधुनिक और मानवीय है। परंपरा से संबंध बनाये रखते हुए नवीनता के समावेश का यह काव्य कौशल गुप्त जी को एक दुर्लभ उफँचाई पर ला खड़ा करता है और उनके साकेत को सतही होने से बचा लेता है। रामकाव्य की शास्त्रीयता साकेत में लोकवादिता हो जाती है। भरत जब ननिहाल से अयोध्या लौटते हैं तब यह जानकर कि कैकेयी ने उनके लिए महाराज दशरथ से राज्य सिंहासन माँगा था जिसके चलते दशरथ मरण, रामवनगमन हुआ, यह पफट पड़ते हैं-

जी, द्रिरसने, हम सभी को भार
कठिन तेरा उचित न्याय विचार।

इसमें कैकेयी के मातृत्व की अपेक्षा उसका विकृत रूप व्यंजित हैं भरत अपने से राम को योग्य और सक्षम मानते थे। जनता भी राम को पसंद करती थी। ऐसा उद्‌गार प्रकअ कर भरत ने अपनी लोकब(ता ही प्रदर्शित की है, मानस में भरत की आत्माग्लानि का विशद वर्णन है किंतु सकोत में संक्षिप्त होते हुए भी मार्मिक एवं सारगर्भित हैः 'इष्ट तुमको दृप्त शासन नीति और मुझको लोक सेवाप्रीति। भरत की लोकब(ता श्मशान घाट पर पफूटे उद्‌गार से और पुष्ट होती है'

"निज प्रजा पालन भार,
यदि न आर्य करें स्वीकार।
तो चुनो तुम अन्य निज नरपाल,
जो किसी माँ का जना हो लाल"

भरत का यह विचार लोकहित में हैं भारत में राजतंत्र के साथ गणतंत्र का समन्वय है जिसके उदाहरण इतिहास में मिलते हैं। इसमें आधुनिक लोकतंत्र की अवधारणा भी मुखरित है। किसी जननी से जनमा कोई लाल

रेखांकित करने योग्य है जिसमें लोकतंत्र की मूल अवधारण अभिव्यक्त है। जो आलोचक गुप्त जी को वैष्णवी परंपरा का प्राचीन भावबोध का कवि कहते हैं उन्हें गुप्त जी की इस विष्पति पर विशेष ध्यान देना चाहिए, जो नितांत क्रांतिकारी है।

अयोध्या जा राज एक संपन्न राज्य था। संपन्न्ता का जितना भव्य वर्णन साकेत में है, उतनायह दिखाने के लिए कापफी है कि चक्रवती महाराज दशरथ का राज भंडार कापफी समृ(था। यह सृ(सामंतवाद की समृ(थी। अयोध्या का वैभव अभिषेक मंडप की सजावट में झलकता हे

दीर्घ खंभे हैं बने बैदुर्य के
ध्वज पटों में चिन्हकुल गुरू सूर्य के
बज रही है द्वार परजय दुदुंभि
और प्रहरी हैं खड़े प्रसदित सभी
क्षोम के छत में लटकते गुच्छ हैं।
सामने जिसके चमर भी तुच्छ हैं।

संपन्न अयोध्या का यह भव्य वर्णन अ(नग्न जन के समक्ष अपनी दिव्य चमक खो देता है। "वैद्वर्य" "अ(नग्न" से निषेधित हो जाता है और मणि रचित केतु काते बुने से

गर्वीली उतुंगता अर्थहीन हो जाती है।
तुम अ(नग्न क्यों रहो अशेष समय में
आओ हम कातें बुने गान की लय में

इसमें स्वतंत्रता संग्राम में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी के स्वीकार की स्पष्ट ध्वनि है। गाँधी जी का तकली-चरखा गुप्त जी का काज्योपकरण हो जाता है। कोई भी कवि अपने युग-सत्य की अभिव्यक्ति कर ही महान बनता है। राम काव्य की परम्परा के राम साकेत के राम नहीं है। वे भारतीय सामाजिक, राजनीतिक और संस्कृतिक नवजागरण के राम हैं। गुप्त के राम अलौकिक अवतार नहीं, इस भूतल के आधुनिक राम हैं। यदि कहीं स्वर्ग है तो उसे इसी धरती पर उतारने के लिए प्रयत्नशील राम हैं। वे तापितों और शापितों के राम हैं-

मैं आया उनके हेतु कि जो तापित हैं
जो विवश, विकल, बलहीन,
दीन, शापित हैं
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

जहाँ "मानस" में विप्रों, साधुओं की संरक्षा और धर्म की स्थापना के लिए राम अवतार लेते हैं, वहाँ "साकेत" में दीन-हीन शापित-ताड़ित जनों के उद्धार के लिए, समाज-सेवा के लिए सन्नद्ध होते हैं। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान देश भक्त जनों की जो कतार खड़ी हो रही थी, सामंतवादी और सम्राज्यवादी सत्ता-व्यवस्था के विरूद्ध जो शक्ति तैयार हो रही थी, वे तमाम प्रवृर्तियां और शक्तियाँ मिलकर एक समाजवादी लोकतंत्र का विकल्प रच रही थीं। "साकेत" के राम का यह अंतरण मध्यवर्ग की आत्मग्रस्तता का लोकांतरण है और गुप्त जी के कवि का भी रूप-गुण अंतरण है।

"साकेत" के केंद्र में उर्मिला है और उसकी परिधि में दशरथ, कैकेयी, राम, सीता, भरत और लक्ष्मण हैं। उर्मिला के अपने जीवन के अनमोल चौदह स्वकर्णिम साल त्यागे हैं जिसकी भरपाई असंभव है। रवीन्द्र नाथ टैगोर के काव्येर उपेखिता और आचार्य महाबीर प्रसाद द्विवेदी के "कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता" नामक निबंधों से प्रेरित होकर गुप्त जी ने "साकेत" की रचना की थी। इसके लिए उन्होंने भरपुर तैयारी भी की थी। "साकेत" चलते-पिफरते मनः स्थिति की रचना नहीं, दीर्ध समय में कठिन श्रम और मनोयोग से रचित रचना है। इसका प्रकाशन सन् 1913 है, जबकि इसकी रचना बहुत पहले से शुरू हो गई थी। इसकी रचना में लगभग पन्द्रह साल लगे थे। गुप्त जी ने "साकेत" में उर्मिला को केंद्रीयता प्रदान की है और राम-काव्य की परम्परा से पृथक् उर्मिला को प्रमुख नायिका बनाया है तथा आधुनिक विचारों से संबद्ध कर दिया है जो उनके क्रांतिकारी विचारों का ही प्रतिपफल है। उर्मिला का त्याग कई अर्थों में अतुलनीय त्याग है। क्या यह एक महत् उदेश्य के लिए स्वर्णिम जीवन का त्याग नहीं हैं उर्मिला के त्याग के आगे लक्ष्मण, राम, सीता और भरत का त्याग भी पफीका है। लक्ष्मण अपने देवतुल्य युग्म राम-सीता के लिए अपना त्याग करते हैं, लेकिन उर्मिला का त्याग जीवन-धन का त्याग है, इसलिए महान है। जब लक्ष्मण बन से लौटते हैं तब उर्मिला के प्रणय-लोक में एक अथाह सूनापन देखते हैं और उर्मिला को प्रसन्न करने की चेष्टा करते हैं। पिफर भी वह नायक नहीं है। भरत राज पाने के बाद भी उसका उपयोग नहीं करते हैं और अयोध्या में विरक्त संत की तरह रहते हैं लेकिन राजकाज जनहित में संभालते हैं। पारम्परिक महाकाव्य के अनुसार राम-सीता को नायक-नायिका होना चाहिए या लक्ष्मण उर्मिला को अथवा भरत-माण्डवी को, किंतु नायक-नायिका का दर्जा संत भरत और त्यागमति उर्मिला ही को प्राप्त है। गुप्त जी नेद भरत और उर्मिला के जीवन-सूत्रों से सर्वथा नयी वस्तु-योजना द्वारा कथा का जो विन्यास किया है वह न केवल मौलिक है, बल्कि क्रांति-कारी भी है। आचार्य शुक्ल उर्मिला के घनाविहिन जीवन को महाकाव्य के केन्द्रीय पात्र के अनुकूल ओर उपयुक्त नहीं मानते। किंतु "साकेत" और यशोधरा मेंउन्हें काव्यत्व का पूरा विकास दिखाई देता है और प्रबंधकत्व का अभाव आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी और डा. नगेन्द्र ने भी "साकेत" की प्रबंधकीय संरचना को शिथिल और ढीला-ढाला माना है। डा. बच्चन सिंह साकेत रामायणी कथा को असंतुलित रूप से प्रस्तुत किया गया मानते हैं। वस्तुतः साकेत शास्त्रीय अर्थ में प्रबंध काव्य नहीं है। उसकी विशेषता इस रूप में है कि प्रबंधकत्व में जाति-चेतना और कथा-चेतना मिलकर एक ऐसे काव्य लोक का निमाण करते हैं जिसमें गीतात्मक सौंदर्य, जीवन प्रसंग की मार्मिकता वृम वर्ण्रन और नाटकीय विधान का समावेश हो गया है। साकेत का यह समावेशी रूप संरचना कों नये आयाम और नये रूप में संयोजित करता है। न केवल साकेत प्रत्युत् 'कामायनी' की संरचना पर भी आलोचकों ने प्रश्न-चिन्ह खड़े किये हैं। कामायनी के महाकाव्यत्म, रूपकत्व और क्षीण इतिवृत को भी आलोचनाएं हुई हैं। कामायनीकार इसे महाकाव्य का रूप देना भी नहीं चाहते थे। महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर कोई कवि यदि महाकाव्य लिखता है तो वह रीतिबद्धता से मुक्त नहीं हो सकता। कामायनी की जो त्रुटियाँ गिनाई जाती हैं, वे ही कामायनी की विशिष्टताएँ हैं। साकेत और कामायनी उस रूप में महाकाव्य

हैं भी नहीं, जिस रूप में प्राचीन काल के महाकाव्य होते रहे हैं। ये दोनों कृतियाँ प्रगति प्रधान हैं। कामायनी एक अनुभव-संकुल संश्लिष्ट रचना है। साकेत और कामायनी में स्थल कथावृत और प्रबंधकत्व की खोज करने वाले उनके अनुभव संकुल और संशिलष्ट अर्थ-छवि को नजर अंदाज कर जाते हैं। इससे साकेत और कामायनी का महत्व कम नहीं हो जाता।

ऊपर कहा गया है कि साकेत केन्द्र में उर्मिला का त्याग है। उर्मिला का शांत मौन तब मुखर होता है जब लक्ष्मण बन से लौटते हैं। उर्मिला की प्रसन्नता शब्दों की मुखरता में प्रकट नहीं होती, उसकी प्रसन्नता मंद मुस्कान में खिलती है। यहाँ मुखर उच्चरण की अपेक्षा प्रशान्त हलचल हीन संवाद है। चौदह वर्षों की विमुक्ता उर्मिला मिलन से आतंरिक पुलक का अनुभव तो करती है किंतु वह जीवन के स्वर्णिम क्षण कहाँ से पायेंगी? उर्मिला के विरह वर्णन में जो स्थल श्रंगारिकता है और उसके अपूर्व त्याग में जो अपरिमित आदर्श है, उनका अतिक्रांत कर साकेतकार एक ऐसी स्थीति का निर्माण करता है जिमें भाव विचार और उच्छवास संशिलष्ट रूप में उर्मिला के धनत्व को व्यंजित करते हैं। राम जब लक्ष्मण को लक्ष्य कर कहते हैं "लक्ष्मण" तुम हो तप स्पृही। मैं वन में भी रहा गृही"--- ने केवल लक्ष्मण के त्यागमय जीवन की साधना की और संकेत है, बल्कि उर्मिला के तपःपृत व्यक्तित्व की भी व्यंजना है। उर्मिला को बिना बोले सब कुछ पीना पड़ा था। गुप्त जी साकेत का अंत लक्ष्मण-उर्मिला मिलन से करते हैं। ऐसे क्षण में गुप्त जी की ये पंक्तियाँ उसकी मनोदशा का चित्र खड़ा कर देती है।

कांप रही थी देहलता उसकी रह रह कर
टपक रहे थे अश्रु कपोलों पर बह-बह कर।

इसमें आदर्श नहीं, यथार्थ है। आदर्श और यथार्थ का मेल गुपत जी ने साकेत के उर्मिला प्रसंग को मार्मिक बना दिया है।

साकेत की भाषा और शिल्प को लेकर आलोचकों में मतभिन्नता रही है। डॉ. नागेन्द्र गुप्त जी को कथा शिल्पी तो मानते हैं किंतु शब्द शिल्पी नहीं। साकेत की भाषा को द्विवेदी कालीन गद्य का पद्यात्मक रूपांतरण कहा गया है। उनके अन्य काव्य पुस्तकों के संबंध में यह ठीक भी है लेकिन साकेत के विषय में नहीं। साकेत गुप्त जी की एक प्रौढ़ कृति है। इन्होंने शब्द-प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया है; खड़ी बोली को कविता के लिए जितना माँजना चाहिए, अपने युग की सीमा के अनुसार गुप्त जी ने उसे माँजा भी है। इसमें औध जी की काव्य भाषा से तुलना करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है। उन भावों के वर्णन में साकेत की भाषा व्यंजक है। साकेत में वियोग और योग, प्राचीन और नवीन, स्वप्न और वास्तविकता, आदर्श और यथार्थ, अभिद्या और व्यंजना, तत्सम और देशज, ललित और रूखड़ा, प्रांजल और सरल का जितना संतुलित निर्वाह किया गया है, उतना अन्य किसी खड़ी बोली के काव्य में नहीं। इसलिए इसके काव्यत्व पर प्रश्न-चिन्ह खड़ा करना, द्विवेदी युग की सीमा के बाहर जाकर विचार करना है। कोई भी कृति अपने समय की भाषा का प्रतीक होती है और उसमें तोड़-फोड़ भी करती है। गुप्त जी ने अपनी पहूर्ववर्ती भाषा को साकेत में तोड़ा और नयी भाषा-संरचना गढ़ी है। आचार्य शुक्ल साकेत में काव्यत्व का पूरा विकास देखते हैं। कोई भी काव्य-कृति बिना काव्यत्व के ऐतिहासिक हो ही नहीं सकती। साकेत काव्यत्व युक्त एक ऐतिहासिक काव्य कृति है। इस प्रकार यह साहित्य और इतिहास दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण कृति है। इसमें अपने युग, समय, समाज, भाषा, संकृति का झलक है। यह अंतर्विरोधों से ग्रस्त कृति भी है। साकेत इतिहास को समेटते हुए उसका अतिक्रांत करती है। यह कृति रचनाकार के आग्रहों-विश्वासों को व्यक्त करते हुए भी उसका अतिक्रमण करती हैं और अपने समय का प्रगल्भ बिम्ब गढ़ती है। साकेत में सामाजार्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक संश्लेष है। साकेत खड़ी बोली हिंदी की सर्जना का शिखर है। कोई भी सर्जनातमक कृति अपने समय के प्रचलित भाषा-रूप को जहाँ समृद्ध करती है, वहाँ उसमें कुछ नया जोड़ती भी है। निराला और पंत की काव्य-भाषा द्विवेदी युगीन काव्य-भाषा की अपेक्षा नयी काव्य-भाषा का निर्माण करती है। इस भाषा के निर्माण की पूर्व पीठिका साकेत प्रस्तुत करता है। सकोत की शब्द-योजना स्वयं द्विवेदी युगीन भाषा-संरचना में तोड़-पफोड़ करती है। काव्य की यह स्वाभाविक वास्तविकता है कि वह शब्दों के माध्यम से भाषा में व्यक्त की जानेवाली नई दुनिया है। नई दुनिया की रचना नई भाषा में ही की जा सकती है। परंपरा से अर्जित भाषा का कवि सूक्ष्म अन्वेषण करता हैं वर्तमान के क्रिया-व्यापार से उसकी संगति बैठाता है। इस क्रम में वह नयी भाषा भी गढ़ता है और अर्जित शब्दों को नया अर्थ प्रदान करता है। शब्द वे बीज हैं जो काव्य की नई पुसल के लिए संभावना पैदा करते हैं। गुप्त जी का शब्द-भंडार समृद्ध था। उनमें शब्द गढ़ने और उन्हें नये अर्थ की संगति में ढ़ालने की अकूत क्षमता थी। गुप्त जी ने इस क्षमता का 'साकेत' में भरपूर इस्तेमाल किया है। गुप्त जी के काव्य में जो शब्द माधुर्य है, वह छायावाद की भाषा-संरचना का आधार प्रस्तुत करता है किंतु गुप्त जी का विशेष ध्यान हिंदी की शब्द संपदा में वृद्धि और विस्तार पर रहा है। यह सही है कि गुप्त जी के शब्द आदि की नयी तरंगे नहीं पैदा करते, किंतु हिंदी खड़ी बोली के शब्द-भंडार को विपुल, व्यापक औरसमृद्ध तो बनाते ही हैं। उनके काव्य विन्यास संतुलित और छंद छोटे होते हैं। बड़े छंदों को भी गुप्त जी ने जीवंत बनाया है। उन्होंने मुहावरे से युक्त हिंदी का भी प्रयोग किया है। कहीं-कहीं शब्दों की अद्‌भुत क्रीड़ा भी है। संस्कृत, देशज, तद्‌भव, तत्सम आदि शब्दों के समावेशसे गुप्त जी ने साकेत को हिंदी का विराट शब्दकोष सा बना दिया है। खड़ी बोली के कवियों में उनका वस्तु-वर्णन ही नहीं, भाव वर्णन भी अद्वितीय है। गुप्त जी हिंदी के सचेत, समर्थक और सफल कवियों में मूर्धन्य हैं और उनका 'साकेत' हिंदी का गौर ग्रंथ है।

संपर्कः पथ संख्या-5, इंदिरा नगर, पोस्टल पार्क, पटना-800001

●

भारतीयता की पुकारः "पाप से नपफरत करो पापी से नहीं"

□ *डॉ. जगपाल सिंह*

देश के राष्ट्रपति, उच्चतम न्यायालय तथा चुनाव आयोग की संवैधानिक संस्थाओं तथा निष्ठावान नागरिकों के द्वारा किये जा रहे अथक ईमानदारीपूर्ण प्रयासों के बावजूद अमानवीय, असामाजिक, भ्रष्ट, अपराधिक व व्यभिचारिक आचरण वाले अँग्रेजियत के रंग में रंगे स्वदेशी राजनेताओं की संख्या में दिन दोगुनी रात चौगुनी की दर से वृद्धि हो रही है। इस वृद्धि ने आज भारतीयता को ही भयानक सँकट में डाल दिया है। अँग्रेजियत के रंग में रंगे भ्रष्ट, अपराधिक व व्यभिचारिक स्वदेशी राजनेताओं से मुक्ति पाने तथा भारतीयता की सुरक्षा का रास्ता "पाप से नपफरत करो पापी से नहीं" के भारतीय सामाजिक सिद्धांत में निहित है। पाप से नफरत करने के लिए पाप की पहचान जरूरी है।

पिछले सत्तावन वर्षों में न तो देश तथा प्रदेश से संबंधित शासकीय ढाँचे में कोई संवैधानिक परिवर्तन हुआ हैऋ न ही शासकीय ढाँचे के गठन व संचालन करने के लिए अपनाये गये बहुमत के विधान में कोई परिवर्तन हुआ है न ही प्रतिनिधि को चुनने के लिए अपनाये गये अधिकतम मत के विधान में कोई परिवर्तन हुआ है। परंतु व्यवहार में भारतीय ढाँचे ने इस अवधि में तथाकथित प्रतिनिधि लोक-तंत्र, दल-तंत्र, गठबंधन-तंत्र कबीला-तंत्र के सपफर को पूरा कर लिया है। बहुमत का विधान सांख्यिकी के 'मीडियन' के सिद्धांत पर तथा अधिकतम मत का विधान 'मोड' के सिद्धांत पर आधारित है। सांख्यकी का मीडियन का सिद्धांत चीजों को तोड़ता है। इसके विपरीत सांख्यिकी का मोड का सिद्धांत चीजों को जोड़ता है। इस प्रकार से स्वतंत्रता की प्राप्ति से ही जोड़-तोड़ के विधानों पर आधारित शासकीय ढाँचा देश पर शासन कर रहा है।

बहुमत के विधान ने (1) शासन तंत्र को सत्ता पक्ष व विपक्ष में तोड़ दिया है. (2) दल तंत्र व गठबंधन तंत्र को अपनाने के लिए वैधानिक आधार तैयार कर दिया है (3) दल तंत्र विचार को गौण तथा सदस्य के दल को मुख्य बना दिया हैऋ (4) प्रतिनिधि, मुख्यमंत्री तथा प्रधानमंत्री के चुनाव में संबंधित मतदाताओं के उम्मीदवार के रूप में खड़े होने के लोकतात्रिक अधिकार को ही अव्यवहारिक बना दिया हैऋ (5) निर्वाचन क्षेत्र/मंडल के सभी मतदाताओं का उम्मीदवार के रूप में उपलब्ध न होने के कारण 'मतदाता/मतदान की पूर्ण स्वतंत्रता' को मतदाता की मजबूरी में बदल दिया है तथा (6) अधिकतम मत लोकतांत्रिक सिद्धांत पर आधारित चुनाव पद्धति को पूर्णतः प्रदूषित कर दिया है। प्रदूषण के कारण अधिकतम मत के लोकतात्रिक सिद्धांत पर आधारित चुनाव पद्धति पर से ही भारतीय मतदाताओं का विश्वास उठ गया है।

उपरोक्त के अनुसार शासकीय ढाँचे को गठित व संचालित करने का बहुमत का असामाजिक व अलोकतांत्रिक विधान पाप है तथा इस पर आधारित दल-तंत्र, गठबंधन तंत्र तथा कबीला तंत्र पाप के प्रतीक हैं। भारतीयता की पुकार है कि शासकीय ढाँचे को गठित व संचालित करने के लिए अपनाये गये बहुमत के असामाजिक व अलोकतांत्रिक विधान तथा इस पर आधारित दल-तंत्र, गठबंधन तंत्र तथा कबीला तंत्र को समाप्त करने के लिए हम सब मिलकर प्रयास करें।

संपर्कः 'समीर कुटीर', 642/7, जागृति विहार, मेरठ-250004

SOLUTIONS POINT

SOLUTIONS IN:

Computer Assembling, Maintenance, Laptop Repair, AMC, Networking, Web & Graphics Designing, Software Development

Contact : *Mr. Sudhir Ranjan*

Head Office : U-207, Shakarpur, Vikas Marg, Delhi-92

Tel/Fax : 011-22059410, 22530652 • Website: www.solutionspoint.org

कहानी

'सेनानी'

युगल किशोर प्रसाद

रात्रि के दस बजे होंगे। गाँव में रात्रि के आठ बजते-बजते घरों में बंद हो निद्रा के आगोश में चले जाते हैं। दिया बाती बुझाकर सोते हैं, गाँव के लोग। किरासन की किल्लत के चलते दो एक घंटे दियरी जलाना भी संभव नहीं होता।

चारों ओर गहनांध्कार। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। रात्रि का सन्नाटा पसर चुका था। गर्म हवा भी तन-मन को झुलसाए दे रही थी। जैसे जैसे रात्रि का पहर बीत रहा था निस्तब्ध्ता गहराती जा रही थी। कुत्ते भी नहीं भौंक रहे थे। रात्रि की तरह सबने नीरवता ओढ़ ली थी।

बीच-बीच में उलुकी का स्वर पफूटता। स्वप्न दशा में गुजरती गाँव की सिमटी-सिकुड़ी दुनिया चीत्कार कर उठती। स्वर नहीं फूटते, आहें भर निकल पाती।

छोटी-सी दुनिया। सब कुछ सिमटा सिकुड़ा-सा, छुई मुई की तरह संकुचित जैसे गूलर का कीड़ाव या पुष्प कोरकों में कैद। किंचित विश्राम की मुद्रा में एकाकी भ्रमर जिसे अस्फुट स्वर वायु को आदोलित करने की बजाय श्वास - प्रश्वास की ध्वनि में खो जाया करते।

जहाँ चमन होता है वहाँ भ्रमरावालियाँ मदमस्त मंडराया करती हैं। उनका समवेत स्वर वायुमंडल को आंदोलित स्पंदित कर मधुर संगीत की सृष्टि कर देता है। चारों ओर वासंती छटा। कोकिला की कूक, थिरकता तुराज, मधुक्षत्रों से आती संचित पराग की भीनी भीनी सुगंध। रानी मधुबाला का सौरभ मय संसार बस जाया करता है। भौरों की छोटी-सी दुनिया, मधुमय संसार, मधु ही जिनका आहार है।

मध्ुबाला भटक जाती है। कलिका के कोरकों में कैद भ्रमर पास नहीं पहुँच पाता। सारा खेल बिगड़ जाता है। ताल में खिले कमल दलों को जैसे मदमत्त हाथियों का झुड रौंद डाले। वृक्ष की डाल में लगे छत्तों को हिला-हिला कर बिखेर दे। सर्वत्र श्मसान का दृश्य उतर आता है। क्षत-विक्षत मधु-छत्तों की ढेर लग जाती है। भौरे मंडरा कर लौट जाते हैं।

उसके स्वप्न तो टूट छत्तों की तरह बिखर चुके होते हैं। उसका संसार लुट चुका होता है, मधु के लुटेरे छत्तों को मसल डालते हैं।

ऐसा ही कुछ प्रकाश के गाँव का गोरों ने किया। वह छोटा सा गाँव जो हर तरह से भरा पूरा था। गाँव के चारों ओर वृक्ष की कतारें थी जिसपर पक्षियों के घोसले थे, मधु के छत्ते थे। क्यारियों में गेंदा, गुलाब, चमेली, बेली के फूल खिलते थे और गाँव के पोखर में कमलिनी।

गाँव में अन्य लोगों के अतिरिक्त प्रकाश का छोटा-सापरिवार था। माँ तो पहले ही स्वर्ग सिधर चुकी थी। बूढ़े बाप जीवन के आखिरी दिन बिता रहे थे।

स्वयंप्रभा उस घर में व्याहता होकर एक साल पहले ही आयी थी। उसकी गोद अभी न भरी थी। दंपत्ति को कोई जल्दी भी न थी।

प्रकाश आजादी का दीवाना था। उसने युवकों की टोली बनाई थी। रात-दिन घर-गाँव से बाहर रह वह गाँव-गाँव जा लोगों को, युवक-युवतियों को संगठित करने में लगा रहता।

स्वयंप्रभा रूपवती होने के साथ ही गुणवती भी थी। तरुणी होकर भी उसे जीवन के भोग आकर्षित न कर पाए थे। पति की क्षणिक संगति में वह भी पति की तरह ही स्वतंत्रता की दीवानी बन चुकी थी।

उस दिन जब प्रकाश टोली सहित गोरों की गिरफ्त में आया, वह भी युवतियों की टोली बनाकर निकल पड़ी.....

उसके बाद क्या हुआ, वह उसकी दास्तान है

हाँ, प्रकाश दंपत्ति के शहीद होते ही युवक-युवतियों की टोलियाँ दोनों की लाश लिए उस छोटे से गाँव में लौट आयी थी जहाँ रात्रि का सन्नाटा पसरा था। रात्रि के उस बज रहे होंगे।

2

प्रकाश लौटकर न आया था अपने घर कई दिनों से।

रात्रि.... होती जा रही थी। गनाँध्कार में अंबर से उतरता कुहासा और घना होता जा रहा था। वायुमंडल की उमस बिखरे मन-प्राण छाती जा रही थी।

स्वयंप्रभा को कुछ नहीं चाहिए। न धन, न यश, न रस रंग। उसके प्राणेश्वर दूर रहकर भी सौरभ बिखेरते रहें मात्र उसकी यही चाह थी।

शरीर से अलग रहती हुयी वह सदा प्रकाश के साथ थी। अपने प्रकाश के साथ, जो केवल उसका नहीं, अपितु पूरे गाँव, इलाके का का प्रकाश बन चुका था।

पर आज वह उद्विग्न हो उठी थी। उसका उर-अंतर आज विशेष आंदोलित था। शायद आज कुछ विशेष घटित होनेवाला था।

उसकी उद्विग्नता अकारण नहीं थी। सेनानियों की पकड़-धकड़ जारी थी। देश की आजादी के लिए लड़ता हुआ युवक सेनानी होता है। देशवासियों के दिल में ऐसे किसी युवक के प्रति आदर व श्रद्धा का भाव होता है। शासक की चौकसी के घेरे को लाँघकर निकल भागते ऐसे किसी युवक को लोग तत्काल अपने घर में शरण देते हैं। कोई

सिपाही टोह लेता अगर पहुँच भी पाया तो लोग इधर किसी के भागकर आने से साफ इंकार कर देते हैं।

'इधर कोई नहीं आया......' दबी जुबान से वे गोरे सिपाहियों को बतलाते हैं। 'भागते युवक को धरती लील गयी या कोई गृद्ध उसे आकाश में उड़ा ले गया... इधर ही तो भागता आया था....'

गोरे सिपाही की पूछताछ बेकार ही बकवास साबित होती है। गाँव घर वाले सफेद झूठ बोलकर अपना पिंड छुड़ा लेते हैं।

1947 की अगस्त क्रांति में भारत के सपूतों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। प्रकाश अपनी टोली का अगुआ था।

उसकी पत्नी स्वयंप्रभा अपने नाम के अनुरूप गुणवाली थी। प्रकाश पर उसे गर्व था। उम्र से वह तरुणी थी। उसके खेलने-खाने के दिन थे। किंतु देश की आजादी के लिए सबकुछ बर्दाश्त करने को तैयार थी।

'तुम मेरी उर्मिला हो', प्रकाश जब कभी-कभार घर आता तो उसकी लटें सहलाता हुआ कहता।

'मैं उर्मिला होऊँ, न होऊँ, तुम मेरे लक्ष्मण जरूर हो...' स्वयंप्रभा का स्वर फूटता।

'यह तो सही मिलान नहीं हुआ....'

'वह कैसे? फिर मैं उर्मिला कैसे हो सकती हूँ....'

'लक्ष्मण राम की, अग्रज की सेवा के लिए जंगल गये थे, उर्मिला को उफनती जवानी में छोड़कर.... और वह भी दो-चार दिनों के लिए नहीं, पूरे चौदह वर्षों के लिए... मैं तो भाई में अकेला हूँ...'

'उहूँ, मैं तो उर्मिला की तरह नहीं हूँ. .. आप दो-चार दिन के बाद घर जरूर लौट आते हैं...'

'वह भी कोई आना हुआ? चोरों की तरह रात की अंधियाली में छिपकर आना और रात्रि के तीसरे पहर में घर से निकल कर गुम हो जाना...'

'अंधकार प्रकाश का भला क्या बिगाड़ सकती है? आप का नाम... फिर देश-सेवा भ्रातृ-सेवा से बढ़कर है...'

'तुम्हारा नाम भी तो स्वयं प्रभा है... तुम्हें अन्य प्रकाश की जरूरत ही कहाँ है? 'ऐसा कहकर आप अपना पिंड नहीं छुड़ा सकते... मैं भी जीते जी छोड़नेवाली नहीं... मरने के बाद की बात मैं नहीं जानती...'

'न प्रकाश मरता है न स्वयंप्रभा... सूर्य कभी मलीन हुआ है?'

'सूर्य तो प्रकाश पुंज है, चाँद को प्रभा सूर्य से मिलती है...'

'चाँद को सूर्य से प्रभा मिलती है, किंतु स्वयंप्रभा को किसी अन्य से प्रभा की जरूरत नहीं...'

'मैं चाँद ही बनी रहना चाहती हूँ, जिसे बराबर सूर्य का प्रकाश...' प्रकाश बीच में ही टोकता, 'तुम कैसी बातें करती हो? हम दोनों आज न कल आजाद भारत में साथ-साथ घूमेंगे... अपनी सरकार होगी... हमें बहुत कुछ करने की छूट होगी... सरकार की गलत नीतियों की खुलकर आलोचना करेंगे...' प्रकाश कहता।

'मैं भी उसी दिन की प्रतीक्षा कर रही हूँ... मैं ऐसी कमलिनी हूँ जो प्रेमी भौंरे को संपुटों में बंद कर कैद करना नहीं जानती। मेरा भ्रमर खुली हवा में, खुले आकाश में विचरण करने को पूरा आजाद है...', स्वयंप्रभा कहती।

'तुम्हारा भ्रमर यत्र-तत्र भटकता हुआ भी कमलिनी की याद दिल में संजोए रहता है. ..' और इतना कुछ बतियाते, कहते-सुनते रात्रि का तीसरा प्रहर आ जाता है प्रकाश स्वयंप्रभा के कपोल चूम घर से बाहर निकल घुप्प अंधेरे में खो जाता।

यह अक्सर की क्रिया थी। स्वयंप्रभा भी निश्चिंत रहती थी। किंतु कई दिनों से प्रकाश का इधर आना न हुआ था। अनेक विद्रोही गोरों की पकड़ में आ चुके थे। उन्हें जेल की काल-कोठरी में बंदकर कठोरतम यातनाएँ दी जा रही थीं।

गोरों के मुखबिर टोह लेने के लिए इधर-उधर घूमते रहते। ये वेसे ही लोग थे जिन्हें आजादी से ज्यादा चाँदी के सिक्के प्यारे थे। ये गाँव-घर के ही लोग थे। मुखबिरी को उन्होंने पेशा बना लिया था। उनकी रोजी रोटी चल रही थी या घर भर रहा था।

स्वयंप्रभा को ऐसे लोगों से सख्त नफरत थी। 'ये तो जयचंद हैं...देश-द्रोही हैं...' उन पर नजर वह अवश्य रखती थी।

प्रकाश और उसमें अंतर मात्र इतना ही था कि प्रकाश बाहर भाग-दौड़कर युवकों को संगठित करता था, लूट के कारनामों को अंजाम देता था, और वह चहरदिवारी के अंदर सक्रिय रहती थी। कई बार प्रकाश के साथी उसके घर में आकर छिपे थे। वे युवक भी यहाँ आकर दुगुने उत्साह से भर उठते थे।

'आप झाँसी की लक्ष्मीबाई की तरह इस गाँव की लक्ष्मीबाई हैं...' रात में छुपने के लिए आया कोई युवक कहता।

'आप भी उनके जैसी ही बातें करते हैं... आखिर हैं तो उनके ही पथगामी न... नहीं भाभी, मैं गलत नहीं कहता, प्रकाश भैया के अन्य साथी भी ऐसा ही कहते हैं...'

'यह आपकी सदाशयता है, देवर जी। मैं तो घर-गृहस्थी में उलझी एक साधारण नारी हूँ... एक दिन के लिए भी बाहर नहीं निकल सकती...'

'आपको अभी निकलने की जरूरत ही क्या है, भाभी। हम युवक ही काफी हैं... और बापू की देखभाल भी आपको ही करनी है... बेटा और बेटी की दुहरी भूमिका' और स्वयंप्रभा निरूत्तर हो जाती थी। रात्रि का तीसरा प्रहर गुजरने का होता था और वह युवक भी प्रकाश की नाईं रफूचक्कर हो जाता था।

स्वयंप्रभा इन्हीं स्मृतियों में खोयी दिन-रात गुजार लिया करती थी। बापू के प्रति अपने कर्त्तव्य में वह पूर्ण सचेष्ट रहती थी। समय पर दातौन कुल्ला करवाने से लेकर स्नान करवा कर भोजन करा देने के पश्चात् विश्राम

के लिए बिस्तर लगा कर ही वह निश्चिंत हो पाती थी। बापू भी इसीलिए प्रकाश की चिंता नहीं करते थे। स्वयंप्रभा हमेशे बेटे की भूमिका में होती थी।

आज भी उसकी उद्विग्नता का मात्र एक ही कारण था। उसे अपने पति के गोरों द्वारा पकड़ लिए जाने की चिंता नहीं थीं इधर कुछ दिनों से प्रकाश की खबर भी उसे नहीं मिल पायी थी। इधर कोई दूसरा युवक भी शरण लेने उनके घर नहीं पहुँचा था।

3

स्वयंप्रभा आज सबेरे जब चूल्हा चौकी से निबट बापू को स्नान करा खिला-पिला कर उन्हें बिस्तर पर लिटा अपना नहाने-धोने की सोच ही रही थी कि अचानक एक अपरिचित सा युवक बेतहाशा भागता हुआ दरवाजे तक आया। वह पहले कभी इधर न आया था।

देहरी पर ही ठिठक गया और भर्राई आवाज में बोला, 'प्रकाश भैया पकड़ लिए गये हैं, अन्य कई साथियों के साथ।

'तुम इस कदर घबराए हुए क्यों हो? सेनानी के लिए यह कोई नई बात नहीं।

'जैसा मैंने सुन रखा था, उससे कुछ अकि ही पा रहा हूँ, भाभी...'

'मैं जानती हूँ कि तुम सब उनके ही चट्टे-बट्टे हो... जो कोई आता है, ऐसा ही कहता है...'

'प्रकाश को कोई अंधकार कैसे कह सकता है, भाभी?'

'खैर, जाने भी दो, अंदर आ जाओ.. . हाथ मुँह धोकर कुछ खा पी लो...'

'नहीं भाभी, यह सब करने का बिल्कुल मौका नहीं है...'

फिर, तुम्हारे इस तरह घबराने का कारण?'

'कारण है भाभी! आज कुछ विशेष बात होनेवाली है... आज प्रकाश भैया की टोली की सीखचों में बंद करने की गोरों की योजना है...'

'फिर...,' स्वयंप्रभा ने पूछा।

'अन्य टोलियों ने भी एक योजना बनायी है... युवकों की टोलियाँ जेल ले जाते हुए प्रकाश भैया की टोली को छुड़ाने के लिए जी-जान लगा देगी... सबके हाथों में तिरंगा झंडा होगा... जेल के कंगूरे पर तिरंगा फहरा कर अन्य कैदियों को भी छुड़ा लेने की योजना है...'

'यह तो बड़ी मुश्किल काकाम है... क्या भैया ने ऐसा कुछ कहा?'

'नहीं, प्रकाश भैया ने ऐसा कुछ नहीं कहा...उनकी कमर में रस्सा बंधा है हाथ-पैर अब भी मुक्त हैं...'

'ठीक है, मैं भी कुछ सोचती हूँ...'

'नहीं भाभी, आप घर के अंदर रहें। आप गोरों की नृशंसता नहीं जानतीं। अगर उन्हें पता लग गया कि आप भैया कि...'

'आप जाओ, देवर जी! मेरी ओर से निश्चिंत रहो... पुरुषों का समाज नारियों को अबला और कामलांगी भर मानता रहा है..'

'नहीं भाभी, आपका दिल तो फौलाद की तरह कठोर है। सभी साथी ऐसा ही कहते हैं...'

'मैंने आजतक कुछ ऐसा नहीं किया. .. एक सेनानी की भार्या भर...'

युवक के पास समय नहीं था। वह स्वयंप्रभा को घर के अंदर रहने की ताकीद कर जिधर से आया था, उधर ही तेजी से भागता हुआ चला गया। जब तक वह आँखों से ओझल नहीं हुआ तबतक स्वयंप्रभा उधर ही दृष्टि भगाए रही।

'लक्ष्मण भी सीता मईया को धनुष की नोंक से बनायी रेखा को न लाँघने की ताकीद कर आवाज की दिशा का अनुसरण करते दूर निकल गये थे... उसका लक्ष्मण तो अधर कई दिनों से आया ही नहीं... ताकीद क्या करता?'

'चित्तौड़ की कर्णावती ने जौहर दिखलाया था। वह अन्य रमणी रत्नों के साथ आक्रमणकारियों द्वारा शील भंग के भयवश चिता में जल मरी थी... वह ऐसा कुछ नहीं करेगी... उसके जीवन धन पकड़ लिए गये तो इस गाँव की भी खैर नहीं...'

वह बापू को विश्राम करता छोड़ दरवाजे को भिड़का गाँव की गली में निकल गयी। उसकी योजना घर-घर जाकर बहनों को गोलबंद करने की थी।

जिस घर में वह घुसी, उस घर की तरुणियाँ एक-एक कर घर से बाहर निकल आयी। थोड़ी ही देर में प्रायः हर घर की तरुणियाँ देवी चौरे के पास पीपल के पेड़ के नीचे एकत्रित हो गयी।

स्वयंप्रभा ने संक्षेप में पूरी बात का खुलासा किया...

'बहनों, आप जानती हैं... हमारे वो वर्षों से देश की आजादी के लिए...'

'हम सब कुछ जानती हैं, दीदी... जल्दी हमें आदेश करें.... प्रकाश भैया हमारे गाँव के प्रकाश हैं... हमें उन पर गर्व है...'

'एम ऐसा नहीं होने देंगी...'

'एक युवक बता गया है... युवकों की कई टोलियाँ गिरफ्तार टोली को छुड़ाने का प्रयास करेगी... आगे की भी उनकी योजना है. .. कारागार के परकोटे पर तिरंगा गाड़ अन्य कैदियों को...'

'वैसा ही होगा, दीदी... हम सभी अलग-अलग टोलियाँ बना, हाथ में तिरंगा ले 'बंदे मातरम्' का गान करती युवकों को टोली से...'

सबकुछ आनन फानन में हो गया। स्वयंप्रभा को लगा, यह गाँव सोया हुआ नहीं, सतत जाग्रत है... घर-घर की तरुणियाँ पूरी जागरूक...

4

तरुणियों की टोलियाँ तैयार होकर कारागार के रास्ते पर बढ़ने की सोच ही रही थी कि दूर से ही 'भारत माता जी जय, बंदे मातरम, महात्मा गाँधी की जय, प्रकाश भैया की जय का गगनभेदी नारा उनके कर्णकुटरों से टकराया।

'वंदे मातरम, भारत माता की जय, प्रकाश गाँव का लाल है, धरती का सपूत है, का नारा लगाती तरुणियों की टोलियाँ चल

पड़ीं।

अब वहाँ रुके रहने का कोई कारण न था।

गगनभेदी नारों का स्वर इतना तेज हुआ कि बूढ़े-बूढ़ियाँ, छोटे-छोटे बच्चे भी घर से निकल पड़े। अपनी बहू-बेटियों, बहनों को तिरंगा लिए जयघोष करते देख सभी टोलियों में शामिल हो गये। देखते ही देखते वानरी सेना तैयार हो गयी। सबों का लंका विजय का उत्साह था।

'स्वयंप्रभा ने रुककर सोचा, 'बूढ़े बूढ़ियों, बच्चों का जुलूस में जाना ठीक नहीं। वह गोरों की बर्बरता से वाकिफ थी।

उसे बूढ़े-बूढ़ियों को समझाया। वे मान गये। अब बच्चों को समझाने की बारी थी। यह काम जरा मुश्किल था।

'हमें क्यों रोकती हो, चाची... हम भी तिरंगा फहराएँगे...

'जरूर-जरूर... मैं तुम सबों को तिरंगा देती हूँ। बोलो, महात्मा गाँधी की जय'...

'भारत माता की जय', स्वयंप्रभा ने नारा उछाला।

'स्वयंप्रभा चाची की जय', बच्चे बोल उठे।

'मेरा नारा क्यों नहीं दुहराते, बच्चों?'

'प्रकाश भैया महात्मा गाँधी से कम नहीं, एक बच्चे ने तपाक से कहा।

और स्वयंप्रभा चाची भारत माता से कम नहीं, एक सयाना सा बच्चा बोला।

'तुम्हारे प्रकाश चाचा, महात्मा गाँधी और तुम्हारी चाची, भारतमाता! यह कैसे हो सकता है? स्वयंप्रभा ने समझाया...

'यह जरूर हो सकता है, चाची! भारत माता की माँ, चाची भी माँ... और चाचा तो गाँधी जी की तरह ही देश की आजादी के लिए...'

'तुम्हे यह सब किसने बतलाया?'

'पाठशाला में गुरु जी तो तुम्हें अपने से बड़ो की आज्ञा मानने की बात भी सिखाते होंगे?'

'हाँ, दीदी। गुरू जी बड़े अच्छे हैं...

'सबसे अच्छे तुम लोग हो... तब तो मेरी बात अवश्य मानोगे?'

'अवश्य चाची जी... हम आपकी बात जरूर... बच्चों का समवेत स्वर गूँजा।

'तो आज तुम लोग अपने-अपने दादा-दादी के साथ घर लौट जाओ... कल तुम लोग भी हमारे साथ...'

'आप कहती हैं तो हम लौट चलते हैं'

और बच्चे एक-एक कर अपने दादा-दादी के साथ हो लिए।

स्वयंप्रभा ने राहत की साँस ली।

तबतक युवकों की टोलियाँ जयघोष करती धीरे-धीरे आगे बढ़ आयी थी। सबसे आगे प्रकाश भैया की टोली, किंतु सबकी कमर में रस्सा लगा हुआ। अगल बगल और पीछे से गोरों की छोटी टुकड़ी चल रही थी.

कुछ ही पीछे युवकों की टोलियाँ जयघोष करती धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। गोरों को उनकी योजना का पता न था। ऐसे मौकों पर जयघोष करती दर्शकों की टोलियाँ भी कुछ दूर साथ चल लौट जाती है।

जब युवकों की टोलियाँ निरंतर आगे बढ़ती हुयी दिखायी पड़ी तो टुकड़ी के कमांडर को थोड़ी शंका हुयी।

तबतक कारागार भी निकट आ चुका था। इधर से तरुणियों की टोलियाँ भी हाथों में तिरंगा लहराती युवकों की टोलियों में जा मिली।

तब कहीं टुकड़ी के कमांडर का माथा ठनका।

किंतु, अब क्या हो सकता था? अबतक तो बहुत देर हो चुकी थी। पूरी टुकड़ी युवकों से घिर चुकी थी।

'महात्मा गाँधी की जय', 'भारत माता की जय', बंदे मातरम के गगनभेदी नारों से पूरी टुकड़ी बौखला गयी।

युवकों ने प्रकाश की टोली को अपने घेरे में ले लिया। जल्दी-जल्दी कमर में बंधी रस्सी से उन्हें मुक्त किया। रस्सी का दूसरा छोर पकड़े गोरे सिपाही हैरत में पड़ गये।

देखते क्या हो? उपर चढ़कर तिरंगा लहरा दो... दरवाजा तोड़ दो... कैदी हमारे भाई हैं, उन्हें मुक्त करो...

कमांडर तो तत्क्षण हक्का-बक्का रह गया।

प्रकाश हाथ में तिरंगा लिए फाटक के बुर्ज पर चढ़ तिरंगा गाड़ चुका था... उसकी पत्नी स्वयंप्रभा भी तिरंगा ले उपर चढ़ चुकी थी.

..

तब कहीं टुकड़ी के कमांडर की तंद्रा भंग हुयी।

फायर। कमांडर कड़क उठा।

धाँय...धाँय... पहली गोली प्रकाश की छाती में लगी और दूसरी स्वयंप्रभा के वक्ष में।

दोनों सेनानी एक साथ शहीद हुए। किंतु गिरते हुए भी दोनों के मुख से निकला, वंदे मातरम। भारत माता की जय का नारा पूरी करने के पहले ही प्रकाश युवकों की बाहों में आ गिरा और स्वयंप्रभा तरुणियों की बाहों में।

प्रकाश भैया अमर रहें, युवकों का स्वर गूँजा।

स्वयंप्रभा दीदी अमर हैं, तरुणियों की टोली से स्वर लहराया।

वहाँ की धरती लाल हो उठी थी। खूब का फब्बारा बह रहा था। युवकों ने प्रकाश भैया की छाती से निकलते खून का टीका माथे पर लगाया और तरुणियों ने स्वयंप्रभा के वक्ष से बहते खून का टीका अपने-अपने ललाट पर लगाया। तरुण-तरुणियों ने आखिरी सांस तक आजादी के लिए लड़ने का संकल्प लिया। भीड़ उत्तेजित न हो जाय, इसलिए कमांडर ने छेड़छाड़ करना उचित न समझा। वे तमाशबीन की तरह चुपचार खड़े रहे।

युवकों की टोली सेनानी प्रकाश की और तरुणियों की टोली स्वयंप्रभा की लाश लिए गाँव लौट आए। उस समय रात्रि के दस बजे होंगे।

संपर्कः बिहारी पथ, विग्रहपुर, पटना-1

●

'राष्ट्र को अर्पित है जवानी तुम्हारी'

□ राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

ओ, सीमा के प्रहरी
मेरे देश के महान सपूतों,
जब सोए हुए हम देखें सपने
सुहाने
तुम तब भी अपना फर्ज
निभाते रहते
तेज चले हवाएँ या हों
दिन बर्फीले
या झुलसाती हो सूरज की तपती
किरणें
तुम यूँ ही चौकन्ने देते पहरा
मानो योगी कोई घूमे सूनी
डगर पर
पर्वतों पर चढ़ना हो या घाटियाँ हो
लाँघनी
करनी हो रक्षा मरुस्थल की या
कुच्छ की निगरानी,
सागर की या रक्षा आकाश की
राष्ट्र को है अर्पित
सारी जवानी तुम्हारी
तुम्हारी वीरता का संदेश
देती हवाएँ
बहादुरों, करें हम प्रार्थना
तुम्हारे वास्ते
ईश्वर की तुम पर रहे
सदा कृपा।

संपर्क: राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली

●

7 जनवरी को कवि के अमृत महोत्सव पर

'मेरे देश'

□ मधुर शास्त्री

मेरे देश उदास न होना।
माना तेरे ही बेटों ने
उज्ज्वल मुख पर कालिख मल दी
पूरब की सघन आधुनिकता
पश्चिम की राहों पर चल दी
जब आता है नया सबेरा,
सारी कालिख धुल जाती है
मिट जाता है घोर अँधेरा
बहती हुई रश्मिधारा में
मल मल कर अपना मुख धोना। मेरे देश!
अचरज है मानव ही अपनी
सूरत को पहचान न पाता,
और असत्यों के लालच में
क्या सच है यह जान न पाता,
यही समय की वक्र दृष्टि है,
बहुत कठिन ओझल हो पाना,
पर, असत्य तो मृत्य सृष्टि है,
काजल आँज सत्य का दृग में,
यों असहाय समझ मत रोना। मेरे देश!
यही संक्रमण की बेला है,
इसमें सावधान रहना है
आज दिग्भ्रमित इस पीढ़ी को
मन का दर्द अभी सहना है,
अंधियारे का यही विकल क्षण
ज्योतिर्मय इतिहास रचेगा
जाग उठेगा सोया कण-कण,
अब धरती करवट बदलेगी,
तू अपना धीरज मत खोना मेरे देश!

संपर्क: ए-484ए, विवेक मार्ग, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-92

●

भारत का सपूत

□ मंजुला गुप्ता

अमर रहेगा वह पिता महान
वृद्ध वैशाखी जिसने त्याग दिया
झुलाया था जिसको बाहों में
हँस-हँस बाहें काट दिया
सपने देखे अनगिनत जिसने
देश हित जिसने चूर दिया
प्रतिरूप बना वह पिता का कैसा
शीश गर्व से उठा दिया

कतरा-कतरा लहू से अपने
निर्मित पौध किया था जिसने
पल-पल अमृत की बूँदों से
जिसको सीचा था उसने
बलिहारी जाती थी वह
निस-दिन उसके बढ़ने से
देश की रक्षा के हित अपनी
कर दिया कोख, सूनी जिसने

हा! हा! देखो तनिक उस ओर
छाती, किसकी है तड़प रही
सिंदूर बन गया अब अंगार
है कौन मेघ सी बरस रही
अधरों पर छाया अचल मौन
उर में ज्वाला है धधक रही
बच्चों के बाहों में भींचे
है कौन शून्य में ताक रही

तिरंगे में लिपटी वह देह?
आयी है किसके आज गेह?
उमड़ पड़ा है गाँव-गाँव
भर नयनों में अश्रु नेह
पाने को उसकी एक झलक
है इतना गर्वित कौन विदेह!

वह है माँ का वीर सपूत
वह है भारत माँ की लाज
जिसके अंतिम नमन हेतु
झुके सब भाल तिरंगे आज!

संपर्क: 9, बी.एस. रोड, बाईस गोदाम सर्किल, जयपुर

●

एक कर दो

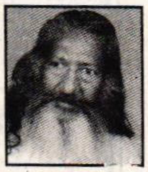

☐ डॉ. सहदेव सिंह 'पाचर'

अहले भोर, दरवाजे पर शोर
उठो! जागो! हम खुश हैं, वर माँगो!
हड़बड़ाकर जैसे ही खोला
दरवाजे पर आधुनिक देवताओं का हुजूम
एक विचित्र मेला
औचक-भौचक उनके बीच में अकेला
इससे पहले कि मुँह खोलें
वे बोले-बोले!
मुँह खोलो, क्या चाहिए?
राशन की दुकान
राजधनी में भव्य मकान
स्कूल-कॉलेजों में दाखिला
अध्यक्ष पद!
ग्राम पंचायत
प्रखंड या कोई जिला
परमिट या कोटा
सोने का कमंडल
चाँदी का सोंटा
दूध पीने का जर्सी
मन बहलाने को उर्वशी
या कोई कमाऊ कुर्सी
तथागत कुछ तो बोलो, आँख खोलो!
इस घर में हम तीन
काट रहे दिन
यशोधरा, राहुल और हम
एक के हाथ में ज्ञान-विज्ञान
दूसरे के हाथ में आध्यात्मिक शक्ति
तीसरे के हाथ में एटम बम
जहाँ कहीं भी आयुध होगा
निश्चित है युद्ध होगा
हम तीनों तीन कोने में
एक दूसरे को ढोने में
एक युग गुजर गया
एक होने में
यह सब किसी अंगुलिमाल को दे देना
अपने गले में लाखों वोट पहन रखा है
जितना लेना है, ले लेना
अगर कुछ देना है
तो हम तीनों को एक कर देना।

संपर्क: भभुआ, बिहार

सच सच बतलाना भाई

☐ चंद्रसेन 'विराट'

तुम दिल्ली से लौट रहे हो सच सच बतलाना भाई
आम आदमी के मुख पर क्या थोड़ी भी रौनक आयी?

दिल्ली क्या है सच पूछो तो दिल दिमाग है देश का
वह सजीव साकार रूप है जनता के आदेश का
दिल्ली तो है नब्ज देश की हाथ रखा इस ख्याल से
देश स्वस्थ अस्वस्थ? पता चल जाता उसकी चाल से
जनता दिखे अनाथ किंतु वास्तव में वह ही नाथ है
दिल्ली की किल्ली तो आखिर हम जनता के हाथ है
दिल्ली प्रतिनिधि है स्वदेश की तभी प्राथमिकता पायी
आम आदमी के मुख पर क्या थोड़ी भी रौनक आयी?

प्रांत प्रांत से दिल्ली में खिंचकर आया है आदमी
रोटी-रोजी की तलाश में भरमाया है आदमी
काम मिला क्या कोई या फिर बेकारी तड़पा रही?
बोलो दोनों वक्तों की रोटी उसको मिल पा रही?
सिर्फ पेट भी भरना हो तो भर लेता है श्वान भी
उससे कैसे तोला जा सकता है पर इंसान भी
हालत सुधरी है या पहले जैसी ही है दुखदायी?
आम आदमी के मुख पर क्या थोड़ी भी रौनक आयी?

बोलो उसके सिर पर क्या खुद के छप्पर की छाँव है?
या फिर खड़ा भींगता है बारिश में अभी अभाव है?
तन ढकने को कपड़ा है क्या? धोये और निचोड़ ले?
क्या बिस्तर अखबार अभी भी? ठंड लगे नम ओढ़ ले?
लाज ढकी है पत्नी की? बच्चों के मुँह में कौर है?
या कि अभी भी वह अभावों वाले दुख का दौर है?
सत्तावन सालों में भी उसकी हो पायी क्या सुनवायी?
आम आदमी के मुख पर क्या थोड़ी भी रौनक आयी?

सच पूछा तो सच कहता हूँ साथ अगर अफसोस के
ज्ञात कि तुम भी रह जाओगे अपना हृदय मसोस के
दशकों पहले वाला जैसा हाल वही बेहाल है
दरिद्रता से लड़ते लड़ते टूटा और निढाल है
घूरे की किस्मत भी फिर जाती है इतने साल में
अब तक फर्क न आया लेकिन आमजनों के हाल में
रहा गरीबी की रेखा के नीचे लेता जमुहाई
आम आदमी के मुख पर क्या थोड़ी भी रौनक आयी?

भरे पेट ले रहे डकारें, भूखे तो भूखे रहे
इनके घर नल टपक रहे, उनके मटके सूखे रहे
जो अमीर थे वे अमीर से होते गये कुबेर हैं
जो गरीब थे वे गरीब हैं, अब कचरे के ढेर हैं

मुश्किल में है बहुत जिंदगी बिल्कुल जर्जर हो गई
आम आदमी की हालत बद से भी बदतर हो गई
आजादी तो दूर, न देखी आजादी की परछाँई
आम आदमी के मुख पर क्या थोड़ी भी रौनक आयी?

खास जनों के लिए खास दरवाजें सभी बुलंद हैं
आमजनों के लिए अभी भी कई रास्ते बंद हैं
तंग बस्तियों वाली दिल्ली का दिल भी क्या तंग है
खास मुखों पर नूर, आमजन का चेहरा बदरंग है
खूब कसीदे पढ़े जा रहे खास जनों की शान में

आम आदमी जाता है तो जाये भले मसान में
उसके दोनों ओर कुएँ हैं, आगे पीछे है खाई
आम आदमी के मुँह पर क्या थोड़ी भी रौनक आयी?

दिनकर ने भी दिल्ली के रेशम में देखा टाट था
नीचे नीचे बदहाली थी उफपर उपर ठाठ था
एक तरपफ की दिल्ली देखो लगे स्वर्ग की नाक है
किंतु दूसरी तरफ निहारो बिलकुल कुँभी पाक है
एक तरपफ अधुनातक दिल्ली की पेरिस से होड़ है
झुग्गी झोपड़ियों की बस्ती उसके तन पर कोढ़ है
गाली देने का मन है, जब गायी तब महिमा गायी
आम आदमी के मुख पर क्या थोड़ी भी रौनक आयी?

संपर्कः 'समय', 121, वैकुंठधाम कॉलोनी, ओल्ड पलसिया, खजराना कोठी, आनंद बाजार के पीछे, इंदौर-452018 (मप्र)

विचार दृष्टि

समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन (केन्द्रीय कानून 1956 नियम 8) के अनुसार विचार दृष्टि के संबंधित विवरण

प्रपत्र-4

1.	प्रकाशक का नाम	:	सिद्धेश्वर
2.	प्रकाशन का स्थान	:	दिल्ली
3.	प्रकाशन अवधि	:	त्रैमासिक
4.	मुद्रक का नाम	:	सिद्धेश्वर
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	'दृष्टि'- यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-110092
5.	प्रकाशक का नाम	:	सिद्धेश्वार
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	'दृष्टि'- यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-110092
6.	संपादक का नाम	:	सिद्धेश्वर
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1
7.	मालिक का नाम व पता	:	सिद्धेश्वर, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

मैं सिद्धेश्वर यह प्रमाणितं करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है

तिथि : 1 जनवरी, 2005

ह.
(सिद्धेश्वर)
प्रकाशक

छपते-छपते

प्रकृति का तांडव सुनामी लहरों ने हजारों हजार को लीला तटीय क्षेत्रों में हाहाकार, लाखों बेघर

भारत श्रीलंका, इंडोनेशिया तथा दक्षिण एशिया के कई देशों के तटीय तल पर आए भीषण भूकंप से उठी सुनामी लहरों ने 26 दिसम्बर, 2004 को प्रलय ला दी, जिसने पूरे विश्व को हिला दिया इस प्राकृतिक आपदा से कई हजार लोगों की जानें गईं और लाखों लोग बेघर हो गए।

'सुनामी' जापानी भाषा का शब्द है जिसका तात्पर्य बहुत लंबी, कम कंपन वाली समुंद्री लहरों से है। सुनामी लहरें दरअसल तटीय इलाकों में भूकंप, ज्वालामुखी या फिर समुद्र के भीतर चट्टानों के खिसकने जैसी भूगर्भीय गड़बड़ियों के कारण पैदा होती हैं। पृक्रति के इस तांडव से दक्षिण भारत के तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, पांडिचेरी, केरल तथा अंडमान निकोबार में भारी तबाही हुई इस तबाही में सेना के जवान युद्ध स्तर पर राहत का काम कर रहे हैं। भारत सहित कई देशों में शोक की लहर।

विचार कार्यालय, चेन्नई, हैदराबाद और त्रिवेन्द्रम से।

घुन लगी पतवार में

☐ डॉ. देवेंद्र आर्य

इस निमंत्रण को अभी स्वीकार करके क्या करूँगा,
बहुत से दुख आज भी सुख की प्रतीक्षा में खड़े हैं।

बो दिया बारूद इतना
आज आतंकी समय ने
खो गई पहचान अपनी
स्वयं अपने ही शहर में
राम मंदिर में नहीं
अल्लाह मस्जिद में नहीं है
हर तरफ नफरत खड़ी है
प्रेम के उजले प्रहर में।

इस पराए शब्द का नव अर्थ देकर क्या करूँगा
बहुत से हिंसक इरादे तानकर सीना अड़े हैं।
मैं चला था तो सभी अपने पराए साथ में थे
एक था विश्वास सबका
एक मन के सिलसिले थे।
फिर कहाँ यह आस टूटी
फिर कहाँ विश्वास रूठा
ढह गए मन के घरौंदे स्वप्न
जो मिल कर चले थे।
मूक बहरे इस शहर में चीख कर भी क्या करूँगा
बहुत से विषधर लिए कुछ लोग आँगन तक पड़े हैं।
आज तक तूफान चारों ओर से
उठने लगा है
घुन लगी पतवार से
कब तक किनारों से पुकारूँ?
न्याय की मीनार
झुकने सी लगी है नींव से ही
मैं कहाँ तक आरती
मन भाव की मन से उतारूँ?
आँधियों से दीप को यूं ही बचा कर क्या करूँगा
सत्य के अनुबंध पर सौ झूठ के ताले जड़े हैं।
ये सभी दुख सालते हैं
क्या करूँ, किससे कहूँ मैं
भोर की उजली किरण भी
आज मैली हो गई है
मंच पर नंगी हुई है
द्रौपदी सी अस्मिता फिर,
रपाजमद में आदमी की अक्ल
अँधी हो गई है।
तुम कहो, इस पंथ में सुख-छाँव लेकर क्या करूँगा
बहुत से दुर्भाग्य जलती रेत में सर तक गड़े हैं।

संपर्कः वाणी सदन, बी-98, सूर्यनगर, गाजियाबाद

सौहार्द और इर्ष्या

☐ राम गोपाल 'राही'

सौहार्द के अँकुर अक्सर,
क्यों नहीं विकसित होते?।
सोचें मानव तो फिर क्यों,
बीज ईर्ष्या बोते?।।

ईर्ष्या, हिंसा तांडव को
देती सदा निमंत्रण।
बेकाबू व्यवस्था निर्बल
होता नहीं नियंत्रण।।

बात बन जाती हथियार ईर्ष्या
क्रूर दमन होता है।
सत्य, नीति, सदाचार का
हनन् तभी होता है।।

ईर्ष्या की आम न बुझती,
दमकल व अटकल से।
अह्म से बढ़ती, बह्म से बढ़ती,
स्पर्धा छल बल से।।

यह बुझती सौहार्द से हरदम,
शांति, धैर्य, धीरज से।
धैर्य के सद्भाव हृदय में
हो नीर मीरज से।।

घृणा का नजदीकी रिश्ता
है ईर्ष्या नाता।
निंदा, अनहोनी-कटुता का,
विस्तार हो बढ़ता जाता।।

राजनीति में बुरी ईर्ष्या,
लगे अलग न होती।
सौहार्द मानव धर्म की,
फीकी पड़ती ज्योति।।

राजनीति में फलित ईर्ष्या,
जब जनता में आती।
मन मलीन, सौहार्द न होता
गुटबाजी हो जाती।।

सौहार्द अम्बर सा फैले,
ऐसा रोज जरूरी।
नष्ट ईर्ष्या हो जगत में
ऐसी खोज जरूरी।।

अन्वेषण विज्ञान मानवी,
हो अज्ञान हटा दे।
घृणा, ईर्ष्या व द्वेष का
उर से नाम मिटा दे।।

शान, मान, अभिमान पैतृक,
बदले, भाव जगाते।
आदिकाल से सृष्टि क्रम से,
चले नहीं रूक पाते।।

घृणा, ईर्ष्या व द्वेष ने,
महाभारत करवाया।
नष्ट शौर्य, प्रज्ञा ज्ञान भी,
कोई रोक ना पाया।।

मिटे ईष्या दृष्टि भ्रम सब,
संसार बदलना होगा।
घृणा ईर्ष्या, जड़ से निकले,
हृदय बदलना होगा।

ऐसा अविष्कार जगत में
कर दिखलाना होगा।
सौहार्द की गंगा घट घट,
हमें बहाना होगा।

संपर्कः
गणेशपुरा लाखेरी
जिला-बूँदी-323615
राजस्थान

ऐ मेरे प्यारे वतन

□ *प्रो0 शरद नारायण खरे*

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

यह नितांत यथार्थ है कि माता और जन्मभूमि से कोई बढ़कर स्वर्ग नहीं होता है। निश्चित रूपसे जन्मदात्री माँ तथा जन्मदात्री धरा साक्षात स्वर्ग स्वरूपणा ही होती हैं।

'ऐ मेरे प्यारे वतन,
ऐ मेरे बिछुड़े चमन,
तुझपे दिल कुरबान।"

वस्तुतः हमारा मुल्क, हमारा वतन, हमारी जन्मभूमि सदैव वंदनीय, पूजनीय होती है। उसकी एकता, अखंडता की संरक्षा करना तथा उसकी अस्मिता की सुरक्षा करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए। राष्ट्र के स्वाभिमान व सम्मान की रक्षा करना हमारे जीवन का अनिवार्य दायित्व होना चाहिए। हमारे अंतर में सदैव राष्ट्रीय भावों का प्रबल आवेग उमड़ता घुमड़ता रहना चाहिए।

"जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधर नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।"

राष्ट्रीयता के आवश्यक तत्वः

वतन मात्र एक भूमि का टुकड़ा नहीं होता है, वरन् नागरिक का असली घर होता है। ऐसा घर जिसमें रहकर न केवल हमें असीम अपनेपन का आभास होता है, बल्कि गौरव, स्वाभिमान व शांति का अनुभव होता है।

पर सर्वप्रथम आवश्यक यह है कि हमें वतन के लिए हर प्रकार का बलिदान करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। व्यक्तिगत स्वार्थों से उफ़पर उठकर राष्ट्र के लिए कार्य करना, त्याग करना ही हमारा सबसे बड़ा ध र्म होना चाहिए।

जब हम हिंदी, मुस्लिम, सिख, ईसाई का भेद भूलकर भ्रातृभाव का परिचय देते हुए एक समान नागरिकता का निर्वाह करते हुए वतन की प्रगति के लिए कार्य करते हैं, तो निश्चित रूप से हम वतनपरस्त कहलाने के अध्किारी बन जाते हैं।

राष्ट्रहित में अनिवार्य क्या?

आज राष्ट्रहित में अनिवार्य है- सांप्रदायिक सद्भाव, संविधान के प्रति आस्था, सर्वर्ध्मसमभाव, कर्त्तव्यपरायणता, क्षेत्रीय भेदभाव समापन, भाषाई विवाद समापन, ईमानदारी, त्याग, बलिदान, आतंकवाद का सपफाया, राष्ट्रीय प्रगति, राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा, संप्रभुता की निरंतरता, आर्थिक प्रगति, राष्ट्रीय गौरव की निरंतरता, अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा का यथावत्ता, आंतरिक शांति, मूल्यपरक राजनीति, प्रजातांत्रिक आदर्शों की बहाली आदि।

अतएव हमें राष्ट्रभावना से अभिप्रेरित, अनुप्राणित होकर सदैव राष्ट्रीय हित हेतु कार्य करना चाहिए। हमें राष्ट्र के लिए हर प्रकार की कुर्बानी करने के लिए भी तत्पर रहना चाहिए,

"वतन की राह में वतन के नौज़वां शहीद हों"

ऐ मेरे प्यारे वतनः

"जो अपने प्राणों से खेले, वे ही
लिख पाये इतिहास
पफाँसी के फँदों को चूमा, दे दी भारत माँ
को साँस
ऐसे मतवालों के कर्मों से यह गुलशन
गुलशन है
जिनने संघर्षों की ज्वाला में भी कायम
रक्खी आस।"

ऐ मेरे वतन मुझे भलीभांति ज्ञात है कि तू विदेशी दासता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। तेरी जंजीरों को काटने के लिए न जाने कितने सपूतों को अपनी कुर्बानी देनी पड़ी, अपना सर्वस्व न्यौछावर करना पड़ा। अतएव मेरे वतन मैं शपथ लेता हूँ कि मैं सदा-

- तेरे स्वाभिमान / प्रतिष्ठा की रक्षा करूँगा।

- तेरी अखंडता की रक्षा करूँगा।

- तेरे राष्ट्रीय गौरव को सलामत रखूँगा।

- तेरे सम्मान और शान के प्रतीक तिरंगे की आन बान शान की रक्षा में अपना सर्वस्व न्यौछावर करूँगा।

- तेरी आंतरिक समृद्धि हेतु मैं सतत् प्रयत्नशील रहूँगा।

- मैं सदा धर्म, जाति, वर्ग, भाषा, क्षेत्र से उफपर भारतीयता को रखूँगा। निहित संकीर्णताओं व स्वार्थों का त्याग करके मैं सदैव राष्ट्रहितों को प्राथमिकता दूँगा।

- मैं सदैव कर्त्तव्यपरायण रहकर तेरी सेवा करूँगा।

- मैं सदैव सांप्रदायिक सौहार्द से रहूँगा, तथा अशांति, कलह को न पनपने दूँगा।

- मैं प्रजातांत्रिक मूल्यों की अभिरक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर दूँगा।

- मैं आतंकवाद के खात्में में अपना समग्र योगदान दूँगा।

- मैं नैतिकता के भाव लेकर मानवता के पथ पर चलूँगा तथा सांस्कृतिक मानसिकता लेकर अच्छा परिवेश निर्मित करने में अपनी महती भूमिका का निर्वाह करूँगा।

- मैं शपथ लेता हूँ कि 'ऐ मेरे वतन' मैं तेरे हितों की खातिर अपना सर्वस्व समर्पित करने में स्वस्थ वातावरण निर्मित करने में अपनी महती भूमिका का निर्वाह करूँगा।

-मैं शपथ लेता हूँ 'ऐ मेरे वतन' कि मैं अश्लीलता, पफूहड़ता तथा असांस्कृतिकता को हरगिज भी पनपने न दूँगा।

यह यथार्थ है कि 'ऐ मेरे वतन' हिन्दोस्तां तू संपूर्ण विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। तेरी प्रतिष्ठा कायम / सलामत रहे, तेरा यश कायम रहे यही मेरी कामना है और यही मेरा संकल्प है।

'ऐ मेरे वतन' तेरे श्रीचरणों में नमन् शत् - शत् वंदन व श्रद्धापुष्प समर्पण।

संपर्कः इतिहास विभागाध्यक्ष
शासकीय कन्या महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

●

गणतंत्र दिवस पर विशेष

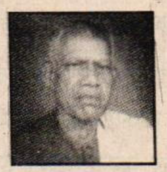

भारतीय गणतंत्र और राष्ट्रीय एकता

डॉ. वैद्यनाथ शर्मा

वर्षों के तप-त्याग और संघर्ष की पावक शिखा में जल-जलकर 15 अगस्त 1947 के दिन अपने देश के आँगन में स्वतंत्रता की रवि-रश्मियों के अवतरण का अभिनंदन किया गया और 26 जनवरी 1950 के दिन हमने स्वनिर्मित संविधन के आलोक में अपने देश की काया में गणतंत्र की प्राण-प्रतिष्ठा की। वस्तुतः हमारे लोकतांत्रिक शासन की काया को प्राणवंत बनाने का सारा श्रेय इसमें प्रतिष्ठित और संचारित गणतंत्र की ही प्राणशक्ति है।

हमने अपने गणतांत्रिक संविधन को इस गौरवमय संकल्प के साथ स्वीकार किया है- "हम भारत के लोग भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न धर्मनिरपेक्ष समाजवादी लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, धर्म, उपासना की स्वतंत्रता-प्रतिष्ठा तथा अखण्डता सुनिश्चित करनेवाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

वस्तुतः हमारा यह संकल्प हमारे गणतंत्र का प्राण स्वरूप है। इसमें हमारे जनतांत्रिक और गणतांत्रिक शासन की मूल चैतन्य शक्ति का स्पंदन निहित है।

हमारा गणतंत्र अपने आप में नया नहीं है। यह सत्य है कि हमने सैकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद अपने देश में नये रूप में इसकी प्राण-प्रतिष्ठा की है, लेकिन हमारे गणतंत्र की इस नव्य और भव्य अट्टालिका की नींव की ईंट बना हमारा वर्त्तमान संविधान हजारों वर्षों पूर्व की भारतीय गणतांत्रिक चेतना के पारंपरिक स्वरूप का ही एक अभिनव रूप है। यह पुरातन भारतीय जनजीवन में पल्लवित, पुष्पित तथा विकसित गणतंत्र का ही एक परिवर्द्धित नव्य रूप है जिसमें हमारी परंपरित राजनीतिक आस्थाएं, नैतिक, मान्यताएँ, सांस्कृतिक चेतनाएँ और जीवनमूल्य संबद्ध मर्यादाएँ प्रतिष्ठित हैं। अपने वर्त्तमान में हम कल के अपने इन्हीं निर्धारित मूल्यों और विश्वासों के प्रति निष्ठावान संकल्प लेकर अपनी आकाँक्षा व्यक्त करते हैं।

गणतंत्र में राष्ट्र का सर्वोच्च अधिपति, जनता या उसके चुने प्रतिनिधियों द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चुना जाता है। इसमें देश की जनता की संपूर्ण इच्छा, आकाँक्षा और कामना निहित रहती है। गणतंत्र का यह स्वरूप हमारे भारत में वैदिककाल से ही उपलब्ध, मान्य और प्रतिष्ठित है। उस काल में प्रत्येक जन (जाति) का शासन राजा के हाथ में केंद्रित होता था। राजा का निर्वाचन समिति में एकत्र होनेबाली प्रजा के द्वारा किया जाता था। वहां उपस्थित प्रजा एक राय होकर राजा को चुनती थी और उसमें अपनी पूर्ण निष्ठा व्यक्त करती थी। ऋग्वेद (10/173) तथा अथर्ववेद (9/89-88) में पूरा सूक्त ही राजा के निर्वाचन के लिए प्रयुक्त हुआ है। उस समय निर्वाचित होने वाला राजा शासन-संचालन के कार्यों में उस गण की आकाँक्षा और कामना से ही प्रेरणा ग्रहण कर अपनी अर्पित निष्ठा का पालन करता था।

कालक्रम में हमारी यह गणतांत्रिक चेतना भरी नहीं। हमारे देश के शासन के स्वरूप में अपेक्षित बदलाव आता चला गया और उसी के अनुरूप हमारा गणतंत्र भी परिवर्तित स्वरूप में ढलता चला गया। छठी शताब्दी ई. पूर्व जब राजतंत्र का सर्वत्र पूर्ण अधिपत्य था, हमारे देश के कई राज्यों में गणतांत्रिक शासन-व्यवस्था मौजूद थी। बुद्धकालीन साहित्य में तत्कालीन विकसित गणराज्यों के रूप में लिच्छवी, मल्ल, शाक्य, कौटिल्य आदि की पूरी चर्चा मिलती है। इन गण राज्यों की संपूर्ण शासन व्यवस्था पर गणतांत्रिक चेतना का पूरा रंग चढ़ा हुआ था। इसमें राज्य की संपूर्ण शक्ति गण या संघ के हाथों में रहती थी। गण पंचायती राज्य थे। राज्य के प्रधन राजा का निर्वाचन जनता द्वारा होता था। हर गणराज्य में एक परिषद होती थी जिसमें सदस्य जनता के द्वारा चुने जाते थे। शासन की सबसे छोटी, लेकिन महत्वपूर्ण इकाई ग्राम पंचायत होती थी।

आज भी हमारा गणतंत्र इसी सामाजिक जनचेतना पर खड़ा है। हमारे गणतंत्र के मूल में हमारी सामाजिक, जन-आकांक्षा तथा जनकल्याण की भावना छिपी है। हमने अपने नवनिर्मित संविधान की प्रस्तावना में अपनी इसी जन-आकाँक्षा और चेतना को व्यक्त किया है। इसी क्रम में हमने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए भी अपना राष्ट्रीय संकल्प व्यक्त किया है।

वस्तुतः राष्ट्रीय एकता का भाव किसी भी गणतंत्रात्मक राज्य के लिए मूल सुदृढ़ शक्ति के रूपमें मान्य और प्रतिष्ठित है। राष्ट्रीय एकता का यह भाव हमारी भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन पद्धतियों से जुड़ा हुआ बड़ा व्यापक भाव होता है जिसमें हमारी संपूर्ण जीवन-पद्धति और दृष्टि प्रत्यक्ष

और परोक्ष रूप से जुड़ी होती है। गणतांत्रिक चेतना के अवतरण और तदनुरूप शासन की प्रतिष्ठा के लिए राष्ट्रीय तल पर एकता और अखंडता अत्यावश्यक है। वहीं गणतंत्र और जनतंत्र अपनी सच्ची सफलता का परचम पफहराता हैं जिसके नागरिक, धर्म, जाति, भाषा तथा वर्ग आदि की संकुचित तथा क्षुद्र भावना से मुक्त होकर एकता और अखण्डता के सूत्र में आबद्ध रहते हैं। इसीलिए तो हमारे गणतांत्रिक संविधान के मूलरूप प्रस्तावना में स्पष्ट रूप से यह स्वीकर किया गया है कि हम भारत को एक प्रभुत्वसंपन्न गणराज्य बनाने लिए कृत संकल्प हैं। वह गणराज्य धर्मनिरपेक्ष समाजवादी गणराज्य होगा जिसमें राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुनिश्चित करनेवाली बंधुता को बढ़ाने के लिए हम प्रयासरत रहेंगे। हमारे गणतांत्रिक संविधान की प्रस्तावना में जिस धर्मनिरपेक्ष समाजवादी जीवन-प्रदर्शन को मूल तत्व से जुड़ा हुआ नहीं है?

आज हमारे गणराज्य भारत की मूल गणतांत्रिक चेतना की रक्षा के लिए राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता की नितांत आवश्यकता है। एक समय था, जब हमारी राष्ट्रीय एकता और अखण्डता विदेशियों के आगमन और आक्रमण से अक्रांत थी। उन दिनों हमारी उदारता तथा संपन्नता के कारण हमारे देश की सीमा में क्रालक्रम में शक, मुस्लिम, अंग्रेज, डच, फ्रेंच सभी आते गये और हमने सब को अपने विराट जन-जीवन के अपार पारावार में विलीन कर लिया और हमारी राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता बनी रही।

अंग्रेजों के शासन काल के अंत होते-होते हमारे देश की राष्ट्रीय एकता के पवित्र भाव को एक बहुत बड़ा झटका लगा जिसके परिणामस्वरूप इस देश का बँटबारा हुआ। इस कठोर सत्य को स्वीकार कर हम अपने आगे की प्रगति के कार्यों और योजनाओं की पूर्ति में लगे रहे। यदा-कदा भाषा, संप्रदाय तथा क्षेत्रियता की संकुचित तथा क्षुद्र दृष्टि के कारण देश के कुछ भागों में कुछ ऐसी छोटी-मोटी घटनाएँ घटती गयीं, जिन्होंने हमारी राष्ट्रीय एकता को खंडित करने का प्रयास किया, लेकिन अनेकता में एकता की हमारी सांस्कृतिगत तथा संस्कारगत प्रवृत्ति के इस मामले में हम काफी सजग रहे हैं।

आज प्रगति-विकास उन्नति ओर उत्कर्ष की अकांक्षा लेकर हम 21वीं सदी में प्रवेश कर गए हैं। हम अपने प्रभुत्व-सम्पन्न धर्मनिरपेक्ष गणराज्य के तल पर प्रगति की किरण के अवतरण के लिए काफी प्रयास कर रहे हैं, लेकिन इस स्थिति में हमारे देश की एकता तथा अखण्डता की रून्ग होती खतरे में पड़ी भावना हमारे चपल-चरण में बेड़ी डाल रही है। इससे हमारा गणतंत्र आज बहुत बड़ा खतरा महसूस कर रहा है। वस्तुतः राष्ट्रीय एकता का अर्थ समतावादी दृष्टि के साये में रहकर सांस्कृतिक परिष्कृत जीवन की समन्वयवादी प्रवृत्ति को प्रश्रय देकर एक भौगोलिक एकत्व के स्वरूप के ढाँचे को स्वीकार करना है।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ है एक विशिष्ट भूखंड पर अस्तित्ववान एक विशिष्ट संस्कृति-संयुक्त मानव समुदाय के जीवन का एकत्व। राष्ट्र एक महान वटवृक्ष की भांति है, जिसमें विभिन्न जीवन प्रवृत्ति स्वरूप अगणित जीवन शाखाएँ और डालियाँ हैं। ये सभी अंग और उपांग उस एक ही वृक्ष की मूल जड़ से अपनी जीवनी शक्ति प्राप्त करते हैं। वस्तुतः यह विशाल वटवृक्ष अनेक शाखाओं तथा टहनियों, डालियों और पत्तों में बंटकर भी मूलतः एक ही है। यही स्थिति राष्ट्रीय एकता की है। हमारा राष्ट्र इस अनेकता में एकता की मूल शक्ति और दृष्टि का एक सबल प्रमाण स्वरूप है।

हम अपनी राष्ट्रीय एकता ओर अखण्डता को अपने समाजवाद और लोकतंत्र जैसे उद्देश्यों से अलग काटकर हासिल करना चाहते है। आज लोगों ने राष्ट्रीय एकता को सिर्फ एक भौगोलिक अवधारणा बना दिया है। हम राष्ट्रीय एकता की चर्चा के क्रम में देश में बढ़ती विषमता की चर्चा नहीं करते। एक ही समय एक ही क्षेत्र में सामाजिक खतरों के हजार विभाजनों और हजार जातीय और धार्मिक बँटवारों की चर्चा नहीं रूकते। देश की एकता को जो भीतरी शक्तियों से खतरा है। उसका क्या होगा? राष्ट्रीय एकता का मतलब भी राष्ट्रीय एकरूपता नहीं होता। वस्तुतः राष्ट्रीय एकता की गारंटी दरअसल वहीं है जहाँ समानता और विकास के समान अवसर है। वरना समाज टुकड़ों में विभक्त रहता है ओर इसका कुप्रभाव राष्ट्र की एकता और अखंडता पर पड़ता है। दुर्भाग्य हमारा है कि हमने राष्ट्रीय एकता के इस पहलू पर कभी ध्यान नहीं दिया और सत्ता तथा कुर्सी की राजनीतिक परिवेश में ही हम राष्ट्रीय एकता के पहलू पर विज्ञापनी चर्चा करते रहे। हमारी संस्कृति में धर्म की प्रमुख भूमिका रही है लेकिन अज्ञानतावश हमने धर्म को संप्रदाय का पय्रय बना दिया है। इसी साम्प्रदायिकता की अपनी पहचान को हम राष्ट्रीय पहचान बनाना चाहते हैं। इससे उत्पन्न खतरे के कारण हमारी राष्ट्रीय एकता संकटापन्न है।

हमारी राष्ट्रीयता की एक धरा हमारे देश के राज्यों से जुड़ी है। यह भारतीय राष्ट्र राज्य के बहुराष्ट्रीय सिद्धांत के आधर पर

शेष पृष्ठ 33 पर...

लोकतंत्र के लिए कैसे मतदान करें

☐ यू.सी. अग्रवाल

नागरिक समाज के व्यवस्थित संचालन के लिए लोकतंत्र के उपयोग का इतिहास लंबा और ऊँच नीच से भरा हुआ है। नागरिक समाज निर्माण करने की आकाँक्षा ने मनुष्य को लोकतंत्र की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया, क्योंकि यही ऐसी व्यवस्था है जिसमें सर्वसाधारण को अधिकतम भागीदारी का अवसर मिलता है। लोकतंत्र में ही प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है कि वह अपने देश के शासन में सीधे तौर पर या आजादी से चुने गए प्रतिनिधियों के माध्यम से हिस्सा ले।

जहाँ तक भारत का सवाल है आजादी के बाद इसने अपनी व्यवस्था संचालन के लिए संसदीय लोकतांत्रिक पद्धति अपनाई और यहाँ 26 जनवरी 1950 से पूर्णरूपेण एक प्रभुत्वसंपन्न लोकतांत्रिक गणराज्य लागू हुआ जैसा कि भारतीय संविधन के प्रस्तावना **(Preamble)** में भी यह लिखित रूप से निहित है। भारत के राष्ट्रपति इस लोकतांत्रिक गणराज्य के प्रमुख होते हैं। फिर भी संसद के दोनों सदनों तथा राज्य विधानमंडलों के सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होने की वजह से राष्ट्रपति सिर्फ Ceremonial अथवा Figure प्रमुख है। मसलन यद्यपि देश का शासन राष्ट्रपति के नाम पर चलता है, किंतु सच तो यह है कि शासन की असल एवं प्रभावी शक्ति भारत के प्रधानमंत्री के नेतृत्व में निर्मित मंत्रिपरिषद में निहित है जिसका गठन संसद के राज्यसभा एवं लोकसभा दोनों के सदस्यों के बीच से होता है। राज्यसभा को छोड़कर लोकसभा के सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से भारत के आम नागरिकों द्वारा होता है। संसद तथा राज्य विधानसभा चुनावों में भारत के प्रत्येक प्रौढ़ नागरिक अ प न अधिकार का उपयोग करता है।

इसी प्रकार राज्यों के प्रमुख वहाँ के राज्यपाल हैं किंतु प्रभावी शक्ति बहुमत से चुने गए राजनीतिक दल या गठबंधन में शामिल दलों के नेता मुख्यमंत्री के नेतृत्व में निर्मित राज्य मंत्रिपरिषद में निहित है। विधान परिषद के सदस्यों को छोड़कर विधानसभा के सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से प्रौढ़ नागरिकों के द्वारा होता है। राष्ट्रपति की तरह राज्यपाल भी मंत्रिपरिषद की सहमति से ही अपने कार्यों का संचालन करते हैं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि लोकतंत्र में प्रशासनिक शक्ति जनसाधारण से आती है, क्योंकि उसी के द्वारा लोकसभा तथा विधानसभाओं के सदस्यों का निर्वाचन होता है। लोकप्रियता के आधार पर निर्वाचित शासन ही लोकतंत्र का गूढ़मंत्र है। इस लोकतंत्र की यह विशेषता है कि देश के प्रत्येक व्यक्ति को देश की सार्वजनिक सेवाओं में शामिल होने का समान अधिकार है और शासन का अधिकार लोकइच्छा पर आधरित है। इसलिए लोकतंत्र में जनता की प्रगति और उसकी समृद्धि ही प्रजातांत्रिक सरकार का मुख्य ध्येय होता है। इसी वजह से लोकतंतत्र को जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए शासन कहा जाता है।

दरअसल लोकतंत्र सामूहिक निर्णय निधरिण की एक पद्धति है जिसके मुख्य रूप से दो सिद्धांत हैं। एक तो सामूहिक निर्णयों पर सार्वजनिक नियंत्रण और दूसरे, वह नियंत्रण लागू करने में अधिकारों की समानता। जिस हद तक ये दोनों सिद्धांत किसी संगठन की निर्णय निर्धारण पद्धति में विद्यमान हों, उस हद तक उसे लोकतांत्रिक कहा जाता है। शासन के दूसरे रूप 'राजतंत्र' और 'तानाशाही' में कई तरह की खामियाँ हैं। राजतंत्र में वंशवाद और जनता द्वारा निर्वाचित नहीं होने की वजह से जनता का कल्याण नहीं भी कर सकता है। राजतंत्र का गुण राजतंत्र के व्यक्ति पर निर्भर करता है। ऐतिहासिक अनुभव बताता है कि राजा एवं सम्राट कुछ प्रतिष्ठित अपवाद को छोड़कर जनता के शोषक हुए हैं। उनका मुख्य ध्येय जनता की कीमत पर आरामदायक जीवन जीना रहा है। जनता बुरे शासक से मुक्ति के लिए कुछ नहीं कर सकती थी सिवाय इसके कि जब उनका कुशासन असहनीय हो जाए तब उसके विरूद्ध विद्रोह पर उतर आएं। ज्यादा अवधि तक शोषण होने की वजह से ही सन् 1789 की रूसी क्रांति तथा सन् 1917 की रूसी क्रांति जैसी खूनी क्रांति का जन्म हुआ। इन ऐतिहासिक क्रांतियों के ही परिणाम हैं कि इन देशों की जनता के द्वारा राजतांत्रिक शासकों की हत्याएँ की गईं। वस्तुतः सारी दुनिया में इन्हीं दो क्रांतियों की वजह से राजतंत्र शासनों का खात्मा हुआ। राजतंत्र के शासक या तो समाप्त हो गए या उनकी जगह पर लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना हो गई। इन सभी राजतंत्रवाले देशों में लोकतांत्रिक पद्धति के आधर पर निर्वाचित लोकप्रिय सरकारों द्वारा प्रभावी शक्तियों का इस्तेमाल किया गया। तानाशाही शासक जहाँ कहीं वे सत्ता में आए आमतौर पर उन्होंने जनता के कल्याण का ख्याल नहीं रखा। तानाशाही के सत्ता में आने पर आमजन की अच्छाई अथवा आम राय की उन लोगों ने बहुत कम चिंता की। उनकी एकमात्र चिंता रही कि वे सत्ता में किसी तरह बने रहें। तानाशाह की अपनी सुरक्षा के लिए ही जनता के धन खर्च किए गए। आज भी जहाँ कहीं तानाशाह सत्ता में हैं तो वहाँ की जनता के लिए उन्हें कोई चिंता नहीं है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि तानाशाह को जनता से शक्ति मिलने की बजाय बंदूक की नोंक से मिलती है। उनके आदेश ही वहाँ के कानून होते हैं।

इसकी तुलना में लोकतंत्र के सकारात्मक पहलु हैं कि सत्ता का उपयोग निर्वाचित लोकप्रिय नेताओं द्वारा किया जाता है और वह भी निधारित अवधि तक ही। निर्धारित अवधि की समाप्ति के उपरांत पुनः चुनाव आवश्यक हो जाता है। नियत अवधि के बाद बिना जनता के पुनः अनुमोदन के कोई भी सत्ता पर काबिज नहीं रह सकता है। इस प्रकार लोकतंत्र में शासकों के दिमाग में यह बात बनी रहती है कि उन्हें जनता से ही शक्ति प्राप्त करनी है और उन्हें सत्ता में बने रहने के लिए लोक इच्छा का आदर करना है। यह लोक इच्छा समय-समय पर कराए गए प्रमाणिक चुनावों के जरिए व्यक्त होती है।

लोकतांत्रिक सरकार की सफलता के लिए वहाँ की जनता को आवश्यक रूप से अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग करते वक्त सावधान और सतर्क होना है। आखिर

तभी तो कहा गया है- "Vigilance is the price of liberty" अच्छी सरकार बने, इसके लिए यह जरूरी है कि मतदाता मत देने के अपने मूल्यवान अधिकार का उपयोग बहुत सोच-समझकर करे ताकि ईमानदारी और संदेह से परे वैसे प्रतिनिधि संसद व विधानसभाओं में निर्वाचित होकर जाएं जिनकी लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक सेवाओं में आस्था और निष्ठा हो।

यदि धूमिल छवि एवं आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को चुना गया तो निश्चित रूप से वे अपने पद का दुरूपयोग अपने स्वार्थसिद्धि के लिए करेंगे। दुःख के साथ कहना पड़ता है कि आज की राजनीति अपराधियों एवं असामाजिक तत्वों के खेल की जगह बनती जा रही है। ईमानदार एवं समाज के प्रति समर्पित लोगों की संख्या राजनीति में दिनानुदिन कमती जा रही है। हत्या, बलात्कार, भ्रष्टाचार से युक्त अधिक से अधिक लोग बहुमत मतों से विजयी होकर संसद एवं विधन मंडलों के सदस्य बन रहे हैं। आज भारत में भ्रष्टाचार तथा जनशोषण के लिए अपराधियों, बाहुबलियों, व्यापारियों, नौकरशाहों तथा राजनेताओं में सांठ-गांठ का बोलबाला है। समाज के सभी स्तरों पर असहिष्णुता दिखाई दे रही है। मानव जाति को एकता के सूत्र में बाँधने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य-मर्यादाएँ समाप्त हो रही हैं।

चिंता का विषय यह है कि पिछले लगभग दो दशकों से अनेक घपले-घोटाले जिसमें उच्च स्तर के राजनेता शामिल हैं के उत्पन्न होने से हमारे लोकतंत्र के समक्ष ही खतरा आ गया है। वर्त्तमान राजनीतिक तथा विकास प्रक्रियाएँ सामूहिक वतन के लिए उत्प्रेरक का काम कर रही हैं। इसका और चाहे जो कारण हो पर जन प्रतिनिधियों के चुनावों में जनता की उदासीनता और अधिक सतर्कता की कमी तथा जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीयता के आधर पर उम्मीदवारों का चयन भी एक प्रमुख कारण है। जाति और संप्रदाय के आधार पर प्रतिनिधियों के चुनाव की वजह से लोकतंत्र आज बीमार हो गया है। धन बल की ताकत ने स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव पर एक प्रश्न चिह्न लगा दिया है।

संचार माध्यमों की एक रिपोर्ट के अनुसार उ.प्र. में आधे से अधिक विधायकों पर आपराधिक मामलों के आरोप हैं। महाराष्ट्र के लगभग एक तिहाई विधायकों पर यही आरोप हैं। कहा तो यहाँ तक जाता है कि वर्त्तमान संसद में लगभग एक सौ सांसदों पर हत्या,

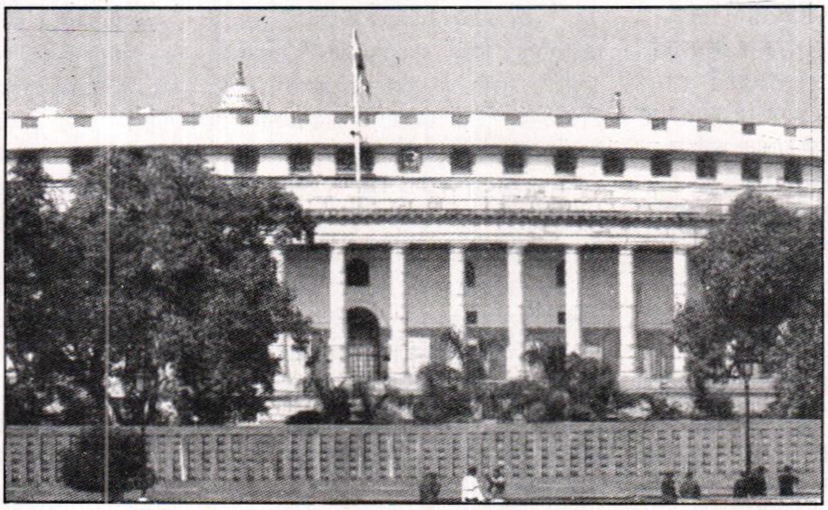

लूट, बलात्कार जैसी जघन्य अपराधों के मामले हैं। ऐसे जन प्रतिनिधियों से भला एक सही प्रजातांत्रिक सरकार की उम्मीद कैसे की जा सकती है?

विधायकी सदस्यता के लिए सच्चे जन प्रतिनिधि तो उन्हें होना चाहिए जो जन साधरण के साथ रहता हो, उसके सुख दुःख का साथी हो और दिन व दिन के उसके दैनिक जीवन में आनेवाली समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने का प्रयास करे। आमतौर पर ऐसे ही व्यक्ति निष्ठा और ईमानदारी से जन कल्याण तथा आम लोगों की समृद्धि के लिए काम कर सकते हैं। आपराधिक छवि के लोगों से बनी सरकार से आम आदमी के करीब रहने तथा प्रजातांत्रिक मूल्य मर्यादाओं का पालन करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

तानाशाही व राजतंत्र का सही विकल्प भ्रष्टाचारी एवं अपराधियों से निर्मित लोकतांत्रिक सरकार कतई नहीं हो सकती। एक भ्रष्ट लोकतंत्र में निष्पक्ष एवं स्वतंत्र चुनाव की उम्मीद नहीं की जा सकती। हालांकि हमारे देश में निर्वाचन आयोग पर उँगली नहीं उठाई जा सकती फिर भी प्रशासनिक तंत्र के कुछ अंश से पूरी तरह राजनीतिक रूप से निष्पक्षता की उम्मीद करना बेमानी होगा। दिन व दिन सरकारी तंत्र के लोग भी राजनीतिक दलों तथा सत्तापक्ष के दवाब में आकर तथा प्रोन्नति पुरस्कार आदि के प्रलोभन के चलते वे लोभ का संवरण नहीं कर पाते।

लोकतंत्र को जीवित और स्वस्थ रखने के लिए आमजन को सामान्य रूप से सतर्क होना होगा तथा ईमानदार एवं समर्थ उम्मीदवारों के पक्ष में अपने मत का इस्तेमाल करना होगा। आपराधिक छवि के उम्मीदवारों को हर हाल में नकारा जाना चाहिए। यदि ऐसे लोगों को दरकिनार किया जाता है तभी एक अच्छी सरकार की आशा की जा सकती है और एक अच्छी एवं स्वच्छ सरकार के होने से ही एक सच्चे लोकतंत्र का लाभ सभी लोगों को मिल सकता है।

नागरिक का कर्त्तव्य केवल मतदान करना नहीं है, बल्कि मत का प्रयोग विवेकपूर्ण करना हैं मत देते समय उन्हें केवल विवेक का सहारा लेना चाहिए। उन्हें अन्य बातों की ओर ध्यान न देकर, दल विशेष का नाम देखकर केवल योग्यतम उम्मीदवार के पक्ष में अपना मत देना चाहिए। बदनाम दल का सुयोग्य प्रत्याशी अच्छे दल के निकम्मे प्रत्याशी से सदा बेहतर होता है। अच्छी चीजें बिना सद्प्रयास के हासिल नहीं होतीं। हमें अपने दिमाग में यह बात बैठा लेनी चाहिए-

सुप्तस्य सिंहस्य मुखे
न प्रविशन्ती मृणाः

(लेखक भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी पद पर रहे भारत के पूर्व मुख्य सतर्कता आयुक्त संप्रति राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।)

संपर्कः 72, एच.आई.जी. कॉम्प्लेक्स
चन्दर नगर, गाजियाबाद-201011

एक गलती सुधरने के लिए दूसरी गलती, वाह क्या बात है?

- *पीयूष*

देखनेवाले भी खुश हैं और दिखाने वाले भी। मीडियावाले खुश हैं कि उनके चैनल के बहुत दर्शक हैं, और दर्शक खुश हैं कि वाह क्या चैनल है सबकुछ आ रहा है। सिनेमा जाने में क्या मजा है जो एक न्यूज चैनल देखने में है। आजकल सबकुछ ऐसे ही चल रहा है। हाँ, एक बात जरूर है कि देखनेवाले और दिखाने वाले दोनों ही इस राय से वाकिपफ रखते हैं कि समाज में अश्लीलता, हिंसा, संयम और भी सामाजिक चीजें कम हो रही हैं। सब आपस में बातें जरूर करेंगे पिफर अगले दिन अपने कामों में व्यस्त हो जायेंगे, भाई पफुरसत कहां है, अपने से। और मीडियावाले तो अपने कामों में लगे ही हैं, 'तिल का ताड़ बनाने में'।

अभी कुछ दिनों पहले मीडिया को नया मसाला मिला- डीपीएस सेक्स स्कैंडल और करीना-शाहिद का प्रेम दर्शन। बस, फिर क्या, टी.वी. चैनल, अखबार, पत्रिका सब लग गये अपने काम पर। पहले खबर आई, कहा गया, ऐसा नहीं होना चाहिए था। पिफर अगली खबर थी साइबर सेक्स पर, उसमें ऐसी चीजें परोसी गईं जिसकी कुछ देर पहले तक आलोचना हो रही थी। कई मिनट तक चलने वाले दृश्य, बिना किसी संकोच या हिचकिचाहट के, आखिर कुछ अलग दिखाना है दूसरे प्रतिद्वंद्वी चैनल से। इस होड़ में जाने क्या-क्या परोसे चले जा रहे हैं। ये तो वही बात हो गई कि जाना था कहीं पहुंच गए कहीं। बेचारे अखबार वाले क्या करें, उनकी न्यूज आजकल सुबह तक बासी हो जाती है, सो उनको चैनलों से कुछ और ही ज्यादा देना होता है, अँग्रेजी अखबारों का तो कहना ही नहीं है।

एक अँग्रेजी अखबार 'मिड डे' में छपी करीना-शाहिद की तस्वीर, जिसमें दोनों एक दूसरे के मुँह में मुंह डाले दिखे बताये जाते हैं। यह पफोटो एक मोबाइल फोन से खिंची गई वीडियो फिल्म का हिस्सा बताई जाती है- जिस दिन यह खबर आई थी उसी दिन शाम होते-होते टीवी चैनलों के लिए यह फिल्म नायाब तोहफा बन चुकी थी। नामी पत्रकार खास कार्यक्रमों में इस पर बातें करते रहे और पता नहीं कितनी बार तस्वीरें प्रदर्शित की गई। गलती पर बातें कर रहे थे और ठीक उसी समय और बड़ी गलतियाँ दुहरा रहे थे। 'मिड डे' वाली गलती को कई गुना बड़े पैमाने पर दुहराया गया। सार्वजनिक तौर पर अगर कोई सेलिब्रिटी ऐसा काम करता है जो सर्वजन के हित में नहीं है तब तो उसे खबर माना जा सकता है। परंतु शाहिद-करीना प्रेम संबंधों में ऐसा कुछ भी नहीं है। मिड डे का यह काम शर्मनाक है, वही क्यों, मैं तो कहूंगा कि टीवी चैनलों का आचरण ज्यादा शर्मनाक है।

समाज की स्थिति यह है कि चोरी छुपे और कभी-कभी खुलेआम पार्कों, बगीचों और सार्वजनिक स्थलों पर ऐसी अश्लील व फूहड़ हरकतें की जाती हैं जिससे कि सभ्य समाज शर्मसार हो जाए। जिस दिन शाहिद-करीना

गलती पर बातें कर रहे थे और ठीक उसी समय और बड़ी गलतियाँ दुहरा रहे थे। 'मिड डे' वाली गलती को टी.वी. चैनलों पर कई गुना बड़े पैमाने पर दुहराया गया।

की खबर फ्लैश में थी क्या उस दिन कोई खबर बड़ी खबर नहीं बन सकती थी। जबकि उसी दिन कैबिनेट ने 1956 के हिंदी उत्तराधिकार कानून में बदलाव वाले विधेयक को मँजूरी दी थी जिसमें बेटों के साथ बेटियों को भी पैत्रिक संपत्ति में बराबरी का हिस्सा दिए जाने का प्रावधन है। कौन से टीवी चैनेल के हिसाब से यह खबर कम महत्व की थी। इनके आधे से ज्यादा दर्शक तो महिलाएँ होंगी ही जिनका जीवन इस खबर से ज्यादा प्रभावित होगा। छात्रों का नई तकनीकों के तरपफ रूझान बढ़ रहा है। इंटरनेट तक सबकी पहुँच है, आनंद का सारा सामान बस एक क्लिक दूर है-चैटिंग, सर्फिंग, शानदार तस्वीरें और क्या क्या पूछो मत। मोबाईल का तामझाम तो और ही है रोज नए-नए मैसेज ऐसे कि बस पूछो मत। उसपर भी मोबाइल में कैमरा! जिसने आजकल उथल-पुथल मचा रखी है। एक तरपफ तो हमारे ऐसे छात्र हैं जिनको मुश्किल से स्कूल मयस्सर हो पा रहे हैं और दूसरी तरफ ऐसे अयाश छात्र हैं जिनके कारनामे से सब परेशान है। इन कारनामों को सुलझाने में सबकी कितनी उर्फजा बर्बाद हो रही है कहने की जरूरत नहीं है, इतना समय अगर किसी विकास कार्य में पूरे समाज द्वारा लगाया जाता तो पता नहीं क्या हो जाता। खैर! ऐसी सोच अपने लोगों में है ही कहां।

इन सारी समस्याओं के जड़ में कोई बहुत बड़ा बम नहीं छिपा है सामान्य सा कारण है परिवार टूट रहे हैं, अपनापन छूट रहा है, हम संवेदना शून्य हो रहे हैं। माता-पिता के पास समय की कमी है और उस कमी को पूरा करने के लिए वे पैसे पर पैसे फेंके जा रहे हैं। हां बोलने को जरूर बोलेंगे कि हम कमा किस लिए रहे हैं हमारा सब कुछ तो इन बच्चों के लिए ही है। भाई इन बच्चों को सबकुछ दे रहे हो पर सबकुछ देने से भला यह है कि बच्चों में संस्कार और नैतिक मूल्यों के बीज सबसे पहले डालने होंगे। बच्चों को समय देना होगा। लगातार टोकने और डांटने की जरूरत है।

ऐसा नहीं है कि इंटरनेट या मोबाइल फोन सिर्फ दुष्प्रभाव ही डाल रहे हैं। गलती हमारे सोचने में है। कुछ लोगों का कहना है कि क्यों न इंटरनेट पर रोक लगा दी जाए। देश के एक बड़े स्कूल ने तो बच्चों के स्कूल में मोबाइल फोन लाने पर रोक लगा दी है। इसके पीछे तुक्का यह कि इससे बच्चे बिगड़ रहे हैं। इंटरनेट पर पूरी तरह रोक लगाना संभव नहीं है।

रोक लगाने से बेहतर होगा कि उन्हें उसके सदुपयोग के लिए प्रेरित करें। इसमें उनके माता-पिता, शिक्षक, टीवी, सिनेमा और मीडिया सब महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। आखिर यही तो हमारी जिम्मेदारी है।

संपर्क : पांडव नगर, दिल्ली-92

बाल-साहित्य में राष्ट्रबोध

☐ *डॉ. सुंदरलाल कथूरिया*

आज का बालक कल का नेता है। वे देश का भावी कर्णधार है। बचपन में उसे जैसे संस्कार मिलेंगे, जिन व्यक्तियों के संपर्क में वह आयेगा या जिस प्रकार के साहित्य का वह अध्ययन करेगा, उसका प्रभा आजन्म उसे मन-मस्तिष्क पर रहेगा। बहुत से व्यक्ति यह कह सकते हैं कि हम बच्चों पर अपने संस्कारों का बोझ क्यों लादें? क्यों न उन्हें उनके अपने ढंग से विकसित होने दें और यह भी कि हम लाख कोशिश कर लें, हमारी कोशिश से कुछ बनने-बिगड़ने वाला नहीं है। बच्चों ने तो जो बनना है, वही बनेंगे। पर मेरी दृष्टि में, उनका यह कथन आंशिक रूप से ही सत्य हो सकता है, सर्वांश में नहीं। अभिमन्यु का गभाग्वस्था में चक्रव्यूह भेदन की कला को सीख लेना क्या यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि बाल्यावस्था में ही नहीं, गर्भावस्था में भी बच्चे को जो शिक्षा दी जाती है, जाने-अनजाने उसका प्रभाव उस पर पड़ता ही है। अतः इसमें विवाद की बहुत गुंजाइश नहीं कि हम बाल्यावस्था में बालकों को जो शिक्षा देंगे, उन्हें जिस प्रकार का साहित्य देंगे, उसका प्रभाव उनके जीवन और चरित्र पर निश्चय ही पड़ेगा। इस दृष्टि से जहाँ माता-पिता का यह कर्त्तव्य है कि वे देखें कि उनके बाल किस प्रकार का साहित्य पढ़ रहे हैं, वहाँ लेखकों और प्रकाशकों का भी यह उत्तरदायित्व है कि वे बच्चों के लिए प्रेरक, चरित्र निर्मायक तथा राष्ट्रबोध संपन्न, संस्कार साहित्य का ही निर्माण करें।

राष्ट्रभक्ति या देशप्रेम की आवश्यकता देशके प्रत्येक नागरिक को है, इससे तो कोई इंकार नहीं कर सकता। जिस चीज की आवश्यकता निश्चित रूप से है, उसकी तैयारी जितनी जल्दी शुरू कर दी जाय, उतना ही अच्छा। अतः बालकों में देशप्रेम, राष्ट्रीय चेतना या राष्ट्र बोध जाग्रत करना बाल-साहित्य के लेखकों का पुनीत कर्त्तव्य है, ऐसे साहित्य को वरीयता देकर छापना प्रकाशकों का परम धर्म है और ऐसे साहित्य को पुरस्कृत सम्मानित करना राष्ट्र, सरकार एवं साहित्यिक संस्थानों का नैतिक एवं राष्ट्रीय उत्तरदायित्व है। बाल साहत्यि के नाम पर विभिन्न संस्थाएँ आज जब ऊल जुलूल साहित्य को सम्मानित पुरस्कृत कर देती हैं तो न केवल पुरस्कार देनेवालों की बुद्धि पर तरस आता है वरन् उन सस्थाओं की प्रमाणिकता पर भी प्रश्न चिन्ह लग जाता है।

कहा जा सकता है कि राष्ट्र जैसे अमूर्त एवं दुरूह विषय का ज्ञान बाल साहित्य के माध्यम से कैसे कराया जा सकता है? कारणयह कि बाल साहित्य में सरलता और ठोसपन अपेक्षित है- ठोस कहानी और सरल भाषा शैली। इसीलिए बाल-साहित्य में पशु पक्षियों, परियों एवं भूत प्रेतों की कहानियों का बाहुल्य है। पर यह तो समझ का फेर है। कहानी कोई भी हो सकती है, अभिव्यक्ति का माध्यम भी कोई हो सकता हैः गद्य, पद्य, चित्र कथा या कामिक्स और फिर भी बालकों को राष्ट्रबोध कराया जा सकता है, उनके देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना पैदा की जा सकती है। इसके लिए जरूरत है इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प कीऋ साथ ही इस बात की भी कि बाल साहित्य के लेखक को स्वयं राष्ट्र के निर्मायक तत्वों का ज्ञान हो, उसमें राष्ट्रबोध ा हो जिसे वह बच्चों तक उनकी भाषा शैली में रोचक और सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर सके।

राष्ट्र किसी भी देश की भौगोलिक सीमाओं तक ही सीमित नहीं, उसकी भावात्मक सत्ता भी होती है जिससे किसी लेखक को तदाकार होना पड़ता हैं राष्ट्र के अंतर्गत भूमि, जन और संस्कृति का समाहार हैं अतः बालकों को राष्ट्रबोध कराने के लिए उन तमाम चीजों को लिया जा सकता है जो भूमि, जन और संस्कृति से जुड़ी हैं। देश की प्रकृति, नदियाँ, तीर्थ, महापुरुष, संस्कृति गरज यह कि कण-कण राष्ट्र का अभिन्न अंग है। भारत के मंत्र द्रष्टा ऋषियों ने धरती को माता और स्वयं को उसका पुत्र माना है। अतः इसका कोई भाग कितना ही बंजर और अनुपयोगी क्यों न हो, न तो हम उसे त्याग सकते हैं, न विदेशियों को सौंप ही सकते हैं। देश का वह भाग भी हमारे लिए उतना ही आदरणीय एवं पूज्य है जितना कि देश के अन्य भाग। देश के कण-कण के प्रति बालकों के मन में ऐसा अनुराग पैदा करना राष्ट्र-विरोधी की सीमा में ही आएगा। अपने देश के तीज-त्यौहारों का वर्णन, देश के महापुरुषों का जयगान और उनके महान कार्यों से बालाकों को परिचित कराना, संस्कृति के विभन्न अंगों का वर्णन, देश की विभिन्न भाषाओं की जानकारी, विभिन्न प्रदेशों की प्रकृति एवं वहाँ की परंपराओं और रीति-रिवजों का ज्ञान देना निश्चित रूप से राष्ट्र बोध के ही विभिन्न आयाम हैं। बाल साहित्य के लेखक इनमें से किसी आयाम को अपने लेखन का आधर बना सकते हैं।

बाल-साहित्य की वर्तमान स्थिति निश्चिय ही चिंताजनक है। पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति, औद्योगीकरण एवं व्यावसायिक दृष्टि का प्रभाव यहाँ के प्रकाशन व्यवसाय पर भी पड़ा है और उसकी प्रतिछाया बाल साहित्य पर भी देखी जा सकती हैं पिछले कुछ वर्षों में जो बाल-साहित्य प्रकाश में आया है, उसमें जितनी उफपरी टीम टाम है उतनी भीतरी चमक दमक नहीं। चित्र कथाओं और कामिक्स की माँग बढ़ी है, पर इनमें या बाल साहित्य के अन्य प्रकारों- बाल कहानिों, बाल गीतों, बाल नाटकों आदि में कथ्य की दृष्टि से राष्ट्र-बोध से जुड़ी सामग्री अपेक्षाकृत बहुत कम रहती है। इसके बावजूद यह कहना अनुचित एवं तथ्यों के विपरीत होगा कि हिंदी बाल साहित्य में राष्ट्रबोध है ही

नहीं या उसकी नितांत उपेक्षा हुई है। आवश्यकता है तो इस बात की कि उस प्रकार के बाल साहित्य की छानबीन कर बच्चों को उसे पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाय और वह सुलभ कराया जाए। बाल पत्रिकाओं में देवपुत्र ने बालकों में राष्ट्र-बोध जाग्रत करने का जैसा प्रयास किया है, वह सराहनीय ही नहीं, अन्य बाल पत्रिकाओं के लिए अनुकरणीय भी है।

बालकों में राष्ट्रीय भावना पैदा करने के लिए जहाँ गीताप्रेस गोरखपुर तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने कुछ अच्छी पुस्तकों का प्रकाशन किया है, वहाँ निजी प्रकाशकों ने भी इस दिशा में कुछ सराहनीय प्रयास किये हैं। बाल पुराण कथाएँ, हमारी पावन नदियाँ, हमारे पुण्य तीर्थ, पौराणिक कहानियाँ, पतित पावनी गंगा, सूर्यपुत्री यमुना, वीरता का पुरस्कार, राष्ट्रीयता का महत्व, आओ हम भी दीपक बनें, प्रेरक जीवन गाथाएँ, देश-प्रेम की कहानियाँ, भारतवर्ष हमारा है, गौरव गीत, सत्तावन की कहानी: रणभूमि की जबानी आदि ग्रंथ ऐसे ही सराहनीय प्रयासों का प्रमाण हैं। यदि बाल साहित्य के क्षेत्र में इस प्रकार के ग्रंथों का प्रकाशन उत्तरोत्तर बढ़े तो यह एक शुभ लक्षण हो सकता है। यह तभी संभव है कि जब केंद्रीय एवं राज्य सरकारें, विभिन्न प्रदेशों की अकादमियाँ एवं अन्य सरकारी या गैर सरकारी संस्थाएं ऐसे ग्रंथों के प्रकाशन को प्रोत्साहित किया जाए ताकि अन्य लेखकों का ध्यान भी राष्ट्र बोध संपन्न विषयों की ओर जाए। सामान्य जनता का भी यही कर्त्तव्य है कि वह अपने बच्चों के लिए ऐसी ही पुस्तकें खरीदें ताकि प्रकाशक इसी प्रकार की पुस्तकें छापने के लिए विवश हो जाएँ।

संपर्कः पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, बी-3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

●

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संवाहिका

विचार दृष्टि

का

अब नये तेवर व कलेवर में

सातवें वर्ष में प्रवेश

अपने 22वें अंक के साथ

विचारोत्तेजक एवं प्रभावोत्पादक आलेख जाने-माने लेखकों की कलम से

•

शानदार कागज पर जानदार छपाई

•

आकर्षक साज-सज्जा में बोलती तस्वीरें

•

सामाजिक राजनीतिक यथार्थ की कहानियाँ व कविताएँ

•

सम-सामयिक मुद्दों पर निष्पक्ष एवं निर्भिक विचार व दृष्टि

•

राष्ट्र चेतना, शिक्षा, सेहत, महिलाओं पर विशेष सामग्री

•

कला, संस्कृति एवं साहित्य पर गहरी पड़ताल

•

दिखने में सुंदर और पढ़ने में बेहतर

•

सदस्यता ग्रहण कर आप अपनी प्रति सुरक्षित कराएँ और एक अच्छी मानसिक खुराक पायें।

सुधीर रंजन

प्रबंध संपादक, विचार दृष्टि

'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष : 22530652

हिन्दी हाइकुः 2004

डॉ. सुरेंद्र वर्मा

हिंदी काव्य परंपरा एक जीवंत परंपरा है और इसमें समय-समय पर अनेकानेक प्रयोग हुए हैं जिन्होंने उसे न केवल गति प्रदान की है, बल्कि सृजन और रचना के कई नए द्वार भी खोले हैं। हिंदी में "सौनेट्स" लिखी गई और खूब प्रचलित हुई इसी प्रकार 'लिरिक्स भी रची गई जिन्हें हम 'तुमुक्तकों' के रूप में भली-भाँति जानते-पहचानते हैं पिछले 25 वर्षों से जापानी काव्य विधा हाइकु ने भी अब हिंदी काव्य में अपना एक निश्चित स्थान बना लिया है। इसका श्रेय सर्वप्रथम तो रवींद्रनाथ ठाकुर को जाता है जिन्होंने हिंदी जगत् को जापानी काव्य की इस विध से भारत को परिचित कराया। अज्ञेय ने कुछ हाइकुओं का हिंदी में अनुवाद किया और बाद में दिल्ली-विश्वविद्यालय के जापानी भाषा के आचार्य सत्यभूषण वर्मा ने तो हिंदी में लगभग एक हाइकु आंदोलन ही आरंभ कर दिया। यह मुख्यतः सत्यभूषण वर्मा और भगवतशरण अग्रवाल के प्रयत्नों का ही पफल है कि आज भारत में अनेकानेक कवि हाइकुओं की रचना कर रहे हैं। इन्हें इस विध ा में लिखने की प्रेरणा मुख्य रूप से 'हाइकु भारती' पत्रिका से मिली जो भगवतशरण अग्रवाल के संपादन में पिछले 6-7 वर्षों से अहमदाबाद से निरंतर प्रकाशित हो रही है। हाइकु की लोकप्रियता का आज यह आलम है कि वर्ष 2004 में कम से कम हिंदी में 20 हाइकु संकलन प्रकाशित हुए हैं। इनमें कुछ नहीं तो 3-4 हजार हाइकु तो होंगे ही लेकिन इसमें भी संदेह नहीं कि इन हजारों हाइकुओं में शायद 300-400 हाइकु ही ऐसे हों जो हाइकु की श्रेणी में आ सकें। शेष अधिक से अधिक हाइकु लेखन के आधे-अधूरे अभ्यास मात्र कहे जा सकते हैं।

जापान में हाइकु के विषय मुख्यतः प्रकृति और अध्यात्म रहे हैं, किंतु हिंदी में इसके विषय का काफी विस्तार हुआ है। बेशक प्रकृति और अध्यात्म विषयक हाइकुओं की रचना भी यहाँ खासी मात्रा में हुई है किंतु इसके अतिरिक्त प्रेम और परिवेश, समाज और समय, प्रकृति और स्मृति ने भी हिंदी हाइकुओं में अपनी पैठ बनाई है।

❍❍

हिंदी हाइकु मुख्यतः अपने परिवेश से जुड़ा है। परिवेश और पर्यावरणसंबंधी चिंता यहाँ पर हाइकुकार में दिखाई देती है। नीलयेंदु सागर वृक्ष विहीन पहाड़ियों को देखकर दुखी हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि नंगी शिलाएँ 'घनश्याम' (बादल/कृष्ण) से मानों प्रार्थना कर रही हैं कि वह उन्हें पहनने के लिए साड़ी प्रदान करेंऋ और उन्हें यह भी लगता है कि सारे के सारे वृक्ष जिनके पत्ते झड़ गए हैं 'हरे सपने' देख रहे हैं-

नग्न शिलाएँ	बेपात पेड़
माँगती हरी साड़ी	रात भर देखता
घनश्याम से	हरे सपने

इन हाइकुओं में दुःख तो है किंतु आशावादिता भी झलकती है। पर इस आशा का कोई ठोस आधार नहीं है। यह केवल प्रार्थना के रूप में प्रकट हुई है। कभी-कभी ऐसा भी प्रतीत होता है कि दुःख से मानों प्रकृति ने समझौता कर लिया है और उसी से संतोष कर लिया है-

बसंती हवा
ठूँठ से बतियाती
संतोषी कथा।

यह स्थिति बदल नहीं सकती। फिर भी कवि द्वारा यदि परिवेश के पतन का संदेश ही पाठक तक ठीक-ठीक पहुँच जाए तो भी सुधार का कोई न कोई रास्ता शायद वह ढूँढ़ ही ले।

परिवेश की इस चिंता को उर्मिला कौल में भी स्पष्ट देख सकते हैं। उन्होंने बहुत ही काव्यात्मक ढंग से नारी सुलभ भाषा में कहा है-

उकड़ूँ बैठी
शर्मसार पहाड़ी
ढूँढ़ती साड़ी।

उर्मिला जी का यह एक अद्वितीय हाइकु है।

❍❍

कविता के लिए प्रकम एक शाश्वत विषय रहा है। यह एक ऐसी भावना है जिसने मनुष्य को सर्वाधिक विचलित किया है। प्रेम का यह संसार हिंदी हाइकु में भी अपनी उपस्थिति बनाए रखे हैं तो कोई आश्चर्य नहीं। **प्रदीप श्रीवास्तव** के लिए प्रेम निःसंदेह महत्वपूर्ण तो है किंतु ऐसा लगता है कि वे उसे जिंदगी का एक हिस्सा भर मानते हैं-

एक टुकड़ा
जिंदगी जी ली मैंने
तुझे पाकर

लेकिन जिंदगी का यह एक ऐसा टुकड़ा है जो सदा-सदा के लिए स्मृति में सुरक्षित है-

सहेज रखा
कभी नहीं भूलूँगा
स्निग्ध स्पर्श

पर प्रेम केवल स्मृति शेष होकर ही नहीं रह जाता। वह मनुष्य को शून्यता, उदासी और

नैराश्य में भी ढकेल सकता है। **नीलमेंदु सागर** ऐसे ही खंडित प्रेम के शिकार हैं-

किसे क्या पता
इस गली में हुआ
चाँद लापता

शून्य में बैठा
ताकता शून्य को ही
शून्य जैसा ही

सूना आँगन
चाँदनी बिछा बैठी
उदास रात

○○

हिंदी हाइकु पर्यावरण और प्रेम से ही नहीं अपने समय और समाज से भी घनिष्ट रूप से जुड़ा हुआ है। समय को न पहचान पाना और समय की गति को अनदेखा कर देना बहुत भारी पड़ सकता है। सिद्धेश्वर इसकी कीमत अच्छी तरह पहचानते हैं क्योंकि उनके अनुसार-

न पहचाना
जिसने समय को
उसने गँवाया

रोक न सका
समय को कोई भी
हम ही रुके

हम आज अपने समय की विसंगतियों की, उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार की अक्सर अनदेखी करते रहते हैं। किंतु यह ठीक नहीं हैं इससे तो पतनोन्मुख समाज और भी गर्त में चला जायगा। आज के सुर निश्चय ही सुरीले नहीं हैं। इसी से सिद्धेश्वर हमें सदैव सजग रहने का परामर्श देते हैं-

अंधेरा अभी
और गहराएगा
जागते रहो

सिद्धेश्वर की तरह ही भास्कर तैलंग भी समाज में व्याप्त अपसंस्कृति से बहुत चिंतित हैं। उनके अनुसार-

यहाँ भाग्य में
वनवास लिखा है
सदा राम के

हर ईसा को
इस धरती पर
सूली मिलती

इसका कारण है। मनुष्य में पाशविक वृत्तियाँ बड़ी तेजी से घर कर रही हैं-

शहर आए
शेर चीते स्यार
जंगल छोड़

चारों तरपफ
दिखाई देते हैं
मकड़जाल

समाज में आज पैसा बुखार चढ़ा हुआ है और

अर्जित करें
जायज नाजायज
सभी कमाई

व्यक्ति का आज अपना कोई मूल्य नहीं रहा है। जबतक उसे भोगा जा सकता है, उसे भोगा जाता है और बाद में मक्खी की तरह उसे निकाल फेंका जाता है। प्रदीप श्रीवास्तव कहते हैं कि हम लगातार

तृप्त होकर
बुझी सिगरेट को
रौंधते रहे

हमारा मन बौना हो गया है। वह रिश्तों की दूरी तो नापता है, संबंधों की निकटता के लिए प्रयास नहीं करता-

मन वामन
प्रतिदिन नापता
रिश्तों की दूरी

○○

प्रकृति का सौंदर्य चित्रण और उसका मानवीकरण हिंदी कविता का सदैव ही एक मुख्य विषय रहा है। हाइकु रचनाएँ इसका अपवाद नहीं हैं। यहाँ भी हम प्रकृति का मानवीकरण कर एक अद्भुत संसार की रचना करते हैं। ऋतुओं के अनुसार प्रकृति जिस तरह

हिंदी हाइकु पर्यावरण और प्रेम से ही नहीं अपने समय और समाज से भी घनिष्ट रूप से जुड़ा हुआ है। समय को न पहचान पाना और समय की गति को अनदेखा कर देना बहुत भारी पड़ सकता है। सिद्धेश्वर इसकी कीमत अच्छी तरह पहचानते हैं

से अपना चोला बदलती रहती है, वह कवियों को चमत्कृत करती है। जल, धरती, आकाश, अग्नि और वायु सभी तत्व अपनी करामात दिखाते हैं। तेज वायु के झोंके निःसंदेह दीपक बुझा भी सकते हैं, लेकिन प्राण वायु न हो तो दीपक जलता भी नहीं रह सकता। इसीलिए सिद्धेश्वर कहते हैं-

हवा से पूछो
ये कौन जलता है
दहलीज पे

भास्कर तैलंग बताते हैं कि

दीपक ही नहीं, जल उठती
राख दबी चिंगारी
हवा पाकर

यह चिंगारी प्रतिभा की हो सकती है, सात्विक क्रोध की हो सकती है, और प्रेम की भी हो सकती है और हवा से तात्पर्य तो अनुकूल परिवेश से ही है जो व्यक्ति को प्रोत्साहित करता है और हवा है तो साफ सफाई भी है-

पत्ते झरते
बुहार रही हवा
सृष्टि आँगन

लेकिन फिर भी कुछ लोग तो हवा को आवारा समझते हैं खिड़कियाँ बंद कर लेते हैं। ऐसे में हवा बेचारी भी क्या करे?

बंद खिड़की
दस्तक दे लौटती
आवारा हवा

(नीलमेंदु सागर)

परंतु इसी हवा का स्वागत पके धन की नालियां करती हैं और हवा उन्हें चूम चूम लेती है-

हवा चूमती
पके हुए धन को
बाली झूमती

(प्रदीप श्रीवास्तव)

प्रकृति की ऋतुएँ भी हाइकुकारों को उद्वेलित करती हैं। ग्रीष्म ऋतु एक ऐसी ऋतु है जो किसी को भी झुलसा दे लेकिन नीलमेंदु सागर कहते हैं कि अमलतास की शोखी देखिए वह जलते बैसाख में भी पीला परिधान पहने बैठा है

जला बैसाख
शोख अमलतास
पियरी ओढ़े

इसी तरह लटती घटनाएँ अपनी घूँघट उठाकर कभी कभी हँस देती हैं और शरद ऋतु में तितली का आँचल जब नींबू थाम लेता है, गुलाब जल जाता है।

लटती धरा
कभी कभी हँसती
घूँघट हटा
नींबू ने थामा
आँचल तितली का
जला गुलाब

विपरीत परिस्थितियों में भी सकारात्मक सोच बनाए रखना कोई प्रकृति से सीखे। प्रकृति बेशक सुंदर तो है ही किंतु कवि अपनी कल्पना से उसे और भी रंगीन बना देता है।

पक्षियों में एक पक्षी है काग। जन जीवन में उसे कई तरह से चित्रित किया गया है। मुँडेर पर अगर कागा बोलता है तो वह प्रिय के आगमन की सूचना देता है। मगर कौआ झूठ बोलने पर काट भी लेता है। कौए की निंदा भी कम नहीं हुई है-

निंदित पक्षी
श्राद्ध में काम आते
केवल कौवे

(भास्कर तैलंग)

लेकिन कौए की एक पहचान यह भी है कि वह अकेला कभी नहीं खाता। खाते समय वह काँव-काँव की पुकार लगाकर अपने सभी साथियों को न्योता भी देता रहता है। उर्मिला कौल कौए के इसी गुण को रेखांकित करती हैं-

काग से सीख
खा मिलके खाना
काँव पुकार
कभी न खाए
काग अकेला, न्योता
काँव काँव से

○○

पर्यावरण और प्रकृति से अपना अपना अटूट संबंध बनाए रखकर भी हिंदी हाइकुकार अन्य कवियों की तरह आत्मरति में लीन, आत्मकेंद्रित भी है। उसने अपनी निजी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को अभिव्यक्ति देने में कभी कोताही नहीं बरती। वह एक दार्शनिक की तरह स्पष्ट कहता है-

अपने से ही
हम तो अभी तक
अनजाने हैं

(भास्कर तैलंग)

इसीलिए जब भी वह एकांत में होता है 'यादों के मेले' लगते हैं। उर्मिला कौल तो मुख्यतः अपनी वेदना और स्मृति को पंख देने में एक सिद्धहस्त हाइकुकार हैं-

पर्यावरण और प्रकृति से अपना अपना अटूट संबंध बनाए रखकर भी हिंदी हाइकुकार अन्य कवियों की तरह आत्मरति में लीन, आत्मकेंद्रित भी है। उसने अपनी निजी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को अभिव्यक्ति देने में कभी कोताही नहीं बरती।

जितना छुआ
उतना बिखरी मैं
रेत का घर

उड़ी पतंग
हाँ वो काटा थी वह
मेरी उमंग

उर्मिला जी अपनी दुःखद स्मृतियों को विशेषकर, सहजकर रखती हैं और उन्हें यादकर, ऐसा प्रतीत होता है, मानों सुख अनुभव करती है-

लपेटा लगा
सेंकती मैं यादों की
ऊष्म काँगड़ी
यादों के मोती
चली पिरोती सुई
हार किसे दूँ!

अपनी स्मृतियों में दूसरों को सम्मिलित करना उन्हें अच्छा लगता है। उर्मिला जी अपने मायके को कभी भूल नहीं पाती। जब भी वे मायके जाती हैं वह उन्हें धूप की तरह 'थोड़ी देर के लिए ही सही, पर सुखद' प्रतीत होता है। आदमी मायके नहीं जाता लेकिन कभी कभी उसे अपना गाँव छोड़ना पड़ता हैं और तब लगभग उसी गृह-विरह की अनुभूति जो स्त्री को मायके के लिए होनी है, उसे भी होती है। अँग्रेजी में इसे 'नॉस्टैल्जिया' कहा गया है। इस नॉस्टैल्जिया से हिंदी के कवि भी

कम पीड़ित नहीं दिखते। रमाकांत श्रीवास्तव को हम बिना हिचक गृह-विरह के हाइकुकार कह सकते हैं-

खुल गए हैं
पी कहाँ? पुकार से
पृष्ठ पिछले

कहाँ वो कुआँ
कहाँ वो पनघट
कहाँ वो गाँव

हिंदी हाइकु भी अब अपने मूल स्थान (जापान) से इतना दूर आ गया है कि बेखास्ता कहने को मन करता है, कहाँ जापानी और कहाँ है हिंदी हाइकु! फिर भी कुछ हिंदी हाइकुकारों ने तो मानों हाइकु से अपना तादात्म ही बैठा लिया है। उर्मिला कौल के ही शब्दों में

हाइकु संग
रहते रहते मैं
बनी हाइकु!

चर्चित हाइकु संकलन-

1. *उर्मिला कौलः बिल्व पत्र, आरा*
2. *निलयेंदु सागरः दोना भर त्रिदल दिल्ली*
3. भास्कर तैलंगः मकड़जाल, हाशंगाबाद
4. रमाकांत श्रीवास्तवः प्यासा बन पाखी, लखनउफ
5. सिद्धेश्वरः सुर नहीं सुरीले, दिल्ली
6. सिद्धेश्वरः जागरण के स्वर, दिल्ली
7. प्रदीप श्रीवास्तवः एक टुकड़ा जिंदगी, रायबरेली

संपर्कः 10, एच.आई.जी., 1, सर्कुलर रोड, इलाहाबाद-211001

●

...पृष्ठ 24 का शेषांश

संघीय ढाँचे में राज्यों के लिए और स्वायत्तता की माँग करता है। यहाँ सत्ता के विकेंद्रीकरण का प्रश्न प्रमु.ख है। हमने राष्ट्रीय एकता के क्रम में इस सवाल को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। हमारे देश के इतिहास में प्रादेशिक धरा बहुत महत्वपूर्ण रही है। हाल में अपने स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में हमने देखा है कि सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए सभी छोटी-बड़ी इकाइयाँ पारस्परिक सहयोग से निर्माण की प्रक्रिया में जुड़ी रहती थी। उसी ऐतिहासिक दौर में माहत्मा गाँधी की विक्रेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था और ग्राम स्वरूप राज्य जैसी धारणाओं ने अपना स्वरूप लिया और आजादी के बाद हमने एक लोकतांत्रिक ढाँचा बनाया। कालक्रम में हमारा यह लोकतांत्रिक ढाँचा भीतर ही भीतर टूटता चला गया। राजनीतिक और आर्थिक सत्ता कुछ लोगों तक सिमटती चली गयी और आहिस्ते-आहिस्ते हमारी राष्ट्रीय एकता की भावना रूग्न होती चली गयी।

राष्ट्रीय एकता की रक्षा के लिए हमें आर्थिक और सत्ताजन्य शक्ति को निरंकुशता से मुक्ति का रास्ता ढूँढ़ना होगा। इसी क्रम में हमें उचित और राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार-प्रसार से संप्रदाय निरपेक्ष जनमानस तैयार करना होगा। हमें राष्ट्रीय एकता के इस पवित्र संकल्प को सकार करना है। इसके लिए हमने संविधान की प्रस्तावना में जिस धर्मनिरपेक्ष प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी गणराज्य के निर्माण की शपथ ली है, उसको पूरा करना है। शासक तथा जनता दोनों को गणतंत्र भारत की मूल गणतांत्रिक चेतना के अनुरूप कार्य करना होगा तभी समूह की इच्छा-आकाँक्षा का यह तंत्र सपफल होगा। इसके लिए सामाजवादी अथव्यवस्था, लोकतांत्रिक शासन चेतना और संप्रदाय निरपेक्ष मानसिकता की त्रिवेदी में स्नात होकर हमें अपने गणतंत्र को अश्वय सुख, शांति और अमन-चैन का पवित्र तीर्थराज बनान होगा।

संप्रतिः पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, मगध विश्वविद्यालय, श्रीकृष्णनगर, पटना-1

●

क्या करूँ अब मैं

डॉ0 ओम प्रकाश जमुआर

गलती हुई,
क्या करूँ अब मैं?

सपने सजाये
बिखर गये अँधकार में,
गलती हुई आखिर कहाँ?

उम्मीद थी,
आशाओं के दीप जलाऊँगा
सिमट गया समय के चक्र में।
गलती हुई आखिर कहाँ!

रोना आता
लेकिन रोया न जाता,
करता हूँ मंथन एकांत में।
गलती हुई आखिर कहाँ?

समय ने पटका
नवनीत बिखरा
उलझा पड़ा हूँ वक्र में।
गलती हुई थी आखिर कहाँ!

संपर्क : कार्यक्रम अधिशासी
आकाशवाणी, पटना

होगा सुखमय जीवन सबका

जयसिंह अलवरी

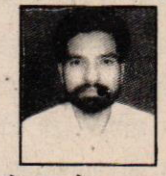

दीप मानवता के जलाओ।
फैले अँधकार को दूर भगाओ।।

होगा सुखमय जीवन सबका।
सोयी अपनी इंसानियत को जगाओ।।

आपसी बैर भावों को
प्यार स्नेह में बदल के।
जहाँ एक प्रेम का बनाओ।।

सूखे बाग में
प्रेम स्नेह के।
मुरझाये हर तने को खिलाओ।।

फैलेंगे भाईचारा
होगी सुदृढ़ मैत्री।
दीवार दिलों से
नफरत की ......।

संपर्क : दिल्ली स्वीट, सिरुगुप्पा, कर्नाटक

नीर भरे नयनाः मानवीय पीड़ा की अभिव्यक्ति

समीक्षकः वंशीधर सिंह

मनु सिंह, विचार प्रज्ञ और संवेदनशील कवि हैं। इन्होंने कविता, कहानी और उपन्यास पर काफी कुछ काम किया है जिससे इनकी बहुआयामी प्रतिभा का पता चलता है। मनु सिंह का हाल फिलहाल प्रकाशित कविता संग्रह- 'नीर भरे नयना' समकालीन काव्यशैली से अलहदा होते हुए भी कई हस्तियों से सराहनीय है। इसमें मानवीय संवेदना की छलदल करती आँखें हैं तो धरती से आकाश तक फैला गहन मौन भी है। एक ओर जहाँ जननी जन्मभूमि की याद है तो दूसरी ओर कालचक्र से पफरियाद भी है। एक ओर राष्ट्र राज्य की वंदना है, तो दूसरी ओर तपः पूत कुच्छ साधना भी। अतीत होते क्षण की अनुभूतियाँ हैं तो वर्तमान के खुरदुरे यथार्थ का अहसास भी। जहाँ नागर संस्कृति के विरूप बिम्ब हैं वहाँ खेतों के चैतन्य चित्र भी। कवि के व्यापक अनुभव के अनेक खंड चित्र स्मृतियों की मणि मंजूषा निर्मित करते चलते हैं। इसलिए उनमें एक प्रकार की मोहकता भी है।

प्रस्तुत संग्रह की कुल अठाईस कविताओं में व्यक्त विचार अपने कोण और दिशा में विविधत्मक होते हुए भी सहज मानवीय मूल्य बिन्दु पर समेकित हो गये हैं, जिनसे कवि मनु सिंह की मानवतावादी दृष्टि की थाह मिलती है। हालाँकि इनमें प्रखर वैज्ञानिक विचारधारात्मक ताप नहीं है, फिर भी सहज भावों और विचारों का प्रवाह तो है ही। इसलिए ये सहजाद्रेक कविताएँ मन को कहीं कचोटती तो कहीं प्रफुल्लित करती चलती हैं। गहन पीड़ा की अनुभूति के साथ वंदना और वेदना का स्वर कविता को जहाँ गलद्दश्रु भावुकता में सराबोर करता है, वहाँ आदर्श की उज्ज्वल उर्मियाँ चमत्कृत भी करती हैं। आदर्श कभी-कभी तत्व दर्शन का रूप अख्तियार कर लेता है जो पुनर्जन्म की आस्था को जगाता है। एक करुण छायामासी दर्शन अनंत में लय होने और फिर "दूसरा रूप धारण कर ब्रह्मांड में फिर से अवतरित होने की आस्था से आपूरित है लेकिन कठिन श्रम से अन्न उपजाने वाले किसान मजदूर को उनका प्राप्य नहीं मिलता तो कवि इन भूखे नंगे की जमात के साथ गहरी आत्मीयता से संलग्न होकर आक्रोश से भर उठता है। इस तरह इसमें यथार्थ की जमीन भी है और आदर्श का आकाश भी। महान भारत की बदहाल सड़कों, भीड़ भरी राहों पर गंदगी के अंबार और बूथों पर मिलने वाले दूध में कीड़ों को भरमार से कवि का मन खिन्न हो जाता है। राजनेताओं की स्वार्थजन्य कारगुजारियाँ आम जन की मजबूरियाँ और लगातार उजड़ती हुई झोपड़ियाँ वर्तमान व्यवस्था के चाक चौबंद को तार-तार कर देती हैं तथा भारत महान के कथित नारे को खोखला साबित करती हैं।

पुस्तकः **'नीर भरे नयना'**
कविः
मनु सिंह
समीक्षकः
वंशीधर सिंह
प्रकाशकः
श्रुति प्रकाशन, पटना-1
मूल्य- 150 रुपए

कवि ने भारत की प्राचीन संस्कृति के त्याग और तपस्या जैसे मूल्यों तथा सीता, द्रौपदी और यशोधरा जैसी नारियों के नीर भरे नयनों की सकरुण मौन भाषा को वाणी दी है और नारी जीवन का मर्म चित्र खींचा है।

युधिष्ठिर कविता में विपुल विचारों की अनेक धराएँ हैं जिनमें धर्मराज युधिष्ठिर को शकुनियों की दुरभिसंधियों के चलते वन-वन भटकना पड़ा था। कवि इस आख्यान को वर्तमान के राजनीतिक संदर्भों से जोड़कर देखता है और व्यवस्थाजन्य विसंगतियों पर प्रहार करता है। कवि उन मनःस्थितियों, परिवेशगत परिस्थितियों तथा युगपत् स्थितियों की भी समीक्षा करता चलता है जो व्यक्ति को मजबूत या कमजोर बनाती हैं। कवि समाज को स्वस्थ, सुंदर और सहिष्णु बनाने के लिए बदलाव का गीत गाता है, मंदिरों, मस्जिदों, गिरजों और गुरुद्वारों में धर्म के नाम पर बाँटे जा रहे समाज और भड़काये जा रहे उन्माद तथा फैलाये जा रहे अपफवाह की तीव्र भर्त्सना करता है। वह मिलीजुली संस्कृति की वकालत करता है।

इस कविता संग्रह की प्रायः सभी कविताएँ समकालीन कविता की भाषा भंगिमा से अलग हैं। सर्जनात्मक काव्य भाषा का रूप भी लक्षित नहीं होता। न तो किसी काव्य युक्ति अथवा भाषाई चमत्कार से कविता को चमकाने की प्रवृति दिखाई पड़ती है। इसलिए काव्य प्रवाह गत्वर न होकर किंचित शिथिल हो गया है। इसमें न तो नये मुहावरे गढ़े गये हैं और नहीं भाषिक व्यंजना का नया रूप खड़ा किया गया है। निरलंकृत भाषा के अभिकथन रूप के सहारे कविता को संभव बनाया गया है। आम बोलचाल की भाषा में कवि मनु सिंह अपनी अनुभूति, अपने विचार तथा अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में कापफी सफल हुए हैं। उम्मीद है, काव्य यात्रा के अगले पड़ाव में कवि मनु सिंह, कविता की समर्थ भाषा के साथ हाजिर होंगे और हिंदी कविता को समृद्ध करेंगे।

●

कथ्य और शिल्प की कसौटी पर 'कसक'

डॉ0 ब्रह्मजीत गौतम

'चुभन' और 'शिकन' के बाद अपना तीसरा ग़ज़ल-संग्रह 'कसक' लेकर आचार्य भगवत दुबे साहित्य प्रेमियों के समक्ष उपस्थित हैं जैसा कि शीर्षक से ध्वनित है, इस संग्रह की अधिकांश ग़ज़लों में कवि की विरहानुभूति और तज्जन्य कसक की गूँज सुनाई देती है। उनकी एक ग़ज़ल का मतला देखिये, जो कदाचित इस संग्रह के नामकरण का प्रेरणास्रोत भी है-

पीड़ाओं पर और अध्कि छा रही जवानी है
सदा टीसती रहती है यह कसक पुरानी है

कहते हैं कि कविता की उत्पति वेदना से होती है। कदाचित् इसीलिए 'एको रसः करुण एव' कह कर कविता में करुण रस को अधिमान्यता दी गई है। आचार्य दुबे की ग़ज़लों में भी स्थान-स्थान पर इस वेदना की विवृति हुई है। यथा-

गम मेरा सच्चा साथी है, साथ नहीं छोड़ा
मुझसे हर पल खुशियों ने की आनाकानी है

जहर पचाना सीख गया मैं धन्यवाद उनको
मुझे मिटा देने की जिनने मन में ठानी है

एक सौ पाँच ग़ज़लों के इस संग्रह में प्रेमानुभूति के एक से बढ़ कर एक अनूठे चित्र उकेरे गए हैं। कहीं मिलन के दृश्य हैं, तो कहीं विरहजन्य पीड़ा से उद्भुत गिले-शिकवे और उलाहने। कहीं प्रेयसी के मांसल सौंदर्य का चित्रण है, तो कहीं उसकी बाँकी अदाओं का अंकन। चंद शेर देखना उचित होगा-

रंग सोने का है, बद चाँदी
हुस्न का कीमती खजाना है

अंगूर से अधर ये, केशर कपोल तेरे
कश्मीर-सा बदन यह गुलजार हो गया है

लेकिन आज ग़ज़ल सिर्फ हुस्नो इश्क, साकी-शराब या प्रेमिका के साथ गुफ़्तगू की कविता नहीं रह गई है। दुष्यंत ने ग़ज़ल को एक नई दिशा और नए तेवर दिये हैं। उसे जिंदगी के भीतरी से भीतरी कौने तक पहुँचा दिया है। स्वयं आचार्य दुबे के शब्दों में-

हर्म से अब नवाबों के बाहर निकल
होकर आजाद फुटपाथ पर है ग़ज़ल
महफिलों का न केवल ये श्रृंगार है
जिंदगी का समूचा सफर है ग़ज़ल

जिंदगी के इस सफर में अमीरी-गरीबी, दोस्तों का फरेब, वादाखिलापफी, संघर्ष, सांप्रदायिकता, पर्यावरण-प्रेम, पश्चिमी सभ्यता का फैलाव आदि न जाने कितने मुकाम हैं, जिनसे होकर आचार्य दुबे की ग़ज़ल गुज़री है। बानगी के तौर पर कुछ शेर देखें-

थोथे ईमान-धर्म हैं उनके
अपने वादों से जो मुकर जाते हैं

झुक गई जो कमर जवानी में
बोझ बेटी का भी रहा होगा

भाषा के स्तर पर इस संग्रह की ग़ज़ल सपाट बयानी के निकट अधिक दिखायी देती हैं। हालांकि सपाट बयानी की भी अपनी ताकत होती है, किंतु ग़ज़ल में यह शैली अधिक उपयुक्त नहीं मानी जाती आलंकारिता, सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता, वक्रोक्ति और व्यंजकता उसकी ताकत हैं। जहाँ आचार्य दुबे ने उचित शब्द-चयन और प्रतीकात्मकता का सहारा लिया है, वे स्वयं अनुभव करेंगे, वहाँ उनकी अभिव्यक्ति में अधिक निखार आया है-

दुश्मनी बेवजह नहीं होती
जख्म दिल पर दिया गया होगा

तुम जो झूठे ही रूठ जाते हो
मेरा दम सच में निकल जाता है

दो शब्द ग़ज़ल के शास्त्रीय अनुशासन के बारे में कहना आवश्यक है। रदीफ, कापिफया और बहर ग़ज़ल के अति महत्वपूर्ण अंग हैं। इन तीनों में जरा भी चूक हो आचार्यों के सफीने डूबने लगते हैं। आज उर्दू ग़ज़ल के मुकाबले हिंदी ग़ज़ल जो दोयम दर्जे पर दिखायी देती है, उसके मूल में कहने के अतिरिक्त उक्त अनुशासन का न होना मुख्य कारण है। आचार्य दुबे ने अपनी ग़ज़लों में रदीफ और काफिये का तो पर्याप्त ध्यान रखा है, किंतु बहर के मामले में वे विशेष सावधान नहीं रह पाये हैं। इसका कारण कदाचित यह है कि उनकी आत्मा एक गीतकार की है। ग़ज़लकार की नहीं। गीत में सीधे तौर पर मात्राएं गिनी जाती हैं और यह ध्यान रखा जाता है कि लय न टूटे। लेकिन ग़ज़ल में मात्राएँ तो गिनी ही जाती हैं, यह भी देखा जाता है कि

वे बहर के वांच्छित क्रम में हैं या नहीं। जैसे-

S S S S SS S S IS ISS S
पीड़ाओं पर और अधिक छा रही जवानी है
I S S I S SS S S SS SSS
सदा टीसती रहती है यह कसक पुरानी है

गीत की दृष्टि से ये दोनों पंक्तियाँ शुद्ध हैं, क्योंकि दोनों में 26-26 मात्राएँ हैं और लय में भी कोई विकार नहीं है। किंतु ग़ज़ल की दृष्टि से ये बहर से खारिज हैं। इस ग़ज़ल की बहर के अरकान हैं- फैलुन फैलुन फैलुन फैलुन फैलुन फैलुन फै अर्थात S S S S SSSS SSSS SSSS S ये क्रम से 26 मात्राएँ। स्पष्ट है कि पहली पंक्ति के 'रही जवानी' तथा दूसरी पंक्ति के 'सदा टीसती' पदों में मात्राओं का क्रम SSSS के बजाय क्रमशः I S I S S तथा I S S I S हो गया है। ऐसी भूलें संग्रह में अन्यत्र भी अनेक स्थलों पर विद्यमान हैं, जिन्हें थोड़ा सा ध्यान देकर दूर किया जा सकता है।

ग़ज़ल कहते समय ग़ज़लकार को यह छूट प्राप्त है कि बहर की माँग के अनुसार वह किसी अक्षर की मात्रा गिरा कर या उठा कर पढ़ सकता है। अर्थात् आवश्यकता होने पर लघु वर्ण में दो तथा गुरु वर्ण में एक मात्रा गिनी जा सकती है। इस संग्रह की पहली ग़ज़ल का पहला शेर है-

हुक्मरानों के आगे निडर है ग़ज़ल
ले कर विद्रोही तेवर मुखर है ग़ज़ल

स्पष्टतः दूसरी पंक्ति के 'लेकर' पद में एक मात्रा बढ़ रही है। इसमें 'लेकर' (S I) कर दिया जाए तो पंक्ति बाहर जा जायेगी। इसी प्रकार 'हर जटिल प्रश्नों का भी सरलीकरण होने लगा' पंक्ति में 'हर' एक वचन है जबकि 'प्रश्नों' बहुवचन। व्याकरण के अनुसार विश्लेषण और विशेष्य का लिंग और वचन एक ही होना चाहिए। 'हर' के स्थान पर 'सब' का प्रयोग करने से यह त्रुटि दूर हो सकती है।

इस सब के बावजूद 'कसक' ग़ज़लों में भाषा की सादगी और अभिव्यक्ति की ईमानदानी मन मोहती है। आशा है कि साहित्य जगत में आचार्य दुबे की अन्य कृतियों की भाँति इस कृति का भी समादर होगा।

समीक्ष्य पुस्तकः 'कसक'
समीक्षकः ब्रह्मजीत गौतम
ग़ज़लकारः आचार्य भगवत दुबे
प्रकाशक : अनुभव प्रकाशन, साहिबाबाद-5
मूल्य : 120/-

आधी आबादी

पैत्रिक संपत्ति में बेटियों को बराबर का हिस्सा

विचार कार्यालय, दिल्ली। पिछले दिनों केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हिंदू उत्तराधिकार कानून में संशोध्न संबंधी विधेयक को मंजूरी प्रदान कर पैत्रिक संपत्ति में बेटियों को बराबर का हिस्सा दिलाने की दिशा में ठोस कदम उठाया है। उल्लेखनीय है कि पुरुष केंद्रीय पारिवारिक सामाजिक व्यवस्था में पैत्रिक संपत्ति का वारिस परंपरा के केवल बेटों को ही माना जाता रहा है। सदियों से बरकरार इस भेदभाव वाली सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं के हक हुकूक को जबरिया खारिज करने के चलन की वजह से बचपन से ही घोर उपेक्षा और दायम दर्जे का बर्ताव औरतों के साथ किया जाता रहा है। तमाम कानूनी समझ के बावजूद वह अपने अध्किार की लड़ाई नहीं लड़ पातीं ताजा संसोधन से इतना तो तय है कि बेटियों को 'परदेशी' बता, संपत्ति से बेदखल करने और बेटे को ही मालामाल करने की साजिश अब नहीं चलेगी। बेटियाँ अब पिता की तमाम चल अचल परिसंपत्ति, मसलन खेत खलिहन, मकान जमीन और जमा पूँजी पर अपना हक जाता सकेगी।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि रूढ़िवादी मानसिकता जगत में जीने वाले आम मध्यवर्गीय भाइयों के लिए निश्चित रूप से यह संशोधन विधेयक डरावना होगा, किंतु केंद्रीय मंत्रिमंडल के इस ताजा पफैसले से मुसलमान एवं ईसाई औरतें वंचित रहेंगी, क्योंकि उनपर यह कानून लागू नहीं हो सकेगा। हाँ, यदि भविष्य में समान नागरिक संहिता लागू होती है तो कम से कम इन्हें आर्थिक लाभ तो मिलेगा ही। सच कहा जाए पुरुष वर्चस्व वाले आज के समाज में औरतों को समान अधिकार दिलाकर उनकी सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ करने के प्रति सरकारी तंत्र तथा समाज के लोग प्रायः उदासीनता ही बरतते रहे हैं। इसलिए सबसे जरूरी है लोगों के दिमाग में यह बिठाना कि बेटा-बेटी का अमानवीय विभेद अधिक दिनों तक नहीं चलेगा। इस दृष्टि से सरकार के द्वारा उठाया गया यह कदम स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में एक ठोस कदम माना जाएगा।

राष्ट्रीय पर्व-त्योहार

☐ *पी. आर. वासुदेवन "शेष"*

हमारा देश भारत विविध संस्कृतियों का अनुपम राष्ट्र हैं। यहाँ संस्कृतियों की जो स्वच्छंदता दिखाई देती है वह विश्व पटल पर अन्यत्र दुर्लभ है। यह हम भली भाँति जानते हैं कि संस्कृति का स्वरूप निर्माण जब चाहें तब नहीं होता है। अपितु पीढ़ी के अनवरत सद्प्रयास के इसके युगों तक रहनेवाली आधरशिला तैयार होती है। अतएव संस्कृति का उदम, अकस्मात और सद्यः नहीं होता है। अपितु अपम्परागत मान्यताओं, आस्थाओं और जीवन मूल्यों के आधर पर होता है। इसके आधर भूत तत्वों में धार्मिक सिद्धांत सामाजिक परम्पराएँ और नीवन दृष्टिकोण प्रधान रूप से होते हैं। धर्म संस्कृति का आवश्यक अंग होने के कारण हमारे अनेक पवित्र और स्वच्छद कर्मो को उत्पन्न करता है। पर्व तिथि और त्योहार संस्कृति के जीवन प्रमाण हैं।

हमारे देश में त्योहारों का आगमन या आयोजन ऋतु चक्र से होता है। हमारी सांस्कृतिक चेतना का जीवंत प्रतिनिधि के रूप में है जिसके हमारी सामाजिक और राष्ट्रीय मान्यताएँ झाँकती हुई दिखाई देती हैं। हमारी मनोवृत्तियाँ इसके स्पष्ट होती है। हमारी जातियाँ दिखाई देती हैं, हम क्या हैं और हमारी अवधारणाएँ क्या हैं, हम दूसरों की अपेक्षा क्या हैं या हम दूसरों का क्या समझते हैं। इन सभी प्रश्नों का उत्तर और स्पष्टीकरण इन त्योहारों के माध्यम से होता है। अतएव हमें अपने यहाँ संपन्न होने वाले त्योहारों का यथोचित उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है-

रक्षा बंधन-

रक्षाबंधन का त्योहार राखी, रखड़ी, सलोनी कई नामों से चर्चित है जो वर्षा ऋतु की श्रावण पूर्णिया के दिन श्रद्धा, विश्वास और प्रेम के त्रिकोण से प्रकट होता है। प्राचीन काल से इसके प्रति अनेक धारणाएँ रहीं हैं लेकिन आधुनिक इस त्योहार का खुला और सच्चा रूप भाई-वहन के परस्पर स्नेह और मंगल भावनाओं के द्वारा सामने आता है। पूरे देश में यह त्योहार हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। रक्षा बंधन के त्योहार में बहने अपने भाइयों की कलाई में राखी (धागा) बाँधती हैं और आरती उतारती हैं। तिलक लगाती हैं। उसकी लम्बी आयु, स्वास्थ्य की कामना करती हैं। बदले में भाई बहन को कुछ उपहार देता है और उसकी विपदा में रक्षा, स्नेह का आर्शीवाद देता है। यह बंधन बड़ा पाक और पवित्र होता है।

दशहरा अथवा विजयादशमी-

प्राचीन काल में दुर्गा के उपासक क्षत्रिय लोग वर्षा बीतने पर अपने कार्य का स्मरण करते थे। दुर्गा की नवरात्रि भर उपासना करते थे तथा नवरात्रि की अंतिम नवमीं को दुर्गा-पूजन करते थे, अपने अस्त्र-शस्त्र ठीक करते थे। दूसरे दिन दशहरा पड़ता है। उस दिन उत्सव मनाकर अपनी युद्ध यात्रा पर आखेट यात्रा पर प्रस्थान करने के लिए शुभ माना जाता है। इय त्योहार के मनाने का एक अन्य मुख्य कारण यह है कि इस दिन संपन्न चंद्रजी ने रावण का वध कर उस पर विजय पाई थी। इस अवसर पर मेघनाथ, कुंभकरण और रावण के पुतले जलाए जाते हैं। असत्य पर सत्य की विजय का त्योहार कहलाता है।

दीपावली अथवा दीवाली-

यह त्योहार विशेषकर वैश्य वर्ग का माना जाताहै। राष्ट्रीय स्तर पर निष्ठा और श्रद्धा के रूप में मनाया जानेवाला त्योहार दीपावली का त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को समशीतोषण ऋतु की मुस्कान दीपों की सुंदर और मनमोहक लौ के द्वारा प्रस्तुत करके हमारे ज्ञानदीप और प्रज्ज्वलित करने की सचेतना प्रदान करता है। कहा जाता है कि कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को महाराजा संपन्नचंद्र ने लंका विजय करके अयोध्या में पदार्पण किया था। उनके आगमन के उपलक्ष्य में उस समय अयोध्या नगर में दीप मालिका सजाई गई। उसी घटना की स्मृति में आज भी दीपावली मनाई जाती है। आतिशबाजी, पटाखे, बम छोड़े जाते हैं। सब मिलकर इस त्योहार को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। आपस में खुशियाँ एवं मिठाईयाँ बाँटते हैं। बड़ी आत्मीयता, आनंद एवं सौहार्द का त्योहार है।

होली-

त्योहारों का शिरोमणि होली का त्योहार चैत्रमास कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को वसंत ऋतु की मधुर बेला में जब आ धमकता है तब मात्र राध कृष्ण और गोपियों की होली का हुड़दंग और रसाचार हमको नहीं ललचाता और तरसाता है अपितु अपनी आप बीती कहानी भी हमें इसकी मधुरता को याद दिलाने लगती है। इसी दिन से नया साल भी प्रारंभ होता है। नया वर्ष नये उत्साह को लेकर आता है। होलिका के विषय में यह कहानी प्रसिद्ध है। कि हिरण्य कश्यप का पुत्र प्रह्लाद हरिभक्त था और वह स्वयं हरि विरोधी था। उसने एकबार होलिका के प्रह्लाद के साथ अग्नि में बैठकर उसे जला देने की आज्ञा दी। हरिमाया से होलिका स्वयं जल गई और भक्त प्रह्लाद बच गया। तभी से होलिका दहन की प्रथा चल पड़ी। इस त्योहार पर रंग गुलाल राक दूसरे पर डालते हैं। एक दूसरे के साथ गले मिलते हैं। कहा जाता है कि दुश्मन भी होली के दिन दोस्त बन जाते हैं। इसे रंगों का त्योहार कहा जाता है। चारों तरपफ खुशियाँ ही खुशियाँ छा जाती हैं। सभी लोग एक ही रंग में रंग जाते हैं। लगता है जैसे एक ही बगिया के विभिन्न फूल हों। मिठाइयाँ बांटी जाती हैं। गाने, नाच गा कर होली गल्ली मोहल्ले में बच्चे एक दूसरे पर रंगों के भरी पिचकारियाँ छोड़ते हैं। सभी गिले, शकवे, भेदभाव को मिटाकर यह त्योहार भाईचारा, आपसी सद्भाव को जाग्रत करता है। मथुरा में

यह त्योहार बेहद लोकप्रिय है।

ईद-

भारतीय त्योहारों में ईद भी अहम् त्योहार है। मुसलमान भाई इसे बड़े चाव से मनाते हैं। इस दिन वे तड़के मस्जिद जाकर ईद की नमाज अदा करते हैं। अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हैं कि देश में अमन एवं शांति कायम रहे। भाईचारा रहे। हिंदू भाई मुसलमान भाई को गले लगाकर ईद मुबारक कहता है। मिठाई एवं सेवैंया खाता है। बाजारों में ईद की चहल पहल रहती है। मुसलमान भाई ईद की सफेद टोपी, नया वस्त्र धरण करते हैं। चहूँ ओर सौहार्द का वातावरण रहता है।

पौंगल-

यह दक्षिण के प्रांत तमिलनाडु में मनाया जाता है। पफसलों की कटाई किसान करते हैं। गाय की पूजा करते हैं। यावल की खिचड़ी पकाई जाती है। सूर्य देवता की पूजा की जाती है। गन्ने की कटाई होती है। किसानों के त्योहार के नाम से जाना जाता है। किसान हर्षोल्लास से यह त्योहार मनाते हैं। घर, बैल, गायों को सजाते हैं। उनकी पूजा अर्चना करते हैं। उन्हें नया परिधान पहनाकर गली गली घुमाते हैं। व्यवसायी के लिए यह शुभ संकेत लेकर आता है।

ओणम-

यह दक्षिण के प्रदेश केरल का प्रसिद्ध त्योहार है। इस दिन फसलों की कटाई होती है लोग अपने घरों में तरह तरह की रंगोलियाँ एवं दीप जलाकर नाचते और गीत गाते हैं। हाथियों को सजाया जाता है मंदिरों में पूजा-अर्चना होती है।

युगादी-

यह दक्षिण के प्रदेश 'आँध्र प्रदेश' में मनाया जाता है। इसे नये वर्ष के रूप में स्वागत करते हैं। सभी लोग सांप्रदायिक भेदभाव को भुलाकर इसे बड़े सौहार्द से मनाते हैं। आनंद एवं उल्लास होता है। नये आभूषण, वस्त्र खरीदते हैं। दूसरों को मिलकर बधाईयाँ देते हैं। मंदिरों में जाकर पूजा अर्चना करते हैं।

बैसाखी-

यह उत्तर स्थित प्रदेश पंजाब का प्रसिद्ध त्योहार है। पफसलों की कटाई कर किसान बाजार में बेचने जाता है और खुशियाँ मनाता है। नाचता है, भांगड़ा करता है। गांवों में मेले लगते हैं। मेले में लोग एक दूसरे से मिलकर खुशियाँ बांटते हैं। मेले में खरीददारी करते हैं। अच्छे-अच्छे रंगीन पोशाक पहनते हैं। महिलाएं गीत गाती हैं। गुरुद्वारों को खूब सजाया संवारा जाता है। कीर्तन होता है। प्रसाद एवं लंगर बांटे जाते हैं। पंजाब का यह त्योहार खेती की एक किसानों की खुशहाली का त्योहार है।

इसी प्रकार भारत के अन्य सभी त्योहार गणेशोत्सव (महाराष्ट्र) महावीर जयंती, नागपंचमी, बिहार में छठपूजा, गुरु रविदास महोत्सव, पारसी दिवस क्रिसमस ;बड़ा दिनद्ध बड़ी धूम धम से मनाए जाते हैं।

ये सभी त्योहार समाज और राष्ट्र की एकता समृद्धि के लिए प्रेम, एकता, मेल मिलाप के प्रतीक हैं।

सांप्रदायिक एकता धार्मिक समन्वय, सामाजिक समानता तो हमारे भारतीय त्योहार समय-समय पर घटित होकर हमारे अंदर उत्पन्न करते चलते जातीय भेद-भावना और संकीर्णता के धूँध को ये त्योहार अपने अपार उल्लास आनंद के द्वारा छिन्न-भिन्न कर देते हैं।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये त्योहार अपने जन्म काल से लेकर अब तक उसी पवित्रता और सात्विकता की भावना को संजोए हुए हैं। युग परिवर्तन और युग का पटाक्षेप इन त्योहारों पर कोई प्रभाव नहीं डाल सका।

इन त्योहारों का रूप चाहे बड़ा हो, चाहे छोटा, चाहे एक क्षेत्र विशेष तक सीमित हो, चाहे सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र को प्रभावित करने वाला हो, अवश्यमेघ श्रद्धा और विश्वास नैतिकता और विशुद्धता का परिचायक है। इन त्योहारों से कलुषता और हीनता की भावना समाप्त होती है। सच्चाई निष्कपटता तथा आत्मविश्वास की उच्च और श्रेष्ठ भावना का जन्म होता है। मानवीय मूल्यों और मानवीय आदर्शों को स्थापित करनेवाले हमारे देश के त्योहार तो श्रृंखलाबद्ध हैं। भारतीय त्योहार राष्ट्र का गौरव हैं। सभी त्योहार विशुद्ध प्रेम, भेदभाव और सहानुभूति का महत्वाँकन करते हैं। शांति, अहिंसा, भाईचारा, परस्पर प्रेम, सद्भाव एवं राष्ट्रीयता ही इन त्योहारों के आयोजन का मुख्य लक्ष्य है। विविधता में एकता ही इसका मूलमंत्र राष्ट्रीय है।

संपर्कः जी-4, अक्षया फ्लैट्स
55, इरूसप्पा स्ट्रीट
ट्रिपिलिकेन, चेन्नई-5

PRITHVIRAJ JEWELLERY

25/3870, Regharpura,
Karol Bagh
New Delhi- 110005
Phone:- 011-25825745
011-25713774
Mobile No.:- 9811138535
Specialist : Bangal Set, Chain & Jewellery
All kinds of Export manufacturing of Gold Ornaments.
Deals in Exports Jewellery.

Prop.:
Raj Kumar Samanta
Sambhu Nath Samanta

धर्म और उसका राष्ट्रीय स्वरूप

□ *डॉ॰ श्रीरंजन सूरिदेव*

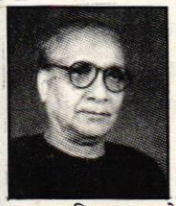

धर्म का उद्धेश्य जितना ऊँचा होता है, उसकी क्रियाशीलता भी उतनी ही अद्भूत और प्रभावकारी होती है। धर्म की प्रेरणा से मनुष्य जितना कठोर हो जाता है, उतना और किसी प्रेरणा से नहीं। इसी प्रकार, धर्म की प्रेरणा से मानव जितना कोमल हृदय का हो जाता है, उतना और किसी प्रवृत्ति से नहीं। यही नहीं, किसी धर्म में विश्वास करना देशभक्ति का या राष्ट्र प्रेम का एक अंग हो जाता है। इस दृष्टि से धर्मों में सामंजस्य का विधान या समन्वय की स्थापना अतिशय कठिन काम है।

अनेकता में एकता और एकता में अनेकता भारतीय धर्म की विशेषता है। हम सब मनुष्य एक होते हुए भी आपस में अलग-अलग हैं। मनुष्य-जाति की दृष्टि से हम सब मनुष्य एक हैं, परंतु व्यक्ति की दृष्टि से सब अलग-अलग हैं। मनुष्य पुरुष होने के नाते स्त्री से भिन्न है, किंतु मनुष्य होने के नाते स्त्री-पुरुष एक ही हैं। मनुष्य होने के नाते अन्य जीव-जंतुओं से वह पृथक् है, परंतु प्राणी होने के नाते सब जाति एक समान हैं। समत्व की यह दृष्टि ज्ञानयोग का विषय है। ज्ञानयोग के ही माध्यम से हम मानव-जाति और प्राणिजगत् में एकत्व का दर्शन कर सकते हैं। प्रत्येक प्राणी, अर्थात् पेड़-पौधे, कीट-पतंग से लेकर मानव जैसे श्रेष्ठ जीव में एक ही प्रभु विराजमान हैं। प्रत्येक जीव के आत्मा की परमात्मा को जान लेना, एकाकार हो जाना या उसका साक्षात्कार करना-यही धर्म है। धर्म केवल सुनने या मान लेने की चीज नहीं है। समस्त मन-प्राण से विश्वास की वस्तु के साथ एक हो जाना ही धर्म है।

धर्म ही जातीय या राष्ट्रीय जीवन की मूलभित्ति है। धर्म ही राष्ट्रीय जीवन का प्राण है। जीवन का अस्तित्व धर्म से अविच्छिन भाव से जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार मछली पानी में अपनी शक्ति से प्रेरित है, पानी की भूमिका उसके तैरने की क्रिया में एक सहायक की है। उसी प्रकार मानव के उत्कर्ष और विकास की प्रक्रिया में धर्म की भूमिका एक सहायक की होती है। मानव बिना धर्म के अपनी गति की क्रिया नहीं कर सकता। संसार का प्रत्येक गत्यात्मक स्थिति धर्म की सहायता से ही संभव है।

धर्म के अनेक रूप हो सकते हैं, पर सबका लक्ष्य एक ही है--मोक्ष प्राप्ति हेतु सभी धर्मोपासक भिन्न-भिन्न मार्गों से इसी एक लक्ष्य पर पहुँचते हैं। ये मार्ग मुख्यतः चार हैं : कर्ममार्ग, भक्तिमार्ग, योगमार्ग और ज्ञानमार्ग। ये मार्ग भी एक दूसरे से सर्वथा अलग नहीं हैं, वरन् एक मार्ग का तिरोभाव दूसरे में हो जाता है। मार्ग के ये विभाग मनुष्य के प्रधान गुण या उसकी प्रमुख प्रवृत्ति के अनुसार किये गये हैं। अन्यथा कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होता, जिसमें कर्म करने के अतिरिक्त दूसरी कोई क्षमता न हो, जो अन्य भक्त होने के अतिरिक्त और कुछ न हो, अथवा जिसके पास केवल ज्ञान के सिवा और कुछ न हो या पिफर योग को छोड़कर और कोई समर्थ्य न हो। निश्चय ही, ये चारों मार्ग एक लक्ष्य पर पहुँच कर एक हो जाते हैं। सारे धर्म और कर्म अथवा उपासना और अराधना की समस्त साधन-पद्धतियाँ हमें उसी एक लक्ष्य, यानी मोक्ष की ओर ले जाती हैं।

मुक्तिलाभ की चेष्टा की अभिव्यक्ति प्रत्येक धर्म में पाई जाती है। यही सारी निःस्वार्थता की, सारी नैतिकता की आधारशिला है। समग्र रूप से निःस्वार्थ और नैतिक हो जाना ही जीवन का चरम लक्ष्य है। केवल अपने शरीर की रक्षा करना क्षुद्र व्यक्तित्व का लक्षण है। इसलिए समस्त दार्शनिक और नैतिक शिक्षाओं का लक्ष्य है- व्यक्तित्व को क्षुद्रता से मुक्त कर अनंत विस्तार में विलीन कर देना। जो संपूर्ण रूप से निःस्वार्थी हो जाता है, वह विश्व के साथ एकरूप हो जाता है। इस प्रकार की वैश्विक एकरूपता की प्राप्ति सब धर्म का लक्ष्य है।

निःस्वार्थ कर्म द्वारा मानव-जीवन के चरम लक्ष्य, मुक्ति को प्राप्त कर लेना ही कर्मयोग है। हमारा प्रत्येक स्वार्थपूर्ण कार्य अपने इस लक्ष्य तक हमारे पहुँचने में बाधक होता है। ठीक इसके विपरीत प्रत्येक निःस्वार्थ कर्म हमें अपने चरम लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है। अतएव नैतिकता की यही परिभाषा हो सकती है कि जो स्वार्थी है वह अनैतिक है और जो निःस्वार्थी है वह नैतिक है।

आज समाज में मध्यमवर्ग की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। न तो वह उच्चवर्ग की भाँति सुविधा-भोगी है और न निम्न वर्ग की भाँति श्रमजीवी । सुविधा और श्रम की दुविधा से ग्रस्त मध्यमवर्गीय जन सामाजिक रूढ़ियों और धार्मिक आडंबरों से मुक्त नहीं है। उच्च वर्ग की प्रभुता और प्रदर्शन की होड़ में भी यह पीछे नहीं रहना चाहता। परिणामतः वह वर्ग दुहरी मार और भार से त्रस्त है।

गृहस्थों की बात छोड़कर हम यदि देश-विदेश के बृहत् साधु समाज की जीवन प्रक्रिया को देखें तो पता चलेगा कि जिन साधकों ने बाहरी परिग्रह को छोड़कर बैराग्य धारण किया है, उनमें से अनेक कमोवेश आंतरिक परिग्रह से ग्रस्त हैं। उनमें विवेक तो है सच्चा वैराग्य नहीं है। अपेक्षित सद्विवेक से वे वंचित हैं। उन्होंने बाहरी संसार छोड़ा है, पर भीतर के संसार के प्रति उनकी आसक्ति विस्तृत और प्रगाढ़ है। इसी का परिणाम है कि समाज और देश में सांप्रदायिक विद्वेष फैलता जा रहा है, धर्म के नाम पर युद्ध,

शेष पृष्ठ 40 पर...

...पृष्ठ 37 का शेषांश

मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना में लेखकों का योगदान : संदर्भ अणुव्रत

□ *चंद्र कुमार 'सुकुमार'*

भूलोक सत्व एवं तम से संतुलित राग का लोक है। इस लोक में सात्विक गुण के संचित कोश का नाम देवत्व है, तो तामसिक गुणों अद्भण्डार का नाम दानवता। सात्विक एवं तामसिक गुणों के मिश्रण को राजसिक नाम दिया गया है। राजसिक गुणों के संकलन को मनुष्य शब्द से संज्ञामित किया गया है। जो मनुष्य अपने सात्विक गुणों की वृद्धि करते हुए तामसिक गुणों से मुक्त हो जाता है, वही इस लोक में पूज्य बन जाता है, वरेण्य बन जाता है। प्रणम्य बन जाता है, प्रातः स्मरणीय बन जाता है। इसी क्रम में जो मनुष्य सात्विकता की पराकाष्ठा पर पहुँच देवत्व प्राप्त कर लेता है, उसे हम अवतार अथवा तीर्थंकर शब्द से संज्ञापित, विभूषित कर अपनी संपूर्ण श्रद्धा, भक्ति और आस्था-निष्ठा अर्पित कर उसकी चरण वंदना करते हैं। इस सोपान से एक सोपान नीचे अवस्थित सत्पुरुषों को हम ऋषि या मुनि मान कर पूजते हैं, उनका आर्शीवाद ग्रहण करते हैं और उनके द्वारा प्रशस्त मार्ग का अनुसरण कर अपने जीवन को सफल बनाते हैं।

किंतु इसके विपरीत ऐसे अनेक प्रमाण हमारे सम्मुख यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखरे पड़े हैं कि इसी भूलोक में तामस गुणों के भंडार से व्यक्तियों ने राक्षसत्व का बिकास किया है और आज भी कर रहे हैं। इसी राक्षसवृत्ति से संपन्न लोगों ने मनुष्य के शान्त व सुखी जीवन को अपने कुलिश क्रूर कराल प्रहारों से आक्राँत कर जीवन को नारकीय यातनाओं से आच्छादित किया है। इस त्रासद स्थिति को विकट से विकटतर बनाने का कार्य आज हमारा विज्ञान संपादित कर रहा है। यथार्थतः विज्ञान भाव सत्ता से रहित बौद्धिक सत्ता की क्रीड़ा है। अर्थात् हृदयहीनता ही विज्ञान का दूसरा नाम है। इसी हृदयहीन विज्ञान द्वारा विकसित एवं उन्नत भौतिक संसाधनों ने एक ओर हमें अनेकानेक सुविधायें तो प्रदान की हैं, पर दूसरी ओर हमारी शांति एवं सुख को लील भी लिया है। इस विज्ञान द्वारा प्रदत्त संसाधनों ने मनुष्य को हृदयहीन बना दिया है। उसकी संवेदनाएँ मृतप्राय हो चुकी हैं। लक्ष्य है सर्वाधिक भौतिक समृद्धि प्राप्त करना। इसी स्वार्थ की पूर्ति हेतु वह हर प्रकार का भ्रष्ट, कुत्सित व घिनौना मार्ग अपनाने में कोई संकोच नहीं करता। यह एक संक्रामक रोग है जो स्वस्थ से स्वस्थ व्यक्ति को देखते ही देखते घेर लेता है। इसी विकराल स्थिति की परिणति है परिवारों का विघटन और व्यक्ति की टूटन। यही बिखराव और टूटन आज के मनुष्य की विक्षिप्तावस्था का आधार है।

कुंठित, लुंठित एवं विखंडित व्यक्ति में; हृदयहीनता और संवेदनशून्यता के वातावरण में हम विवेक, प्रेम और प्रेमल व्यवहारऋ दया व उदारता, अपनत्व और समात्म भाव, सहानुभूति व सहयोग, निष्पक्षता व न्यायप्रियता, अहिंसा व अपरिग्रह, अहम् का त्याग व धार्मिक सामाजिक सहिष्णुता, आत्मबल और विश्व बंधुत्व जैसे महान गुणों की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? वास्तव में हमारे प्राचीन ग्रंथों में इस संसार को विषवृक्ष बताया गया है, आज वह अपने साकार एवं सापेक्ष रूप में अवस्थित है। कहा गया है कि-

'संसार विषवृक्षस्य द्वे एवं मधुरे पफले।
काव्यामृत रसास्वादः संगम सज्जनौ सह।"

लगता है यह संसार सत्यमेव ही विषवृक्ष है। मानवीय मूल्यों का ह्रास आज, इस वर्तमान युग में जितना हुआ है उतना पहले कभी नहीं हुआ। यह तो पतन की पराकाष्ठा है, जहाँ नारकीय यातनाओं के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं बचा है। इससे त्राण एक, केवल एक ही मार्ग है कि हम मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करें। मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना तब ही हो सकती है जब हम मनुष्य बनें। वह मनुष्य, जो केवल बुद्धि से संचालित नहीं होता, बल्कि हृदयस्थ रसार्णव की हिलौरों के झूले पर भी झूलता है। अर्थात् जो संवेदनाशून्य नहीं है, बल्कि संवेदनशील है। संवेदनशीलता ही हमें आज की विकट विषैली स्थितियों से उबार सकती है। एक नए मानव का विकास कर मृतप्राय मानवता में नए प्राण पफूंक सकती है। संवेदनशीलता ही समात्मभाव की आधारशिला है। जिस पर शांत व सुखी मानव जीवन रूपी भवन निर्मित होता है। समात्मभाव में रस है। रस आनंद का ही दूसरा नाम है। समात्मभाव जीवन की अनेक इकाइयों का ऐसा आत्मीय भाव है जो न तो इकाई की कठोर सीमा को प्राप्त हो सकता है और न इकाई के आधार को खंडित करता है। समात्मभाव प्रकृति की स्वार्थयिकता और बुद्धि की उदासीनता दोनों से मुक्त है। उधर आत्मा न इकाई में रूढ़ है न इकाइयों की आग्रहविहीन केंद्रीयता उसके विस्तार में बाधक है। इस विलक्षण स्वभाव के कारण ही आत्मा रस का, आनंद का स्वरूप है। अर्थात आनंद का उदय इकाई की सीमा के आग्रह को त्याग कर दूसरी इकाइयों के साथ सक्रिय और सृजनात्मक समात्यभाव में होता है।

आज मनुष्य सत्तालोलुप होकर सभ्यता और संस्कृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है। भौतिक संसाधनों की प्रचुरता एवं सहज उपलब्धता ने इस लोलुप मनुष्य के अहम को चरम सीमा पर पहुँचा कर स्वयं मनुष्य एवं मनुष्यता के विनाश के मार्ग को प्रशस्त कर दिया है। अनैतिक आचरण एवं दुर्व्यसनों ने भारतीय समाज को विषमताओं के अँधकूप की ओर धकेल दिया है। जीवन के प्रति भौतिक दृष्टिकोण ने लोगों को स्वार्थान्धता के मकड़जाल में जकड़ दिया है। ऐसी स्थितियों में न केवल भारत को वरन विश्व को भी भौतिक उत्थान से भी अधिक आध्यात्मिक संबल की आवश्यकता है। अणुव्रत आंदोलन ने युग निर्माण की दिशा दृष्टि प्रदान कर नई क्रांति का सूत्रपात कियाहै। अणुव्रत की सबसे

बड़ी और अभिवन विशेषता ही यह है कि कोई भी व्यक्ति कहीं भी रहता हुआ सरलता से इसका फलन कर सकता है।

अणुव्रत आंदोलन नैतिक जागरण द्वारा जन जन को सन्मार्ग की ओर प्रेरित कर आत्मबल का विकास करता है। यह हृदय परिवर्तन के माध्यम से कार्य करनेवाला एक सघन अभियान है। दूसरे शब्दों में यह चरित्र निर्माण का आन्दोलन है। चरित्र की नींव गहरी और सुदृढ़ होती है जो हृदय और मस्तिष्क पर नियंत्रण रखती है। इस दृष्टि से यह संस्कार निर्माण का अभियान है। अणुव्रत असल में मन की खुराक है, इसीलिए वह नैतिकता के पुनरूज्जीवन में सक्रिय योगदान प्रदान करता है और मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाता है। स्मरण रहे कार्य और कारण शुद्ध होते हैं तो परिणाम भी शुद्ध होता है। इस रूप में अणुव्रत जीवन शुद्धता का आंदोलन है। फलतः संत्रस्त मानवता को त्राणदाता और मानव समाज के सार्वभौम उत्थान व संस्कार का महायज्ञ है जो वैयक्तिक उत्कर्ष के साथ सामाजिक उन्नति की भूमिका भी तैयार करता है और राष्ट्रीय समात्मभाव विकसित कर राष्ट्रीय गौरव की संरक्षा व सुरक्षा भी करता है। जन-जन के नैतिक एवं सांस्कृतिक उद्धार एवं उत्थान को संभव बनाता है। अणुव्रत मानव मात्र के लिए संग्रहन सूत्र है जो मानव को मानव से जोड़कर विश्व-मानव का सृजन करता है। यह सही अर्थ में मानव धर्म का प्रतीक है। सत्य तो यह है कि हृदय से बुद्धि का, आचार से विचार का और कथनी से करनी का समन्वय हुए बिना आत्म साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त ही नहीं होता। आज से संघर्षशील मानव में आत्मद्रोही दुष्प्रवृत्तियों से अधिक मोर्चा लेने की क्षमता और सामर्थ्य यदि किसी में है तो वह अणुव्रत में है। क्योंकि जीवन के बाह्य एवं आंतरिक पक्षों में अणुव्रत के द्वारा सहज ही संतुलन स्थापित किया जा सकता है। यह जीवन दर्शन और समाज व्यवस्था की पृष्ठभूमि है। इसलिए यह अहिंसात्मक प्रतिकार का अमोघ साधन है।

भारत के दृष्टाओं ने सहस्त्रोंवर्ष पूर्व मानव समाज के उत्थान का, उसे नैतिक विकास का जो तत्व बुर्द्धिगम, हृदयंगम एवं आचरर्णगम कर लिया था उसी का अभिनव आवृत्ति अणुव्रत आंदोलन ने सर्वधर्म समन्वय का मार्ग प्रशस्त किया है, क्योंकि यह असाम्प्रदायिक और सार्वभौम है। यही नए मान, मानवता और सौहार्दपूर्ण बंधुत्व की भावना का विकास कर मानव की संहारक प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर सकता है और करके रहेगा। आण्विक युद्ध को रोकने का एकमात्र उपाय अणुव्रत साधना है। स्मरण रहे अणुबम विनाश का अस्त्र है तो अणुव्रत जीवन का मंगलमयदर्शन है। अणुबम विष है तो अणुव्रत अमृत है। अणुबम प्रलय का वाहक है तो अणुव्रत जीवन का गायक है। स्पष्ट है कि अणुव्रत स्वीकार किए बिना कोई भी व्यक्ति, समाज देश का विश्व सुख शांति से नहीं जी सकता।

अणुव्रत की आचार संहिता के मूल बिंदुओं का यहाँ स्मरण कर लेना हमारे लिए सार्थक रहेगा। जो कि निम्नांकित है-

1. मैं किसी भी प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। न आत्महत्या करूँगा और न भ्रूण हत्या।
2. मैं आक्रमण नहीं करूँगा और न आक्रामक नीति का समर्थन करूँगा। विश्व शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
3. मैं हिंसात्मक एवं तोड़-पफोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
4. जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को उफंच नीच नहीं मानूंगा, अस्पृश्य नहीं मानूंगा और मानवीय एकता में विश्वास करूँगा।
5. मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूंगा और सांप्रदायिक उत्तेजना नहीं पफैलाउफंगा।
6. मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा और अपने लाभ के लिए दूसरे को हानि नहीं पहुंचाऊंगा, न छलनापूर्ण व्यवहार करूँगा।
7. मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
8. मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
9. मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।
10. मैं व्यसन मुक्त जीवन जीऊंगा। अर्थात् मादक एवं नशीले पदार्थों यथा शराब, गांजा, चरस, हेराइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
11. मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। स्पष्ट है कि हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूंगा और पानी का अपव्यय नहीं करूँगा।

कंटकाकीर्ण वैश्वि धरातल पर शांत एवं सुखी जीवन की सर्जना, लेखन के प्रति संकल्पिक-समर्पित आस्था के बिना संभव नहीं है। सकारात्मक सोच के धनी रचनाकार ये कार्य सहज ही कर लेते हैं, किंतु आत्मसाक्षात्कार करने की अनिवार्य प्राथमिकता यहाँ भी अवस्थित है। सत्य तो यह है कि जो लेखन मात्र अर्थोपार्जन के उद्देश्य से किया जाता है, वह प्रायः प्रभावहीनता की बेड़ियों में जकड़ जाता है, किंतु जो लेखन कीर्ति काया प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जाता है, वह हृदय और मस्तिष्क पर सीधा असर करता है। क्योंकि वह लेखकीय ध्यानावस्था की अनायास अभिव्यक्ति होता है। अनायास अभिव्यक्ति स्वार्थ, लालच या व्यक्ति के अहम् भाव से मुक्त होती है। भारतीय वांग्मय लेखकीय ध्यानावस्था की अनायास अभिव्यक्ति को स्पष्ट, मुखर एवं अकाट्य प्रमाण है। मन और आत्मा जब एकरूप हो जाते हैं और शरीरावस्था गौण हो जाती है तब यह ध्यानावस्था प्राप्त होती है। वास्तव में ध्यानावस्था वरदान है, अमृत-तत्व इसी की नाभी में अवस्थित है।

मैं क्षमा याचनापूर्वक कहना चाहूँगा कि जो लेखन केवल आतंक एवं वासना को शब्द देता है, वही व्यक्ति और समाज के हृदय में विष घोलता है। आज के लेखक प्रायः यही कर रहे हैं। ऐसे लेखकों द्वारा रचित साहित्य भले ही बिक खूब रहा हो और आज के प्रचार माध्यम इसी साहित्य के प्रचार प्रसार में भले ही एड़ी से चोटी तक को जोर लगा रहे हों, किंतु यह केवल चार दिन की चांदनी है। लय, जीवन की लय तोड़ कर प्रलय की ओर धकेलने का कोई भी प्रयास

न कभी सफल हुआ है और न होगा। कला के नाम पर जो आतंक, भय और नग्नता व्यक्ति के समक्ष परोसी जा रही है वह व्यक्ति और समाज दोनों के लिए आत्मघाती सिद्ध हो रही है। समाज का दर्शन होने का दावा करनेवाले साहित्य को समाज की केवल विकृतियां ही क्यों दिखाई दे रही हैं, सुकृतियां क्यों नहीं दिखाई देती? और चलो, आज के रचनाकारों ने विकृतियों का दिग्दर्शन कराना अपने लेखन का एकमात्र लक्ष्य बना लिया है तो उसका प्रस्तुतीकरण इस प्रकार से तो कीजिए कि पाठक को उन विकृतियों से मुक्त होने की प्रेरणा मिले। विकृतियों के प्रति उसके मन में घृणा उत्पन्न हो। वह उन्हें त्याज्य समझने और मानने लगे। अनैतिकता, अश्लीलता, सांप्रदायिकता और हिंसा से वह विमुख हो जाए।

यदि आज का लेखक, आज का रचनाकार इतना भर भी कर सकेगा तो हम उसे अपनी कृतज्ञता अर्पित करेंगे। मौजूदा लेखन एवं लेखक के समक्ष भौतिक समृद्धि की अँधी दौड़ ने एक चुनौती प्रस्तुत कर दी है। आइए हम इस चुनौती को स्वीकार करें और मानवीय मूलें की पुनर्स्थापना के इस महायज्ञ में अपनी आहूति देकर अपने लेखकीय दायित्व का सपफल निर्वहन कर भावी पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करें। आचार शास्त्र के महा प्रणेता भगवान महावीर ने कहा है-

"बलं क्षमं व पेहाए सद्धामारोगमप्पलो,
खेतं कालं च विन्नाय सह याणं निजुंजये।"

अर्थात्- व्यक्ति अपने बल, पराक्रम, श्रद्धा और आरोग्य को ध्यान में रखकर व काल को जानकर अपनी शक्ति के अनुसार स्वयं को धार्मिक प्रवृत्तियों में नियोजित करे। लेखक का धर्म रचना है, यदि वह भगवान महावीर तथा महात्मा गाँधी द्वारा प्रशस्त मार्ग का अनुसरण करे तो निश्चय ही वह व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व का मंगल कर सकेगा।

संपर्कः ई-766, नकुल पथ,
लाल कोठी योजना, जयपुर-302015

●

हुठाग्रह और आतंकवाद का बोल-बाला है। अनुभूति के स्तर पर कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि व्यक्ति जब वैराग्य मार्ग की ओर बढ़ता है, तब कंचन और कामिनी को छोड़ने में अधिक अंतः संघर्ष नहीं करना पड़ता। परंतु यश की महत्वाकांक्षा से उफपर उठने में अधिक अंतः संघर्ष करना पड़ता है। जो साधक आत्मदर्शन की अपेक्षा आत्मप्रदर्शन में उलझ जाता है, वह आन्तरिक चेतना से जुड़कर भी साधना नहीं कर पाता। उसका पूरा जीवन कीर्तिकामना की पूर्ति में ही लगा रहता है।आज धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में पूजा-पाठ, प्रतिष्ठा-समारोह, भोज-भण्डारा, भक्तों की भीड़ आदि के जो प्रसंग सामने आते हैं, उनमें आत्मदर्शन का भाव अधिक रहता है। धर्म के उपदेशक धर्मस्थलों में अपरिग्रह का उपदेश तो अवश्य करते हैं, पर स्वयं प्रतिष्ठा पाने की महत्वाकांक्षा के परिग्रह से वे मुक्त नहीं हो पाते।

धर्म के क्षेत्र में ही नहीं, राजनीतिक स्तर पर भी जो राष्ट्र विश्व-शांति के लिए कार्यरत हैं, वे भी वैचारिक परिग्रह से त्रस्त हैं। शस्त्रीकरण, गुटबंदी, शीत-युद्ध की लहर आदि सबका मूल कारक तत्व परिग्रह की वृत्ति है। आज व्यक्ति ही नहीं, विश्व के राष्ट्र भी उपभोक्ता संस्कृति के प्रति आग्रहशील हैं और संपूर्ण ज्ञानविज्ञान की संस्कृति इंद्रियों के विषय-सेवन के क्षेत्रों को विस्तृत करने और विषयवासना के सुखों की माँग की वृद्धि करने में लगी हुई है। जब तक उपभोग के स्थान पर उपयोग की दृष्टि का विकास नहीं होता, तबतक वस्तु, व्यक्ति और विचार तीनों स्तरों पर परिग्रह की जकड़ बढ़ती जायगी।

आज के जीवन-व्यवहार में महावीर का अपग्रिह-सिद्धांत अधिक प्रासंगिक है। अपरिग्रह के सिद्धांत को चरितार्थ करने के लिए इच्छाओं को नियंत्रित करना या परिग्रह को परिमित करना आवश्यक है। परिमाण से अधिक की प्राप्ति का उपयोग अपने लिए नहीं, वरन् समाज के लिए होना चाहिए। यह दृष्टि जिस मनुष्य में विकसित हो जाती है, उसमें शेष सृष्टि के साथ सहानुभूति, प्रेम, एकता, समता और सेवा का भाव सहज ही जागरित होता है। इस भावना के जागरित होने पर अहिंसा, अनासक्ति, वैचारिक उदारता और अपरिग्रह की साधना का विकास स्वतः होता चलता है।

धर्म के तहत, राष्ट्रीय स्तर पर अपरिग्रह का विचार आज के युग की अपरिहार्य आवश्यकता है। सभी धर्मों और दर्शनों में अपरिग्रह की वृत्ति को सच्ची शांति और अखंड आनंद का मूल उत्स माना गया है। यह ज्ञातव्य है, वस्तुओं का संग्रह परिग्रह नहीं है, उनपर स्वामित्व परिग्रह है, समुदाय अथवा संप्रदाय परिग्रह नहीं है। सांप्रदायिक परिग्रह है, विचारों का बैविध्य और बाहुल्य परिग्रह नहीं है, उनके प्रति कदाग्रह ही परिग्रह है। सच तो यह है कि आग्रह से रहित परिग्रह जीवन और समाज के प्रति एक विकासवादी दृष्टिकोण है।

महावीरस्वामी ने स्वामी विवेकानंद तक सभी भारतीय धर्मचिंतकों ने परिग्रह को दुःख का कारण कहा है। परिग्रह से राष्ट्र की जनता का दुःख बढ़ता है। इसके विपरीत अपरिग्रह-धर्म को अपनाने से जनता के कष्ट का निवारण होता है और दुःख-निवारण ही राष्ट्रीय धर्म का सच्चा रूप है। कहा भी गया है : 'परस्स अदुक्खकरणं धम्मो।' पर दुःख का निवारण ही, या दूसरे का दुःखविहीन करना ही धर्म है। (वसुदेवहिण्डी)।

मनु ने भी धर्म की परिभाषा करते समय धर्म के राष्ट्रीय स्वरूप को निरूपित किया है। उनके अनुसार धर्म का रूप मनुष्य के आधार, संस्कार आदि के माध्यम से व्यक्त होता है। वह ब्रह्मज्ञान का अंश है। राग-द्वेष और संशय से रहित वे वेदविद् सज्जनों द्वारा नित्य अनुष्ठित और उनके द्वारा मन से स्वीकृत लोकहित और परलोक के साधनभूत सदाचार ही धर्म है।

संपर्कः-
पी.एन. सिन्हा कॉलोनी,
भिखना पहाड़ी, पटना-800 006

●

DENSA
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan&Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA
Phone No.: (952525) 55285èk54471, Fax: 55286

&

DANBAXY
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDCTarapur,
Boisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 8974777, Fax: 8972458

MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

जद(यू) की विफलता और बिखराव

□ *सिद्धेश्वर*

पुरानी कहावत है कि- "सफलता और संपन्नता जोड़ती है, विषमताएँ और विफलता बिखराव उत्पन्न करती हैं। जद(यू) के संदर्भ में आज यही चरितार्थ हो रहा है। आपको याद होगा जनता पार्टी की केंद्र में सरकार जाने के बाद जिस प्रकार भाजपा ने अपनी अलग जगह बनाई जनता पार्टी के अधिकांश राजनीतिज्ञों ने जनता दल के बैनर तले काम करना प्रारंभ किया, किंतु बाद के दिनों में उसमें भी टूटन हुई और जनता दल यू तथा जद(एस) नाम से अलग-अलग दल हुए। लालू प्रसाद ने राष्ट्रीय जनता दल कायम किया। इसी बीच जद;यूद्ध से टूट कर जार्ज पफर्नांडीस तथा नीतीश कुमार ने समता पार्टी बनाई तथा राम विलास पासवान ने लोकशक्ति पार्टी। पिफर कुछ ही वर्षों के बाद जार्ज तथा नीतीश ने समता पार्टी को अलविदा कह शरद यादव के जद(यू) से गलबाहीं की।

आज की तिथि में जार्ज, नीतीश तथा शरद यादव इसी जद (यू) के तहत राजनीति चला रहे हैं। धीरे-धीरे जद (यू) में अपराधी एवं भ्रष्ट किस्म के लोगों का धड़ल्ले से आना शुरू हुआ और दल में उनका वर्चस्व बढ़ता गया। जिनका जमीन से कोई जुड़ाव ही नहीं वे ही नीतीश कुमार के साथ हॉलीकाप्टर से आसमान की सैर करने लगे।

नतीजा यह हुआ कि पार्टी के निष्ठावान, ईमानदार, योग्य और कर्मठ कार्यकर्ताओं के साथ अनदेखी की जाने लगी और उनके साथ व्यवहार भी बाहरी व्यक्तियों-सा होने लगा। मलाई छकने और छकाने की क्षमता रखनेवालों का बोलबाला यहाँ तक बढ़ चला कि समाज से दूर-दूर तक भी वास्ता न रखनेवाले अमीर तथा नशा में चूर रहनेवालों को चुनाव में टिकट दिया जाने लगा और विधान परिषद में उन्हीं को तरजीह दी जाने लगी। इस प्रकार जद(यू) पार्टी अपना चाल-चलन, चरित्र और चेहरा बिगाड़ती ही चली गई। एक तो भाजपा के साथ सांठगांठ करने से जद(यू) का चरित्र यों ही बिगड़ चुका था और उसके समर्थक तब क्या आज भी भाजपा के साथ गठबंधन को नहीं पचा पा रहे हैं। वैसे सच कहा जाए तो

> सच्चाई यह है कि लालू-राबड़ी सरकार से बिहार की जनता उबरना चाहती है किंतु उसका सही विकल्प उसके सामने नजर नहीं आता। नीतीश कुमार के नेतृत्व में जद(यू) पर यहाँ की जनता का पूरा भरोसा होते हुए भी उसकी तरपफ लोगों का रुझान नहीं बढ़ पा रहा है

तथाकथित अगड़ी-पिछड़ी की भारतीय राजनीति में भाजपा के अगड़ी जाति के लोग आज भी नीतीश कुमार के वर्चस्व और उनके नेतृत्व को दिल से स्वीकार करने में हिचक रहे हैं अन्यथा

मुख्यमंत्री की मिली कुर्सी उनसे खिसक नहीं जाती।

दूसरी ओर नीतीश कुमार जिस वोट बैंक के पक्के स्तंभ पर आज तक राजनीति के उच्च से उच्चतर शिखर पर पहुँचते रहे उसी को लगातार नजर अंदाज करते रहे, कारण कि उसके खिसकने का उन्हें कतई विश्वास नहीं था। दरअसल, उस वोट बैंक के चरित्र को उन्होंने ठीक से पहचाना नहीं। जिस वोट बैंक को अतीत से लेकर आज तक कभी राजनीतिक संरक्षण नहीं मिला हो भला वह कब तक 'नहीं मामा से काना मामा' अच्छा वाली कहावत को चरितार्थ करता रहता। इसलिए 14वें लोकसभा चुनाव में 'काना मामा से नहीं मामा' अच्छा की नई कहावत को चरितार्थ किया।

यही कारण है कि उस चुनाव में या बाद के उपचुनाव में भी नितीश कुमार का जादू सर चढ़कर बोलने के बावजूद जद(यू) के निवर्तमान सांसदों की चुनाव में पराजय की सारी कहानी स्वतः बयान कर गई। दरअसल कारण को जानने के मौके से वो चूक रहे हैं। सच तो यह है कि मुद्दा सिपर्फ सांप्रदायिकता और पंथ निरपेक्षता का नहीं है, बल्कि सही अर्थों में मसला है लोकतांत्रिक और पंथनिरपेक्ष राष्ट्र के गठन का, जहाँ प्रत्येक नागरिक स्वयं को सुरक्षित और सशक्त महसूस कर सके।

वर्तमान परिस्थिति में यह करना गलत नहीं होगा कि जद(यू) अपने स्वरूप और चरित्र की रक्षा करने में असफल हो चुकी है। चुनाव परिणाम स्पष्टतः बताते हैं कि जन-साधारण का मोह जद(यू) के प्रति भंग होता जा रहा है।

सच्चाई यह है कि लालू-राबड़ी सरकार से बिहार की जनता उबरना चाहती है किंतु उसका सही विकल्प उसके सामने नजर नहीं आता। नीतीश कुमार के नेतृत्व में जद(यू) पर यहाँ की जनता का पूरा भरोसा होते हुए भी उसकी तरपफ लोगों का रूझान नहीं बढ़ पा रहा है, क्योंकि एक ओर जहाँ भाजपा के साथ तालमेल उसे पसंद

नहीं है तो वहीं दूसरी ओर जद(यू) शीर्ष नेतृत्व का व्यवहार उसके कार्यकर्ताओं एवं मतदाताओं को कुछ अटपटा-सा लग रहा है। उन्होंने सभी को निराश किया हैं किसी ने अधिक मुखरता के कारण या पिफर किसी ने आचरण हीनता के कारण। इसी कारण से पी. के. सिन्हा, ब्रह्मानंद मडल, सतीश कुमार, श्याम सुंदर सिंह धीरज, मंगनीलाल मंडल, गणेश प्रसाद यादव, गणेश पासवान, उमाशंकर सिंह, विश्वमोहन चौधरी, अनिल सिंह, सी.पी. सिन्हा जैसे नेता धीरे-धीरे दल से निकलते चले गए।

कहना नहीं होगा कि परस्पर सम्मान और सहनशीलता हमारी संस्कृति की आधारशिलाएँ रही हैं। आश्चर्य यह है कि आज के राजनीतिक जीवन में परस्पर सम्मान एवं सहनशीलता का लगभग अभाव होता जा रहा है और इसकी जगह अहंकार एवं व्यक्तिवाद व्यवहार बहुत आगे स्थान पा चुके हैं। दल के भीतर लोग प्रायः इसी रोग से ग्रस्त हैं। व्यक्तित्वों की टकराहट स्पष्ट देखी जा सकती है। 'मैं' का सर्वत्र बोलबाला है।

सच तो यह है कि प्रकृति और प्रवृत्ति किसी को भी सर्वगुण संपन्न नहीं बनाती और किसी एक में सर्वगुण भी संभव नहीं। कुछ न कुछ कमियाँ तो प्रत्येक में होती ही हैं। किंतु यदि एक की कमी का दूसरा पूरक बन जाए तो बहुत कुछ अच्छा किया जा सकता है। जद(यू) के नेताओं को यह समझना होगा कि प्रकृति एवं प्रवृति बाजार में बिकनेवाली वस्तु नहीं है।

वह तो मनुष्य के अंदर की चीज है जिसे आत्म अनुसंधान से पाया जा सकता है। नेताओं को यह जानना होगा कि उनकी चेतना, उनकी समस्त अनुभूति और उनके समस्त ज्ञान के स्रोत उनके अंदर ही हैं। जरूरत केवल विवेक जाग्रत करने की है, असलीयत पहचानने की है और मतदाताओं के नब्ज टटोलने की है।

●

''संसद का इतिहास'' का लोकार्पण

विचार कार्यालय, दिल्ली। लोकसभा के पूर्व सेक्रेटरी जेनरल डॉ. सुभाष कश्यप और दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक प्रो. विश्व प्रकाश गुप्त की दो खंडों में सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'संसद का इतिहास' का विगत 18 दिसंबर को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में लोकार्पण करते हुए गृह मंत्री शिवराज पाटिल ने कहा कि इस पुस्तक की सामग्री पाठकों के लिए संसदीय कार्यप्रणाली के बारे में जानने में मदद मिलेगी।

पुस्तक का परिचय प्रस्तुत करते हुए विश्व प्रकाश गुप्त ने कहा कि संसद लोकतंत्र का मंगल कलश है। संसदीय शासन एक जीवन शैली का नाम है। गुप्त ने पुनः कहा कि यह पुस्तक इस उद्देश्य से लिखी गई है कि संसद के इतिहास, संगठन, कार्यप्रणाली, भूमिका, सीमा और शक्ति की जानकारी का अधिक से अधिक प्रसार हो जिससे हम भारत के लोग अपनी इस प्रभुतासंपन्न संस्था के साथ तराकारहो सकें और अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से उसे सही दिशा में मोड़ सकें। इस पुस्तक में तेरहों लोकसभा की समीक्षा एक सुनिश्चित रूप-रेखा के अनुसार की गई है। 'संसदीय शासनः समय की कसौटी पर' इस पुस्तक का महत्वपूर्ण अंश और दूसरे भाग का अंतिम अध्याय है। वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी ने कहा कि इस पुस्तक के लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता पूर्व केंद्रीय मंत्री बसंत साठे ने की। संचालन डॉ. सुभाष कश्यप तथा आभार नितिन गर्ग ने किया।

झुग्गी-झोपड़ियों में सर्वशिक्षा अभियान प्रारंभ

देश व समाज का संपूर्ण, संतुलित एवं स्थायी विकास करना शिक्षा का परम उद्देश्य है। शिक्षा का अभिप्रेत सुयोग्य व्यक्तित्व का निर्माण करना है। किंतु दुखद स्थिति यह है कि आज की शिक्षा अपनी अर्थवत्ता के ह्रास के कारण जीवनव नैतिक मूल्यों को खोती जा रही है और आधुनिकता ने उस पर अतिक्रमण कर लिया हैं ये उद्गार हैं 'अग्नि सागर' जैसे श्रेष्ठ महाकाव्य के कृतिकार पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि के, जिसे 15 दिसंबरको दिल्ली के जाखीरा स्थित झुग्गी-झोपड़ी के बच्चों के लिए पटेल पफाउंडेशन की ओर से आयोजित सर्वशिक्षा अभियान का उद्घाटन करते हुए उन्होंने व्यक्त किए। डॉ. शशि ने इसबात पर अपनी प्रसन्नता जाहिर की कि सरदार पटेल की पुण्य तिथि पर उन्हें असली भारत से मिलने का सुअवसर मिला।

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेली की 55वीं पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने कहा कि शिक्षा के माध्यम से भविष्य के बारे में चिंतन के साथ-साथ समाज के हाशिए पर पड़े अंतिम आदमी, को राष्ट्र निर्माण में भूमिका एवं सम्मानजनक भागीदारी सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है। शिक्षा से सामाजिक न्याय की अवधरणा का विचार और प्रभावी होता है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सरदारपटेल के चित्र पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्ज्वलित करने के साथ-साथ नारियल फोड़ कर उद्घाटन के पश्चात् पटेल पफाउंडेशन के संस्थापक श्री मिथिलेश कुमार ने सर्व शिक्षा अभियान की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए कहा कि जखीरा के झुग्गी-झोपड़ियों में लगभग आठ हजार गरीब एवं उपेक्षित निवासियों के बच्चें को प्राथमिक से लेकर बारहवीं कक्षा तक शिक्षा दी जाएगी। उन्होंने स्थानीय अभिभावकों से भी सहयोग की अपेक्षा की।

विचार दृष्टि के संपादक श्री सिद्धेश्वर की प्रेरणा से आयोजित इस कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए पफाउंडेशन से जुड़े सर्व श्री ई. अर्जुन प्रसाद, अखिल चौधरी, जगदीश प्रसाद, बी. के. सिंह, विशुन देव तथा धनुष जी ने इस सर्वशिक्षा अभियान को हर संभव सहयोग करने का आश्वास दिया। प्रायः सभी वक्ताओं ने गरीबों के बीच शिक्षा की दिशा में फाउंडेशन के द्वारा किए जा रहे इस पहल की मुक्त कंठ से सराहना की। अंत में मान्य अतिथियों, अभिभावकों तथा बच्चों के प्रति आभार प्रकट किया सामाजिक सराकारों से जुड़े श्री अरुण कुमार ने समारोह में उपस्थित सभी बच्चों को एक-एक अभ्यास पुस्तिका सहित कलम दिए गए।

पं. युगल किशोर चतुर्वेदी को याद किया गया

श्रीमती राज चतुर्वेदी, जयपुर से

अमर स्वतंत्रता सेनानी, हिंदी के परम उपासक, स्वनाम धन्य पं. युगलकिशोर चतुर्वेदी की जन्म शती के अवसर पर स्थानीय परमानंद हॉल में एक समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजस्थान के तीन पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर, हीरालाल देवपुरा, जगन्नाथ पहाड़िया के सान्निध्य में पंडितजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। नगर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों में प्रसिद्ध साहित्यकार, हिंदी प्रेमी, न्यायविद् तथा पत्रकार समारोह में उपस्थित थे। चतुर्वेदी जी के योग्य सुपुत्रों एवं सुपुत्री तथा परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा आयोजित इस समारोह में वक्ताओं ने चतुर्वेदी जी के बहुआयामी व्यक्तित्व का स्मरण करते हुए स्वतंत्रता संग्राम में उनकी उल्लेखनीय भूमिका को भावप्रवणता से रेखांकित किया। सभी वक्ताओं ने माना कि आज के परिदृश्य में चतुर्वेदी जी जैसे महान नेता व्यक्तित्व की परमावश्यकता है। चतुर्वेदी जी जीवनपर्यंत जिन जीवनमूल्यों और सामाजिक सरोकारों के लिए संघर्षरत रहे, उन्हीं मूल्यों की रक्षा तथा आचरण से ही राष्ट्र प्रेम को सुनिश्चित किया जा सकता है।

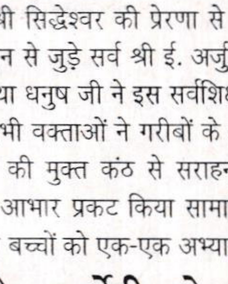

समारोह में चतुर्वेदी के ज्येष्ठ पुत्र डॉ. सत्येंद्र चतुर्वेदी के द्वारा संपादित "लोक-शिक्षक" मासिक के पं. युगलकिशोर चतुर्वेदी जन्मशती वर्ष विशेषांक" का लोकार्पण विशिष्ट अतिथियों के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन कविवर डॉ. नरेंद्र शर्मा "कुसुम" ने किया।

संपर्कः 23, चन्द्रपथ
सूरज नगर (प.) जयपुर-6

कवि सुब्रह्मण्य याद किए गए, 122वीं जयंती संपन्न

विचार कार्यालय, दिल्ली

11 दिसंबर को राष्ट्र चेतना के अमर कवि सुब्रह्मण्य भारती को राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कवि भारती की 122वीं जयंती पर आयोजित एक कार्यक्रम में मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतियों पर चर्चा करते हुए कहा कि यद्यपि भारती का लेखन मात्र दो दशकों तक ही सीमित रहा, किंतु इसी अवधि में तमिल काव्य एवं गद्य ने क्रमशः देशभक्ति की भावना और लोक साहित्य को समृद्ध किया। आज भी उनका युग तमिल प्रेम और तमिल दर्शन की गहराई को प्रवाह दे रहा है। उन्होंने पुनः कहा कि किसी साहित्य के जीवन में मानव से ज्यादा मानवता का महत्व होता है। राष्ट्र चेतना के महाकवि सुब्रह्मण्य भारती एक ऐसे ही मानवतावादी कवि थे, जो संपूर्ण विश्व को प्रेम और राष्ट्र प्रेम का पाठ पढ़ाना चाहते थे। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति 'कृत्रिम पाट्टु' में प्रेम से संबंधित चिंतन को व्यक्त किया है। कवि भारती ने तमिल साहित्य को नई गति, नवभाव, विकास तथा नवछंद दिए। शोषण व दमन के विरूद्ध उन्होंने हमेशा आवाज उठाई तथा नारी शिक्षा एवं नारी मुक्ति के आंदोलन को भी उन्होंने रेखांकित किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के कवि भारती बहुभाषाविद् थे जिन्होंने 'पाँचाली सपथ', 'गीतांजल', 'जन्मभूमि', 'वंननपतू', बहेल पत्त जैसी रचनाएँ रचीं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका अदा करनेवाले कवि भारती को मंच के सदस्यों ने डॉ. निर्मला एस. मौर्य की निम्न पंक्तियों से उनकी स्मृति को नमन किया-

'हर नया युग नए मोड़ की निशानी है,
हर नई क्रांति भारती की कहानी है।"

दीपक कुमार, दिल्ली से

शब्दों को रत्नों की तरह जड़ दिया कविताओं में सुभद्रा कुमारी ने- *प्रो. कृष्ण कुमार*

सुभद्रा कुमारी चौहान जन्मशती समारोह संपन्न

विचार कार्यालय, दिल्ली। सुभद्रा जी की कविता की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें एक तरह की बलौस उफर्जा है, रत्नों की तरह शब्दों को उन्होंने जड़ दिया है और काव्य-शास्त्र के सारे बँधनों को पूरी शक्ति के साथ अनुपालन किया है। उनकी कविताओं में भावना का जोश है। शास्त्रीय और लोक परंपराओं को उन्होंने बड़ी निष्ठापूर्वक निर्वाह किया। ये उद्‌गार हैं एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक प्रो. कृष्ण कुमार के जिसे विगत् 23 दिसंबर को नई दिल्ली के हिंदी भवन में श्री पुरुषोत्तम हिंदी भवन न्यास समिति की ओर से आयोजित सुभद्रा कुमारी चौहान जन्मशती समारोह में उन्होंने व्यक्त किए। 'झांसी की रानी' कविता का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि रानी का बचपन रानी का विवाह और रानी के पति की मृत्यु ये तीनों चीजें आरंभ की प्रथम पाँच पंक्तियों में ही आ जाती हैं। इस प्रकार उनकी कविताओं में रफ़्तार और भाषा की खेल हमें अभिमान जगाती हैं।

समारोह के अध्यक्ष तथा गाँधी जी केक निजी सचिव एवं पूर्व सांसद 92 वर्षीय वयोवृद्ध प्रो. महेशदत्त मिश्र ने सुभद्रा की कविता 'मिला तेज से तेज' को प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ने की सलाह देते हुए कहा कि सरदार पटेल ने 1952 के चुनाव के बाद सुभद्रा तथा उनके उनके पति दोनों को पद देकर सम्मानित करने की बात

कही थी। अपने पूरे जीवन राजनीति में बिताने को लेकर प्रो. मिश्र ने ग़ज़ल के शेर प्रस्तुत किए-

'राजनीति ने निकम्मा करक दिया
वरना हम भी आदमी थे काम के।'

कवि व प्रखर आलोचक प्रो. अजित कुमार ने जहाँ सुभद्रा की कविताओं पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'झाँसी की रानी' लोगों के कंठ का हार बन गयी वहीं प्रो. निर्मला जैन ने कहा कि सुभद्रा की अन्य सभी रचनाएँ 'झाँसी की रानी' की लोकप्रियता की भेंट चढ़ गई। दलितों की पूरी दुनिया है सुभद्रा जी की कहानियों में जिसकी ओर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। प्रो. जैन ने पुनः कहा कि सुभद्रा जी की रचनाओं में सरलता की रचनात्मकता और गंभीरता एक साथ देखने की मिलती है जिसे लिखना बड़ा कठिन काम है। स्वतंत्रता आंदोलन की पूरी-पूरी समझ सुभद्रा जी की कविताओं में दृष्टिगोचर होती हैं उनका पारिवारिक सामाजिक और राष्ट्रीय मन आदर्श आचरण का विश्वास दिलाता है।

जबलपुर से पधारे प्रो. श्रीश कुमारने इस अवसर पर एक सुभद्रा के जीवन पर जीवंत आलेख प्रस्तुत किया और उनकेक एकमात्र काव्य संग्रह 'मुकुल' का हवाला देते हुए कहा कि जेनेंद्र जी ने एक बार कहा था

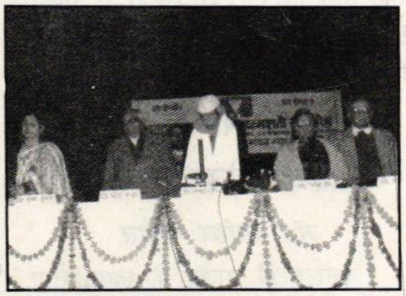

कि सुभद्रा जी की गरिमा उनके अभावों में भी राजसी थी। समारोह के प्रारंभ में डॉ. आशा जी ने मान्य अतिथियों का जहाँ अभिनंदन करते हुए सपफल संचालन किया वहीं हिंदी भवन के मंत्री श्री गोविंद व्यास ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

आधुनिक लघुकथा ने कल्पनाशीलता के बल पर नई रचनात्मकता को जन्म दिया- डॉ. विजयेन्द्र नारायण सिंह

17वाँ लघुकथा सम्मेलन संपन्न

आधुनिक लघुकथा ने यथार्थवाद को धकियाते हुए कल्पनाशीलता (*Fantacy*) के बल पर नई रचनात्मकता को जन्म दिया। ये उद्‌गार हैं केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. विजयेन्द्र नारायण सिंह के जिसे पिछले 4 दिसंबर को पटना के जमाल रोड स्थित बिहार राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ भवन में अखिल भारतीय प्रगतिशील लघुकथा मंच द्वारा आयोजित 17वें लघुकथा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए उन्होंने व्यक्त किए। सम्मेलन में गोयल पुरस्कार से सम्मानित इंदौर के साहित्यकार सूर्यकांत नागर ने कहा कि जल्दबाजी में कोई भी रचना प्रभावी नहीं हो सकती। लिखते समय रचनाकार एक समादृत स्थिति में होता है। सम्मेलन के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध कथाकार मधुकर सिंह ने कहा कि लघु कथाएँ गीत की तरह कंठबद्ध होती हैं और ये सामूहिक भी हो सकती हैं। सम्मेलन को विशिष्ट अतिथि अनिल सुलभ ने भी संबोधित करते हुए लघुकथा की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कई सत्रों में चलनेवाले सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की

अध्यक्षता कृष्णानंद कृष्ण तथा संचालन मिथिलेश कुमारी मिश्र ने किया। प्रारंभ में सम्मेलन में देश के कोने-कोने से पधारे प्रतिनिधियों तथा सुधिजनों का स्वागत डॉ. सतीशराज पुष्करणा ने किया तथा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया मंच के महासचिव श्री नवीन ने।

पत्रकारिता पर विश्वसनीयता का संकट

पिछले दिनों वरिष्ठ पत्रकार संतोष भारतीय द्वारा लिखित दो पुस्तकों- 'पत्रकारिताः नया दौर, नए प्रतिमान' एवं 'निशाने पर समय, समाज और राजनीति' का लोकार्पण करते हुए उपराष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत ने कहा कि आज की पत्रकारिता में विश्वसनीयता का संकट बना हुआ है और पत्रकारिता की स्थिति बेहद खराब हैं। इस अवसर पर पत्रकार एम. जे. अकबर, दिग्विजय सिंह, आलोक मेहता तथा अशोक माहेश्वरी भी उपस्थित थे।

मौजूदा परिवेश लोकतंत्र की दीनता और हीनता का द्योतक

डॉ0 शाहिद जलील

देशरत्न डॉ. राजेंद्र के त्याग, सेवा, शील और संयम की वजह से जो राजनीतिक क्षितिज सदैव आलोकित हुआ और लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हुईं आज के राजनीतिक माहौल में वही बीमार लोकतंत्र दीनता और हीनता का द्योतक हो गया है।

ये उद्‌गार हैं बी.एन. कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रा. (डॉ.) साधु शरण के जिसे उन्होंने 3 दिसंबर को राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार इकाई द्वारा स्थानीय पुरंदरपुर स्थित मंच के 'बसेरा' कार्यालय-प्रांगण में आयोजित एक विचार संगोष्ठी का उद्‌घाटन करते हुए व्यक्त किए।

दिल्ली से प्रकाशित 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की 120वीं जयंती पर आयोजित विचार संगोष्ठी के विषय "लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ और देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद" का प्रवर्तन करते हुए कहा कि आज जिस तेजी से देश के मतदाताओं में महापर्व चुनाव के प्रति उदासीनता और नैराश्य की भावना बढ़ती जा रही है उससे लोकतंत्र की जड़ें निरंतर कमजोर, खोखली व सूखती जा रही हैं, क्योंकि एक ओर जहाँ आज के लोकतंत्र में वंशवाद परिवारवाद को प्रोत्साहन मिल रहा है वहीं दूसरी ओर लोकतंत्र और राजतंत्र का अंतर मिटता जा रहा है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. साधु शरण ने कहा कि आज हर क्षेत्र में बढ़ते विश्वास के संकट और पारदर्शिता की कमी से लोकतंत्र पर खतरे मंडरा रहे हैं। संगोष्ठी के विशिष्ट वक्ता ज्योतिशंकर चौबे ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद के व्यक्तित्व व कृतित्व पर चर्चा करते हुए यह चिंता जाहिर की कि आज सरकार और राजनीतिज्ञों के प्रति क्रोध से ज्यादा घृणा उत्पन्न हो रही है जो लोकतंत्र के लिए खतरे का संकेत है।

साहित्यकार, युगल किशोर प्रसाद ने कहा कि विधायिका के सदस्यों की स्वार्थपरता और संकीर्णता के कारण भ्रष्टाचार, जातीयता, सांप्रदायिकता और अपराधीकरण को बढ़ावा मिला है। सामाजिक सरोकारों से जुड़े राम पदारथ सिंह तथा मनोहर लाल आदि ने भी डॉ. राजेंद्र प्रसाद के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रारंभ में स्वागत किया साहित्यकार राजभवन सिंह ने तथा राजेंद्र प्रसाद ने आभार व्यक्त किया।

भावानुवाद की एक लंबी परंपरा है

उमेश प्रकाशन, इलाहाबाद से सद्यः प्रकाशित डॉ. सुरेंद्र वर्मा की पुस्तक 'अमृत-कण' का लोकार्पण प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ने हिंदुस्तानी एकेडेमी में किया।

इस अवसर पर बोलते हुए एकेडेमी के अध्यक्ष डॉ. हरिमोहन मालवीय ने कहा कि अमृत-कण में डॉ. सुरेन्द्र वर्मा ने माण्डूक्य, ईशावास्य, गीता और जैन आचारांग के अंशों का सरल हिंदी में काव्यात्मक अनुवाद किया है। इस तरह के अनुवादों की एक लंबी श्रृंखला है। बशीर अहमद 'मयूख' और छविनाथ मिश्र ने वैदिक ऋचाओं का अनुवाद किया है। ऋग्वेद की ऋचाओं का पद्यात्मक अनुवाद इस समय प्रसिद्ध विद्वान डॉ. गोविंदचंद पाण्डे कर रहे हैं। मयूख ने महावीर स्वामी की 2500वीं जयंती पर प्रमुख जैन कृतियों के महत्वपूर्ण अंशों का अनुवाद भी किया है। डॉ. सुरेंद्र वर्मा की कृति अमृत-कण इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। इसमें उन्होंने विशेषकर छोटे किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण उपनिषदों का भी काव्यात्मक अनुवाद किया है।

कवि और अनुवादक डॉ. सुरेंद्र वर्मा ने अपनी कृति का परिचय देते हुए कहा कि संस्कृत में लिखा भारतीय दार्शनिक साहित्य अधिकतर सरस पद्य में है। यह एक ऐसी परंपरा है जिसे हिंदी में भी अपनाया जा सकता है।

कृति को लोकार्पित करते हुए डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ने अमृत-कण को सुबोध और सरस काव्य निरूपित किया और भावानुवादों की महत्ता को रेखांकित किया।

आवश्यक सूचना

राष्ट्रीय विचार मंच

राज्य कार्यालय
'बसेरा', पुरंदरपुर, पटना-1
दूरभाषः 0612-2228519

पत्रांक-3500 दिनांक 21.12.04

मंच की राज्य इकाई की आम सभा की बैठक

राष्ट्रीय विचार मंच की बिहार इकाई की आम सभा के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आम सभा की बैठक आगामी 9 जनवरी 2004 को अपराह्न 2 बजे पटना के आर ब्लॉक स्थित रोड नं. 5 के क्वार्टर नं. सी-6 के प्रांगण में होगी जिसमें मुख्य रूप से वर्ष 2005-2007 के लिए राज्य इकाई की नई कार्यकारिणी का गठन होगा। सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

डॉ. साधूशरण
निर्वाचण अधिकारी

हैदराबाद की चिट्ठी

प्रस्तुतिः चंद्र मौलेश्वर प्रसाद

राजनीतिः किसी भी व्यवस्था में जब नेता भ्रष्ट और तंत्र चापलूस हों, तब जनता में असंतोष और आक्रोश फैलता है। ऐसे में जनता के इस असंतोष को स्वर देने के लिए कुछ संगठन आगे आते हैं। ऐसे ही एक संगठन का जन्म बंगाल के नक्सलबारी में हुआ था और इस विचारधर की हवा देश के कई क्षेत्रों में पफैली। आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में नक्सलियों के वर्चस्व को देखते हुए राज्य की सरकार ने उनकी माँगों पर बातचीत करने के लिए उन्हें 18 अक्टूबर को आमंत्रित किया। लगभग एक सप्ताह चली इस बैठक में यद्यपि कोई हल नहीं निकला और न ही किसी चमत्कारी हल की आशा थीऋ पिफर भी, वार्ता सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई और आगे भी चर्चा होने की संभावना बनी हुई है। इस राजनीतिक वातावरण में शहर की गतिविध्याँ यथावत चलती रहीं।

त्यौहारः इस वर्ष गणेशोत्सव के अवसर पर सीमांत क्षेत्र स्थित बालापुर के भगवान श्री गणेश का 21 किलो के लड्डू की नीलामी दो लाख एक हजार रुपये में की गई। गणेशोत्सव के बाद आनेवाले त्यौहार, दशहरा, दीपावली और रमजान सभी वर्ग के लोगों ने बड़ी धूमधम से मनाया और इस शहर की गंगा-जमुनी तहजीब के सद्भावनापूर्ण माहौल का परिचय दिया।

कला : 2 सितंबर को विश्वविख्यात चित्रकार एम.एफ. हुसैन के अवास 'सिनेमा घर' में उनके कुछ चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री एस. जयपाल रेड्डी ने किया। इस प्रदर्शनी में सेरिग्रापफ, लिथोग्रापफ, पिक्टोग्रापफ, डिजिटोग्रापफ, पोस्टर आदि नामक चित्र प्रदर्शित किए गए। हैदराबाद की लक्षणा कला दीर्घा में कोलकाता के छः कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी लगाई गई जो 18 से 24 अगस्त तक चली। जहर दासगुप्ता, संतोष रोहतगी, शेफाली मुखर्जी, तपन मित्रा और अनूप कुमार गिरि के चित्र तथा उमा रॉय चौधरी की शिल्प कृतियाँ प्रदर्शित हुईं।

पर्यटनः सिंगापुर में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सिंगापुर टूरिज्म बोर्ड ने 24 अगस्त को एक शो का आयोजन किया जिसमें वहाँ की प्रसिद्ध भरतनाट्यम नृत्यांगना निर्मला शेषाद्री ने भारतीय एवं सिंगापुर की नृत्य शैली को संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया।

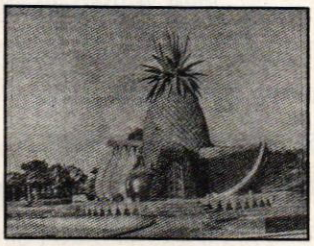

देश के पर्यटन मानचित्र में हैदराबाद भी अपना एक विशिष्ट स्थान बना रहा है। यहाँ का एनटीआर गार्डन यात्रियों का लोकप्रिय आकर्षण बन रहा है जहाँ प्रतिदिन लगभग 12,000 लोग घूमने आते हैं और इसकी मासिक आय औसतन 30 लाख रुपये हैं।

साहित्यः कॉमनवेल्थ लिटरेचर एवं लेंग्वेज स्टडीज एसोसिएशन के 13वें अतर्राष्ट्रीय त्रैवार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन राज्यपाल सुरजीत सिंह बरनाला ने 4 अगस्त को ताज रेसिडेंसी में किया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता कानबेरा के लेखक ब्रज बेनेथ ने की। कॉमनवेल्थ साहित्य एवं भाषा अध्ययन संस्थान की अध्यक्षा प्रो. मीनाक्षी मुखर्जी ने अतिथियों का स्वागत किया और सचिव प्रो. सी. विजयश्री ने संस्थान की स्थापना तथा उसकी सेवाओं पर प्रकाश डाला। इस सम्मेलन के बारे में सूचना देते हुए दिल्ली के प्रो. हरीश त्रिवेदी ने बताया कि 30 देशों में आज 250 से अध्कि अँग्रेजी के लेखक इसमें भाग ले रहे हैं जिनमें भारतीय मूल के विक्रम सेठ, होमी भाषा, गायत्री चक्रवर्ती, जयदेव उयागोंडा, शशि देशपाडे, गिरिश कार्नाड, एजाज अहमद, केकी दारूवाला, जीन अरसनायगम उल्लेखनीय हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली के सौजन्य से 26 सितंबर को आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय था 'समकालीन हिंदी कविताःबदलते परिवेश'। इस संगोष्ठी का आयोजन विवेक वर्धिनी महाविद्यालय स्नातकोत्तर केंद्र के हिंदी विभाग ने आयोजित

किया जिसमें साहित्य अकादमी पुरस्कार ग्रहीता एवं कवि व आलोचल राजेश जोशी ने विषय प्रवर्तन किया। इय संगोष्ठी में प्रो. अरुण कमल ;पटनाद्ध, प्रो. बेंकटेश्वर, डॉ. माणिक्याम्बा, प्रो. किशोरीलाल व्यास, डॉ. ऋषज्ञभदेव शर्मा (हैदराबाद), काव्यायनी (लखनउफ), डॉ. अनामिका (दिल्ली), डॉ. के. के. सिंह (बलिया), डॉ. रविरंजन, डॉ. वेणुगोपाल तथा एस. दत्ता (हैदराबाद) ने विषय पर अपने-अपने विचार रखे। प्रो. अरुण कमल ने संगोष्ठी का मूल्यांकन किया और विवेकवर्धिनी महाविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ. रेखा शर्मा ने कार्यक्रम संचालन व संयोजन किया।

दिल्ली से पधारे उपन्यासकार संजीव के सम्मान में 17 नवम्बर को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के सभागार में 'कथा कहानी' समारोह आयोजित किया गया जिसमें उन्होंने अपनी प्रिय कहानी 'माँ' का वाचन किया। इस कहानी पर डॉ. सुवास कुमार, डॉ. ऋाभदेव शर्मा, प्रो.किशोरीलाल व्यास, डॉ. राधेश्याम शुक्ल तथा डॉ. वेणुगोपाल ने अपने विचार रखे। समारोह का संचालन डॉ. एस.बी.एस.एस नारायण राजू ने किया।

20 नवंबर को हैदराबाद के वयोवृद्ध रचनाकार डॉ. श्याम भारद्वाज की खंडकाव्यात्मक दीर्घ कविता 'सृजन वंदन' पर 'काव्यानुशीलन' संपन्न हुई जिसमें उनकी उपस्थिति में इस रचना पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श में डॉ. पुष्पा बंसल, कविता वाचक्नवी, डॉ. गोपाल शर्मा, नीरजा गिरि, डॉ. किशोरीलाल व्यास, चंद्र मौलेश्वर प्रसाद, डॉ._षभदेव शर्मा, डॉ. सुवास कुमार ने भाग लिया और डॉ. राध्श्याम शुक्ल (संपादक, 'स्वतंत्र वार्ता') ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया।

पिफल्मः हैदराबाद के अमेच्यूर कलाकारों ने मिलकर मात्र सात दिनों में एक अँग्रेजी डिजिटल फिल्म बनाई जिसका नाम 'पीज एण्ड कैरेट्स' है। इस फिल्म का प्रिमियर शो सीपफेल सेंट्रल इंस्टिट्यूट पफार इंग्लिश एंड फॉरेन लेंग्वेजेस के गोकाक सिनेमा में आयोजित किया गया। 'लिविंग टुगेदर' अर्थात् बिना विवाह के साथ रहनेवाली दंपत्ति के ईदगिर्द घूमती भावपूर्ण कहानी की मुख्य भूमिका में सुप्रणिति (सह-सचिव, विश्वम्भरा संस्था) ने दर्शकों को प्रभावित किया। सहायक कलाकार हैं जगदीश और गौरी तथा कविता वाचक्नवी (महासचिव, 'विश्वंभरा) ने अतिथि कलाकार के रूप में सहयोग दिया। भारतीय जीवन मूल्य और विदेशी संस्कृति के बीच झूलती इस फिल्म का निर्देशन सुधाकर ने किया और निर्माता कुमार हैं। इस फिल्म को अमेरीका के अमेच्यूर फिल्म फेस्टिवल में भी प्रदर्शित किया जाएगा।

संपर्कः
1.8.28, यशवंत भवन,
अलवाल, सिकंदराबाद-500010

●

विश्वम्भरा स्थापना दिवस समारोह संपन्न

भारतीय जीवन मूल्यों के प्रसार के लिए समर्पित संस्था 'विश्वम्भरा' की द्वितीय वर्षगांठ के अवसर पर यहाँ खैरताबाद स्थित निर्दोष भवन में 'विश्वम्भरा स्थापना दिवस समारोह' मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता स्वतंत्र वार्ता के संपादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल ने की।

इस अवसर पर 'विश्वम्भरा स्थापना दिवस व्याख्यान माला' में 'सृजनशीलताः पके प्रश्न, अधपके उत्तर तथा कुछ झलकियाँ' विषय पर प्रतिष्ठित मनोवैज्ञानिक तथा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्याम भारद्वाज ने व्याख्यान दिया।

भारतीय जीवन मूल्यों के संदर्भ में सृजनशीलता से जुड़े विभिन्न दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा व्यावहारिक पक्षों की व्याख्या की। उन्होंने भारतीय जीवन मूल्यों के नवीकरण की पहल का आह्वान करते हुए व्यक्ति, संस्था और समाज को सृजनशील बनाने का आंदोलन छेड़ने का सुझाव दिया।

'विश्वम्भरा' के मानद मुख्य संरक्षक ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहीता साहित्यकार डॉ., सी. नारायण रेड्डी ने संस्था की महासचिव कवयित्री श्रीमती कविता वाचक्नवी की सद्यः प्रकाशित काव्यकृति 'मैं चल तो दूँ' का लोकार्पण किया और साहित्य में जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा में ही सच्ची सृजनशीलता को निहित बताया। समारोह में हैदराबाद-सिकदराबाद के विभिन्न विश्वविद्यालयों और ज्ञान क्षेत्रों से जुड़े कवियों, लेखकों, पत्रकारों और विचारकों ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

कविता वाचक्नवी,
हैदराबाद से।

●

राष्ट्रीय विचार मंच की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी गठित

विचार कार्यालय, दिल्ली

मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा भारत के पूर्व मुख्य सतर्कता आयुक्त श्री यू. सी. अग्रवाल की अध्यक्षता एवं डॉ. धर्मेन्द्र नाथ 'अमन' के पर्यवेक्षण में मंच की नियमावलि की कंडिका 5, 8, 9, एवं 17 में प्रदत प्रावधानों के तहत विगत 27 दिसंबर 2004 को अपराह्न 2 बजे नई दिल्ली के इन्द्रपस्थ स्थिति भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के प्रांगण में आयोजित राष्ट्रीय विचार मंच की आम सभा की बैठक ने वर्ष 2005-2007 के लिए मंच की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन किया जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए:-

क्र.	पद नाम	पूरा पता	फोन
1.	**अध्यक्ष:** श्री यू.सी. अग्रवाल	72 एच.आई.जी.,चन्दरनगर, गाजियाबाद-201011(उ. प्र.)	26275443
2.	**उपाध्यक्ष:**		
	(i) डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर	'श्री निकेतन', लक्ष्मीनगर, पट्टल पालस पोस्ट, रूवनंतपुरम	
	(ii) डॉ. बाल शौरिरेड्डी	27,वेडिवेलीपुरम, वेस्ट माम्बलम, चेन्नई	
	(iii) डॉ. देवेन्द्र आर्य	बी-98, सूर्यनगर, गाजियाबाद-201011 उ० प्र०	
	(iv) डॉ. साधु शरण	'गीतिका', गली नं-1, महेशनगर, पत्रा०-केसरीनगर, पटना-24	2287204
	(v) श्रीमती राज चतुर्वेदी	23, चद्रंपथ, सूरजनगर (पश्चिम), सिविल लाइन्स, जयपुर-6	2225676
	(vi) डॉ. धर्मेंद्र नाथ 'अमन'	बी-139 पॉकेट-बी, मयूर विहार फेज्-II, दिल्ली-110 091	227797740
	(vii) प्रो० मनोज कुमार	चौथी मंजिल, पुनम पलाजा, पालम रोड, सिभिल लाइन, नागपुर	2553701
3.	**रा० महासचिव:** श्री सिद्धेश्वर	'दृष्टि', यू०-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1-	22059410, 22530652 0612-2228519
4.	**सचिव :** श्री संजय सौम्य	ई-2, बृजविहार, गाजियाबाद-201011	
5.	**कोषाध्यक्ष :** श्री अजय कुमार	25 सी, पॉकेट-बी, दिलशादगार्डन, दिल्ली	22114863
6.	**संयुक्त सचिव :**		
	साहित्य: श्रीमती अलका सिन्हा	10 बी, डी.डी.ए. फ्लैट्स, मंगलापुरी, पालम नई दिल्ली	25036264
	संसाधन: श्री मिथिलेश कुमार	रोहिणी, दिल्ली	989149166
	वैवाहिक सूत्ना केंद्र:अरुण कु० पटेल	बी-3 गली-1, भजनपुरा, दिल्ली-54	9213188032
	संस्कृति : श्री फजल इमाम मलिक	4 बी, फ्रेंड्स अपार्टमेंट पटपड़गंज, दिल्ली-92	9868018472
	समाज कल्याण: श्री प्राणेन्द्र कु०सिंह	278, नेहरू विहार, दिल्ली-9	
	शोध,अध्ययन एवं प्रकाशन		
	डॉ. मेदिनी राय-पुष्प विहार, दि०-17	9899464844	
	जनसंचार: प्रो० पी० के० झा 'प्रेम'	जे-41, पाण्डव नगर, दि०-92	913102432
	प्रचार सचिव: श्रीरविशंकर श्रोत्रिय	डी-165, पाण्डव नगर दि०-92	9868039104
	संगठन सचिव: डॉ. अनिल दत्त मिश्र	सहायक निदेशक, राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय, राजघाट, नई दिल्ली-2	23370168
	कार्यालय सचिव: अनुज कुमार	एस-363, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर दिल्ली-92	
	कार्यकारिणी सदस्य:		
	1. डॉ. विजय ना० मणि त्रिपाठी	बी-181, सूर्यनगर, गाजियाबाद	24624042
	2. डॉ. परमानन्द पांचाल	232 ए, पॉकेट-1, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-91	22751649
	3. पो० नेहपाल सिंह वर्मा	6-2 जशोदाकुँज, गीत चाँदनीधाम, सावरकरनगर, हैदराबाद-76	27172457
	4. डॉ. मधु धवन	के-3 अन्नानगर (ईस्ट) चेन्नई	
	5. डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव	आर-7, वाणी विहार, उत्तमनगर, नई दिल्ली	25634719
	6. डॉ. पी. एन. विद्यार्थी	बी-140, हरमू हाउसिंग कॉलोनी, राँची झारखण्ड	
	7. डॉ. मंजुला गुप्ता	9, बी.एस.रोड, 22 गोदाम सर्किल, जयपुर राजस्थान	2740156
	8. श्री ज्योतिशंकर चौबे	एम.आई.जी., हनुमाननगर, पटना-20	
	9. श्री श्याम मुरारी अग्रवाल	प्रथम मंजिल, यू-207, शकरपुर, दिल्ली-92	22462777
	10. डॉ. ए. बी. साई प्रसाद		
	11. श्री ईश्वर गोयल	जे.एम.डी. हाउस, 4378/4बी, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2	20058076
	12. श्री जियालाल आर्य	23, आई.ए.एस. कालोनी, किदवईपुरी, पटना-1	2521224
	13. प्रो. प्रेम सिंह	हिन्दी प्राध्यापक, योजना विहार, दि.-92	22371220
		राजघाट, नई दिल्ली-2	
	14. डॉ. पुष्पा मोतियानी	अहमदाबाद	
	15. श्री बाबू लाल शर्मा	गाँधी शांति प्रतिष्ठान, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली-2	
	16. श्री अमरनाथ 'अमर'	कार्यक्रम अधिशासी, दूरदर्शन महानिदेशालय, नई दिल्ली-1	23363301
	17. प्रो. द्वारका प्रसाद 'चारूमित्र'	हिन्दी प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय, रोहिणी, दि.-85	
	18. डॉ. राजनारायण राय	'नारायणीयम', 227, पंडितवाड़ी, पत्रा० प्रेमनगर, देहरादून	
	19. डॉ. संजय झा	978, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9	9811770406
	20. डॉ. सोमदत्त शर्मा 'सोम'		
	21. कर्नल एस. एन. कटियार	नई दिल्ली	
	22. श्री कमल किशोर दुबे 'कमल'	837 बी, रेलवे आफिसर्स फ्लैट, रेलवे हास्पिटल कालोनी अहमदाबाद	22168412
	23. डॉ. रमेशचंद्र बेलावत	9, स्टेशन रोड, शाजापुर-465001 (म. प्र.)	9826230720 07364-229903
	24. श्री चितरंजन भारती	पत्रा० पंचग्राम, असम	
	25. डॉ. शाहिद जमील	क्वार्टर नं. सी-6, पथ सं.5, आर. ब्लॉक पटना-1	2226905
	26. श्री जितेन्द्र धीर	क्यू-283, मुदियाली रोड, गार्डन रीच,कोलकाता-24	91285842
	27 श्री अत्यानंद	एम-49, शामनगर, नई दिल्ली	25741431
	28. श्री जे. एन. पी. सिंहा	2/66, पुराना राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	25741431
	29. श्री सतीश मराठा	सर्वोदय मंडल, मकान सं. 136, न्यू रेलवे रोड गुड़गाँव हरियाण	95124-2251197
	30 डॉ. प्रसून झा डी-125 पाण्डव नगर दिल्ली-92		9899000992
	31. श्री राजकुमार सामंता	25/3870, रेगरपुरा, करोलबाग, नई दिल्ली	25825745
	32. श्री सुधीर रंजन	'दृष्टि', यू०-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92	
	33. श्री अजीत कुमार सिंहा	एस 11ए, पाण्डव नगर, दिल्ली-92	

शेष पृष्ठ 55 पर

नटवर सिंह को 'कैंब्रिज फैलो' की उपाधि

ब्रिटेन के 650 वर्ष पुराने कैंब्रिज कॉलेज ने पहली बार भारत के निवासी विदेश मंत्री नटवर सिंह को कैंब्रिज कॉरपस क्रिस्टी फेलो की उपाधि से सम्मानिक किया है। उधर दक्षिण कोरिया के क्यूंग हो विश्वविद्यालय द्वारा भी उन्हें 'डॉक्टरेट' की मानद उपाधि से विभूषित किया गया है।

भारतीय रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष आर. के. सिंह अंतरराष्ट्रीय रेल संघ के अध्यक्ष निर्वाचित

विचार कार्यालय, दिल्ली। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष तथा भारत सरकार के पदेन प्रधान महासचिव आर. के. सिंह को अंतरराष्ट्रीय रेल संघ के वैश्विक कार्यकारी परिषद का अध्यक्ष चुना गया है। जापान के याकोहामा शहर में विगत 27 अक्टूबर को संपन्न चुनाव में निर्वाचित श्री सिंह भारतीय रेल के पहले अधिकारी हैं जिन्हें इस महत्वपूर्ण विश्व संस्था के मुखिया पद पर विराजमान किया गया है।

उल्लेखनीय अंतरराष्ट्रीय रेल संघ की भूमिका विश्व स्तर पर विभिन्न देशों के रेलों के बीच सहयोग तथा रेल यातायात को बढ़ावा देना है। इस समय देश इस संघ के सदस्य हैं। श्री सिंह के इस पद पर निर्वाचित होने से भारत सरकार के रेल मंत्रालय द्वारा हाई स्पीड रेल कारीडोर बनाने तथा बुलेट ट्रेन चलाने की महत्वाकांक्षी परियोजना को आगे बढ़ाने में जापान तथा अन्य देशों का सहयोग सुनिश्चित करने में मददगार साबित होगा। यही नहीं, बल्कि इससे भारतीय रेल के आधुनिकीकरण के क्रम में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पूँजी जुटाने में भी मदद मिलेगी।

दीपक कुमार, दिल्ली से

बिहार का अभिषेक एनडीए में शीर्ष स्थान पर

देश के युवाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती के रूप में मानी जानीवाली राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) व नौसेना अकादमी परीक्षा में प्रथम स्थान पाकर बिहार निवासी अभिषेक ने न केवल एक बार पिफर अपने राज्य का नाम रोशन किया है, बल्कि माँ वीणा गुप्ता तथा पटना के बाल्मी में सहायक प्रोफेसर पिता आर.के. गुप्ता के सीने को गर्व से ऊँचा किया है।

परीक्षा की सफलता पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अभिषेक ने अपने लक्ष्य के बारे में बताया "आईआईटी टॉप कर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनना और देश की सेवा करना, जिससे मैं स्व. कल्पना चावला के सपने साकार कर सकूँ और राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की तरह महान वैज्ञानिक बनूँ।

अभिषेक एवं उसके माता-पिता को विचार दृष्टि परिवार की ओर से बधाई।

अंजलि, पटना से

यशदेव शल्य का 16वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार

विचार कार्यालय, दिल्ली। प्रतिष्ठित चिंतक एवं रचनाकार यशदेव शल्य को उनकी कृति मूल्य तत्व मीमांसा के लिए 16वां भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सुप्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर द्वारा सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें प्रशस्ति पत्र, शाल तथा एक लाख रुपए की राशि प्रदान की गई।

इस मौके पर विधिवेत्ता एल.एम. सिंघवी ने जहाँ देश की मनीषा को लेकर उनके द्वारा किए गए व्याख्यात्मक विश्लेषण को चिंतन साहित्य के लिए अमूल्य धरोहर बताया वहीं डॉ. विद्यानिवास मिश्र ने कहा कि शल्य ने दार्शनिक लेखन की नई शैली विकसित की है। उन्होंने अपनी भाषा को संस्कृत की जड़ता और अंग्रेजी की पाश्चात्य आधुनिकता से निकाला और दार्शनिक लेखन का माध्यम समकालीन भाषा हिंदी को चुना।

26 जून 1928 को फरीदकोट (पंजाब) में जन्में श्री शल्य की कृतियों में पंत का काव्य, चिद्विमर्श, सत्ता विषयक अन्वीक्षा, मूल्य तत्व मीमांसा, तत्व चिंतन काव्य विमर्श आदि महत्वपूर्ण हैं। दार्शनिक पुस्तकों के संपादन के साथ ही दार्शनिक त्रैमासिक 'तत्व चिंतन', 'दर्शन समीक्षा' और 'उन्मीलन' पत्रिकाओं का संपादन किया। कार्यक्रम का संचालन भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक प्रभाकर जी ने किया तथा इस अवसर पर साहिब सिंह वर्मा, चित्रा मुद्गल आदि कई गणमान्य लोग उपस्थिति थे।

कैलाश वाजपेयी एवं चित्रा मुद्गल को व्यास सम्मान

विचार कार्यालय, दिल्ली।

केड्ड केड्ड बिड़ला पफाउंडेशन की ओर से राज्यसभा के सदस्य डॉड्ड कर्ण सिंह द्वारा कैलाश वाजपेयी को वर्ष 2002 के लिए 12वाँ और चित्रा मुद्गल को वर्ष 2003 के लिए 13वाँ 'व्यास सम्मान' क्रमशः उनके प्रबंध काव्य 'पृथ्वी का कृष्ण पथ' तथा उपन्यास 'आवाँ' के लिए प्रदान किया। पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति-पत्र, प्रतीक चिह्न, शाल व ढाई लाख रुपए का चेक दिया गया। इस अवसर पर डॉ. कर्ण सिंह, अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दुनिया में भारत अकेला हमारा देश है। जहाँ पर 25 भाषाओं में साहित्य रचा जाता है। कला साहित्य व संस्कृति के माध्यम से इस देश व समाज की 25 भाषाओं में बहुरंगी छटा व्यक्त होती है। इसलिए हमें अपने साहित्यकारों पर गर्व है। पर आज के हालात में इन साहित्यकारों व बुद्धिजीवियों को मूकदर्शक बने रहने से देश का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है।

व्यास सम्मान से सम्मानित रचनाकार चित्रा मुद्गल ने हिंदी भवन में आयोजित दूसरे कार्यक्रम में अपने नए उपन्यास 'एक काली एक सपफेद' के बारे में अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि वह 'गरीबों और शोषितों के लिए लिख रही हैं, उनका उपन्यास 'आवाँ', मजदूर आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। श्री वाजपेयी तथा श्रीमती मुद्गल को *विचार दृष्टि* की ओर से हार्दिक बधाई।

दीपक कुमार, दिल्ली से

बिहार की पाँच हस्तियों को राष्ट्रीय अलंकरण

विचार दृष्टि प्रतिनिधि, सतना

डॉ. रामसिया सिंह पटेल के सौजन्य से सरदार पटेल मानव सेवा संस्थान, सतना (मध्य प्रदेश) की ओर से विगत 31 अक्टूबर 2004 को लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के 129वें जयंती समारोह के अवसर पर बिहार की पाँच हस्तियों को 'समाज रत्न' के राष्ट्रीय अलंकरण से सम्मानित किया गया है।

समारोह के मुख्य अतिथि तथा सांसद श्री गणेश सिंह ने सुप्रसिद्ध नाटककार बाबूराम सिंह 'लमगोड़ा', स्वतंत्रता सेनानी एवं सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. मोहन सिंह, समाजसेवी श्री रामजीवन सिंह इन तीनों को मरणोपरांत, 'विचार दृष्टि के संपादक श्री सिद्धेश्वर तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता डॉ. हेमंत पटेल को 'समाज रत्न' से सम्मानित करते हुए कहा कि सम्मानित हस्ताक्षरों ने सरदार पटेल के विचारों एवं आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने के क्रम में राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया है। उन्होंने पुनः कहा कि सरदार पटेल के विचारों तथा उनके द्वारा बताए रास्ते पर चलकर ही देश को वर्तमान संकट से उबारा जा सकता है।

डॉ. रामसिया सिंह पटेल, सतना से।

पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव के निधन से 'एक युग का अंत'

देश में आर्थिक सुधरों के प्रणेता पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव का पिछले 23 दिसंबर को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया और इस प्रकार एक युग का अंत हो गया। नरसिंह राव ने भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर और वर्तमान प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को वित्तमंत्री बनाकर आर्थिक सुधरों की नींव डालने का निर्णय लिया था। आज देश मतं जो आर्थिक प्रगति है और जिसके चलते आर्थिक सुधरों के प्रति जो विश्वास और प्रतिबद्धता का माहौल है उसका श्रेय स्व. राव को जाता है। आज उनके जैसे दूरदर्शी, प्रतिबद्ध और कुशाग्र राजनेताओं की कमी नजर आती है।

हालाँकि यह भी सच है कि नरसिंह राव के समय से एक तो अनेक घपले घोटाले सामने आए हैं तो दूसरी ओर अयोध्या में बाबरी मस्जिद ढाँचे को विधवंस के कारण देश में बड़े पैमाने पर दंगे और देश में सांप्रदायिक एवं कट्टरपंथी ताकतों को उभरने से वे रोक न सके। उनके ही कार्यकाल में काँग्रेस का पतन शुरू हो गया। अपनी सरकार बचाने के लिए सांसदों को रिश्वत देने के आरोप के चलते उनकी छवि धूमिल भी हुई और उसके बाद तो जैसे अंत तक वे मौनी बाबा बन चुप्पी साधे रहे। इन सभी के बावजूद नरसिंह राव एक कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी तथा कोई एक दर्जन से अध्कि भाषाओं के ज्ञाता ही नहीं, एक दक्ष लेखक भी थे।

उन्होंने एक पुस्तक 'इन साइडर' लिखकर अपनी सशक्त लेखन क्षमता का परिचय भी दिया। आज के नेता समाज व राष्ट्र के कल्याण के प्रति उनकी जैसी निष्ठा का परिचय दें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

28 जून सन् 1921 से आँध्र प्रदेश के करीमगंज जिले के बंगारा के एक किसान परिवार में जन्में पी.वी. नरसिंह राव 1971 से 1973 तक आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री तथा राजीव गाँधी की हत्या के बाद सन् 1991 से 1996 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे। 14वें लोकसभा के चुनाव के बाद केंद्र में बनी काँग्रेसनीत संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की नई सरकार के कार्यकाल के दौरान भी वह एक मूकदर्शक बने रहे। जो हो, विलक्षण प्रतिभा के ध्नी, ऊँचे दर्जे के विदेशी मामलों के जानकार, एक सौम्य, शालीन और दूर-दृष्टिवाले राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद् और विशेष रूप से भारतीय दर्शन व संस्कृति की जानकारी के लिए स्व. नरसिंह राव को याद किया जाएगा। 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से भारत के पूर्व प्रधानमंत्री तथा नए युग के नायक को हार्दिक श्रद्धांजलि और शत् शत् नमन।

अमर रहेगा सुब्बुलक्ष्मी का संगीत

विचार कार्यालय, चेन्नै। 'भारत रत्न' से सम्मानित भारत कोकिला सुब्बुलक्ष्मी भौतिक रूप से भले ही अब इस संसार को छोड़ कर चली गईं, परंतु उनका संगीत अमर रहेगा क्योंकि एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी का संगीत नैसर्गिक और सीमाओं से परे था। वे एक लुप्त होती परंपरा की प्रतिनिधि थी। उनमें धर्मपरायणता तथा भक्ति के गुणों के साथ-साथ लोगों के हितों के लिए काम करने का गजब उत्साह था। उनके संगीत की दिव्यता और सम्मोहक विविधता में मानवीण रचे बसे थे।

मंदिरों की नगरी मदुरई में देवदासियों में जन्मी एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी की आवाज और डंगन का छायांकन सुरों और कैमरे का बेजोड़ संगम था। मात्र 13 वर्ष की उम्र से ही संगीत सभाओं में गायन शुरू करनेवाली सुब्बुलक्ष्मी की फिल्म 'मीरा' आज भी एक यादगार फिल्म है। उन्होंने कर्नाटक संगीत को एक नई दिशा दी और उसे यूरोप और अमेरिका सहित कई देशों तक पहुँचाया। उनके इन्हीं गुणों के कारण भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया। इन्हें 1947 में रैमन गैग्सेसे पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

महान क्रिकेटर विजय हजारे का निधन

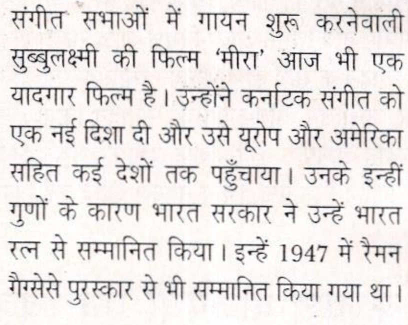

विचार कार्यालय, मुंबई। भारत को पहली टेस्ट मैच सफलता का स्वाद चखानेवाले पूर्व क्रिकेटर विजय हजारे के निधन से भारतीय क्रिकेट का एक स्तंभ ढह गया। कैंसर से पीड़ित श्री हजारे का 89 वर्ष की उम्र में 18 दिसंबर को एक अस्पताल में निधन हो गया। 11 मार्च, 1915 को महाराष्ट्र के सांगली जिले में जन्में हजारे टेस्ट मैच की दोनों पारियों में शतक बनानेवाले वह पहले भारतीय क्रिकेटर थे। छह के अपने अंतरराष्ट्रीय, कैरियर के दौरान हजारे ने तीस टेस्ट मैचों में 47.65 की औसत से 2192 रन बनाए। इसके अलावा उन्होंने सात शतक और नौ अर्द्धशतक भी जमाए। 14 टेस्ट मैंचों में उन्होंने टीम की कप्तानी की।

साभार स्वीकार

पुस्तकें

1. गद्य सप्तक-2 लघुकथा
   संपादकः उमाशंकर मिश्र
   11 बी 136, नेहरूनगर, गाजियाबाद
2. कर्त्तव्य बोध, लघुकथा संग्रह
   कथाकारः डॉ. सतीश चंद्र भगत, हाजीपुर
3. कसकः गलज संग्रह
   गजलकारः आचार्य भगवत दुबे
   1498, 'विमल स्मृति',
   पिसनहारी की मढ़िया के पास,
   जबलपुर-482003
4. बादलों के साए में- गजल संग्रह
   गजलकार- मो. सुलेमान, पटना
5. विश्व कविता की ओर- कविता संग्रह
   कविः पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि, दिल्ली
6. नदी की तरह सोचो तो.... कविताएँ
   कविः कुमार सरोज, पटना
7. स्त्री के बढ़ते कदम- निबंध संग्रह
   लेखकः ज्योतिशंकर चौबे, पटना
8. गुमनाम शहीदः काव्य संग्रह
   कविः डॉ. सहदेव सिंह 'पाचर',
   भभूआ

पत्रिकाएँ

1. अम्बेडकर मिशन पत्रिका, नवंबर '04
   संपादकः बुद्ध शरण हंस, पटना
2. क्रांति स्वर, नवंबर '04
   संपादकः डॉ. तोताराम गुप्त 'विरही', फतेहपुर
3. सभ्यता संस्कृति, नवंबर '04
   संपादकः डॉ. ऋचा सिंह, नई दिल्ली
4. चक्रवाकः त्रैमासिक-अंक 2,
   सितंबर 04
   प्र. संपादकः डॉ. विंदेश्वर पाठक
   संपादकः आचार्य निशांत केतु
   'शब्दाश्रम', बी-970, पालम विहार,
   गुड़गाँव-122017, हरियाणा
5. लौह पुरुष पटेल- 31 अक्टूबर 04
   प्रकाशकः पटेल विकास मोर्चा,
   गुड़गाँव
   मु. संपादकः श्याम सुंदर सिंह पटेल
   92/4, सफेद सागर इन्क्लेव,
   सोहना रोड, गुड़गाँव

•

पृष्ठ 51 का शेषांश

34. श्री राजेन्द्र प्रसाद	ई-90/2, पाण्डव नगर, दिल्ली-92	9811839568
35. श्री शशि भूषण	वैशाली, गाजियाबाद-201011	
36. श्री विनोद सिंह	एस-406, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर दिल्ली-92	9818283635
37. श्री ज्ञानेन्द्र नारायण सिंह	278, नेहरू विहार, दिल्ली-9	
38. सुश्री पल्लवी सिंह चौहान	सी-38, जमुनानगर, सोडाला, जयपुर-224210	
39. ई. सी. एस. पटेल	161ए, डी.डी.ए. फ्लैटस, मानसरोवर पार्क, शाहदरा	
40. डॉ. ए.एम.एम. गोपाल सिंह	1523, आउटर लेन, किंग्सवे कैंप, दिल्ली-9	9811757140
41. श्री अशोक कुमार ज्योति	द्वारा प्रो. निशातकेतु 990 पालम विहार, गुड़गाँव	
42. श्री अरूण कुमार भगत	पत्रकार, हिंदुस्तान, गुडगाँव (हरियाणा)	9818387111
43. श्री सीताराम सिंह	पुष्प विहार, साकेत, नई दिल्ली-17	
44. श्री मिथिलेश प्र. कश्यप		
45. श्रीमती सोनी सिन्हा	प्रीतविहार, दिल्ली-92	
46. श्री अनिल कुमार पटेल		
47. श्री अर्जुन प्रसाद		
48. श्री अजय कुमार (अधिवक्ता)	24/6, शक्तिनगर, दिल्ली-7	27441010
49. श्री महेश कुमार पाण्डेय	एस/604, नेहरू इनक्लेव, स्कूल ब्लॉक शकरपुर	
50. श्री प्रमोद कुमार	161ए, डी.डी.ए. फ्लैटस, मानसरोवर पार्क, शाहदरा	

विशेष आमंत्रित सदस्य

1.	कविवर मधुर शास्त्री	एस-484 ए, विवेक मार्ग, स्कूल ब्लाक, शकरपुर, दि.92	22483003
2.	सीमाव सुल्तानपुरी	पश्चिम विहार, दिल्ली-92	
3.	श्री जगदीश प्रसाद	इंजीनीयर, नई दिल्ली	

मंच के राष्ट्रीय महासचिव श्री सिद्धेश्वर मंच के प्रमुख पत्र 'विचार दृष्टि' के पदेन संपादक हुए तथा श्री गिरीश चन्द्र श्री वास्तव उसके संपादकीय सलाहाकार हुए। डॉ. विजय नारायण मणि त्रिपाठी 'विचार दृष्टि' के विधि सलाहकार होंगे

ह.–
डॉ. धर्मेंद नाथ अमन
निर्वाचन अधिकारी

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास, बोकारो

झारखंड

दूरभाषः 65765

फैक्सः 65123

परीक्षा
प्रार्थनीय

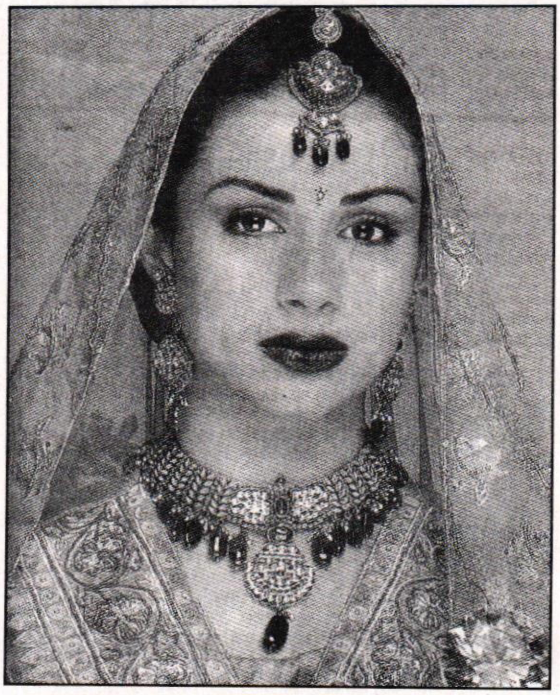

सुरेश एवं राजीव

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस

(रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज,

पटना-800004

दूरभाषः 2662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चाँदी तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

राष्ट्रीय विचार मंच के तत्वावधान में

हरियाणा के गुड़गाँव से नई दिल्ली के राजेन्द्र भवन तक पटेल जयंती पर आयोजित राष्ट्रीय एकता रैली की एक झाँकी

सहभागिता : पटेल फॉउंडेशन एवं शिवा संघ, नई दिल्ली

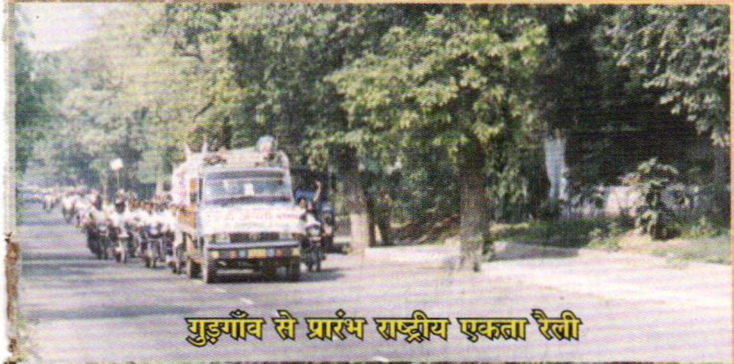

गुड़गाँव से प्रारंभ राष्ट्रीय एकता रैली

राष्ट्रीय एकता रैली रास्ते में

गुड़गाँव की सीमा पार करती रैली

दक्षिणी दिल्ली से गुजरती एकता रैली

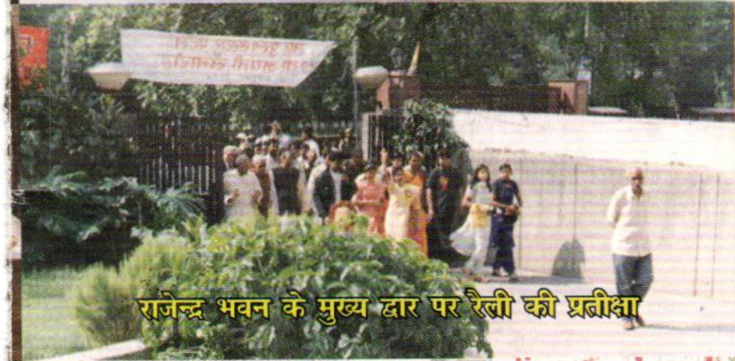

राजेन्द्र भवन के मुख्य द्वार पर रैली की प्रतीक्षा

सभा स्थल की ओर प्रवेश करते सभासद

रैली के स्वागत का प्रबंध करते मंच के राष्ट्रीय महासचिव

रैली के आगमन पर सरदार पटेल का जयघोष

रैली के कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते श्री सिद्धेश्वर

अतिथियों के बीच मंच के अध्यक्ष श्री अग्रवाल एवं मुनिश्री 'लोकेश' जी

वर्ष : 7 अंक : 22 जनवरी-मार्च 2005 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

LOCOMOTION • THE ESSENCE OF LIFE •

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.
Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

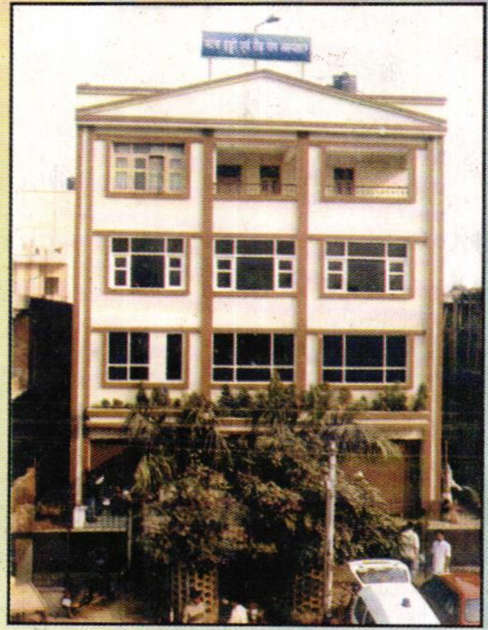

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोब (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

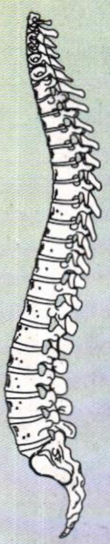

Dr. Vishvendra Kumar Sinha

M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180

एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। सम्पादक-सिद्धेश्वर